ल्हासा पुकारे कैलाश को

प्रो० प्रेम कुमार धूमल

दलाई लामा -तिब्बत की चिंता (बाएं से दाएं, सर संघचालक श्री सुदर्शन जी, मंच के [illegible] श्री इन्[illegible] कुमार जी, संघ के उत्तर क्षेत्र प्रचारक श्री दिनेश चन्द्र जी)

तिब्बत सम्मेलन का एक विहंगम दृश्य

2.5

ल्हासा पुकारे कैलाश को

संपादन

प्रो. प्रेम कुमार धूमल

भारत–तिब्बत सहयोग मंच

प्रकाशक :
भारत–तिब्बत सहयोग मंच
1681, मेन बाजार, पहाड़गंज
दिल्ली–55

मूल्य : 50 रुपये

प्रथम संस्करण – 2007

मुद्रक
हर्षिता पेपर एंड स्टेशनर्स
70–एफ, कमला नगर, दिल्ली–110007
☎ : 9891587927

विषय सूची

पुरोवाक्

तिब्बत हमारा पड़ोसी ही नहीं बल्कि हमारा धर्म–भाई है। वह पिछले पाँच दशकों से दासता का दुःख भोग रहा है। चीन ने उस पर शस्त्र बल से आधिपत्य जमा रखा है। चीन का दावा है कि वह तिब्बत का विकास कर रहा है। अपने यहां भी कुछ लोग ' तिब्बत में हो रहे विकास ' को देखकर, ज्यादातर सुनकर ही, मुग्ध होते रहते हैं। लेकिन गोसाईं जी ने ठीक कहा है–

पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

उसी पराधीनता को दूर करने के लिए तिब्बत के लोग संघर्ष कर रहे हैं। परमपावन दलाईलामा उनका नेतृत्व कर रहे हैं। स्वाधीनता का यह संघर्ष तिब्बत के भीतर भी चल रहा है और बाहर भी। प्रसन्नता की बात है कि तिब्बत के लोगों ने गुलामी के इतने वर्षों बाद भी साहस और आस्था नहीं त्यागी है। चीन को भ्रम था कि कुछ लाख तिब्बती जल्दी ही चीनीकरण के शिकार हो जायेंगे और समस्या समाप्त हो जायेगी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। बल्कि इसके विपरीत समस्त तिब्बतियों में राष्ट्रीयता की ज्वाला और भी प्रखर हो गई है। यही कारण है कि चीन ने दलाई लामा के खिलाफ अपना आंदोलन इधर काफी तेज कर दिया है। जर्मनी, बेल्जियम, अमेरिका जहां भी दलाई लामा जाते हैं चीन सरकार उन देशों पर दबाव डालती है कि उनके राष्ट्राध्यक्ष उनके साथ न मिलें। लेकिन जर्मनी के चाँसलर उनसे मिले। अमेरिका की कांग्रेस ने तो उन्हें अपने यहां का सर्वोच्च सम्मान भी प्रदान किया।

कुछ लोगों को भ्रम है कि काल प्रवाह में तिब्बती स्वतंत्रता का आंदोलन समाप्त हो जायेगा। वे चीन की वर्तमान यथार्थ अयथार्थ शक्ति के आगे आँखें मिचमिचा रहे हैं। परन्तु एक कहावत है अंधेरे में जा रहा व्यक्ति जितनी जोर–जोर से गाता है, वह उसकी निर्भयता का प्रतीक नहीं, बल्कि उसके अंदर के भय

का प्रतीक है। दलाईलामा को लेकर चीन जितना चिल्ला रहा है उतना ही स्पष्ट हो रहा है कि तिब्बत उसकी आतंडियों को फाड़ रहा है। यही तिब्बत का भविष्य है।

परन्तु तिब्बत के मामले में भारत का उत्तरदायित्व कहीं ज्यादा है। श्री गुरुजी ने तो कहा ही था कि तिब्बत पर-अपनी भूल का प्रायश्चित भारत को ही करना है। भारत-तिब्बत सहयोग मंच इसी दिशा में सक्रिय है। प्रो. धूमल ने पिछले वर्षों के मंच के प्रयासों का दस्तावेजीकरण किया है-इससे निश्चय ही तिब्बत समस्या हो उसकी सही पृष्ठ भूमि में समझने में सहायता मिलेगी और तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों का आत्मबल भी बढ़ेगा।

सुरेश सोनी
सहसरकार्यवाह

दिनांक २६ अक्टूबर २००७
बाल्मिकी जयंती
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कार्यालय
केशवकुंज झंडेवालान
नई दिल्ली -५५

आमुखम्

मैं भारत–तिब्बत सहयोग मंच से लगभग उसके प्रारंभ काल से ही जुड़ा हुआ हूँ। श्री इन्द्रेश कुमार जी ने जो उस समय राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के हिमगिरी प्रांत के प्रचारक थे, मुझे मंच के हिमाचल प्रभाग का कार्य संरक्षक के नाते देखने के लिए कहा तो मुझे लगा कि मैं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष उस समस्या से जुड़ रहा हूँ जिसमें प्रारंभ काल में ही मेरी रूचि रही है। भारत में कुछेक लोगों को छोड़कर प्रायः सभी लोग एकमत हैं कि तिब्बत की स्वतंत्रता का हनन हुआ है। यह बीसवीं शताब्दी का मानवीय अस्मिता पर सबसे बड़ा आघात कहा जा सकता है। विश्व भर में भारत ही ऐसा देश कहा जाना चाहिए जिसने राजनीति में भी मानवीय मूल्यों और नैतिकता की वकालत की है। तिब्बत के प्रश्न पर जनमत जागृत करने के लिए हिमाचल प्रदेश में इन्द्रेश जी की योजनानुसार एक बहुत बड़ा सम्मेलन बाबा बालकनाथ कॉलेज चकमोह (हमीरपुर) में हुआ था। मैं उस समय हिमाचल प्रदेश का मुख्यमंत्री था और उसमें मैंने तत्कालीन रक्षामंत्री जॉर्ज फर्नांडिज़ को भी आमंत्रित किया था। देशभर से हजारों लोग वहां एकत्रित हुए थे। विशेषकर हिमालयी प्रांतों के लोग काफी संख्या में आए थे । उस समय के अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री मुकुटमिथि इसमें पहुँचे थे । सैकड़ों तिब्बती भी इस सम्मेलन में पहुँचे थे। निर्वासित तिब्बती संसद के अनेक सदस्य भी हाजिर थे। इस सम्मेलन की कल्पना इन्द्रेश कुमार जी की ही थी। मैंने उसको कार्यरूप दिया था। महाविद्यालय के तत्कालीन प्रिंसिपल डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री ने इसकी पूरी व्यवस्था की थी। यह शायद मंच के आंदोलन की शुरूआत थी। जल्दी ही इस आंदोलन का देशभर में प्रसार हुआ। आंदोलन की महत्ता को इसी से आंका जा सकता है कि मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा का २५–२६ अक्टूबर २००६ को जो दो दिवसीय सम्मेलन जो धर्मशाला में हुआ, उसमें राष्ट्रीय

स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री कुप्पाहली सीतारमैय्या सुदर्शन जी दोनों दिन उपस्थित रहे। उनकी दलाईलामा जी और करमापा लामा जी से लंबी भेंट वार्ताएं हुईं। देश–विदेश के मीडिया ने भी इस सम्मेलन में गहरी रूचि प्रदर्शित की। निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे सम्मेलन के दोनों दिन धर्मशाला में ही उपस्थित रहे। मीडिया ने और तिब्बत के प्रश्न पर रूचि लेने वाली एजेंसियों ने इस सम्मेलन पर अपने–अपने ढंग से टिप्पणियां भी कीं। एक प्रकार से यह सम्मेलन तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन में ऐतिहासिक महत्व का बना। शायद इसकी इसी महत्ता को देखते हुए इन्द्रेश कुमार जी ने मुझे इस पुस्तक के संपादन करने का उत्तरदायित्व सौंपा ।

इस दस्तावेज को तैयार करते समय मैंने यथा योग्य इस बात का ध्यान रखा है कि इसकी प्रमाणिकता बरकरार रहे। कुछ सामग्री सम्मेलन में रिकॉर्ड कर ली गई थी। मैंने उसका भी संपादन में प्रयोग किया है। मंच की प्रथम तीन राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभाओं में पारित प्रस्ताव इससे पहले के दस्तावेज ''यात्रा के मील पत्थर'' में शामिल किए जा चुके हैं। मैंने इस संकलन को अद्यतन करने के लिए इसमें जयपुर में हुई चौथी राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा में पारित प्रस्ताव भी शामिल कर लिए हैं। तिब्बत सम्मेलन में दिये गये सभी उद्‌बोधनों का समावेश मैंने संग्रह में कर दिया है। श्री इन्द्रेश कुमार जी ने पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की चीन यात्रा पर उन्हें एक पत्र लिखा था। इसी प्रकार पिछले साल चीन के राष्ट्रपति हू जिन ताओ के भारत आगमन पर अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, बुद्धिजीवियों एवं चिंतकों ने प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को पत्र लिखे थे। इन पत्रों में तिब्बत का मुद्दा प्रमुखता से उठाया गया था। इन्द्रेश कुमार जी और अजमेर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मोहनलाल छीपा द्वारा लिखित पत्रों को मैंने इस संग्रह में शामिल किया है। इसके साथ ही ७–८ अप्रैल २००७ को दिल्ली में हिमालय परिवार की केन्द्रीय कार्यकारिणी की बैठक हुई थी, जिसमें तिब्बत को लेकर भी एक प्रस्ताव पारित किया गया था। भारत–तिब्बत सहयोग मंच हिमालय परिवार का ही अंग है और इस बैठक में भी सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी पधारे थे इसलिए इस प्रस्ताव की महत्ता स्वतः ही बढ़ जाती है। इस प्रस्ताव को भी मैंने इस संकलन में शामिल कर लिया है। संपादन कार्य में भारत–तिब्बत सहयोग मंच के अनेक पदाधिकारियों का सहयोग मुझे मिला है । उन सभी का मैं धन्यवाद करता हूँ। मंच के महासचिव डा. विवेक कुमार, डा. सुदेश गर्ग और प्रादेशिक

अध्यक्ष सुनील कुमार मनोचा ने इस कार्य में अत्यंत सहायता की है। उनका भी आभारी हूँ। मुझे आशा है तिब्बत आंदोलन में लगे हुए सभी कार्यकर्ताओं और तिब्बत के विषय पर शोधार्थियों के लिए यह संकलन उपयोगी सिद्ध होगा।

समीरपुर–(हमीरपुर) — प्रो. प्रेम कुमार धूमल
हि०प्र०
६ जुलाई २००७ — लोकसभा सदस्य,
परम् पावन दलाईलामा जी का जन्मदिवस — पूर्व मुख्यमंत्री हिमाचल प्रदेश



THE DALAI LAMA

Message of The Dalai Lama

I am very happy to know that on the occasion of the centennial birth anniversary of the late Shri Guru Golwalkar, the Bharat-Tibbat Sahyog Manch, Himachal Pradesh, is holding a conference on Tibet at Dharamsala on October 26, 2006.

I am encouraged that this conference will be graced by Shri K.S. Sudarshan, Sarasangachalak of Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS).

I hope that this conference will further highlight the plight of the Tibetan people and their struggle for freedom and justice. I take this opportunity to thank all my Indian friends for their continuing support for the Tibetan people. Because of the centuries old close relationship between India and Tibet, and because India is Tibet's immediate southern neighbour, I have always considered the concern and support from this country to be of the utmost importance.

I wish all the participants at this conference every success in your deliberation.

With my prayers and good wishes,

SD/-

Dalai Lama

October 18, 2006

राजनाथ सिंह, सांसद
अध्यक्ष



भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

दिनांक : 18.10.2006

प्रिय डा० अग्निहोत्री जी

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि भारत–तिब्बत सहयोग मंच की ओर से २६ अक्तूबर, २००६ को धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में तिब्बत पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

यह भी अपने आप में महत्वपूर्ण है कि सन् १९५९ में लोकनायक जयप्रकाश नारायण द्वारा तिब्बत पर करवाये गये अखिल भारतीय सम्मेलनों के उपरांत यह संभवतः उस स्तर का पहला सम्मेलन है।

आज से ४७ वर्ष पूर्व सन् १९५९ में तिब्बतियों के धर्मगुरु दलाईलामा ने तिब्बत से पलायन कर भारत में शरण ली थी। धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार तब से तिब्बत की स्वायत्तता के लिए और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए धर्मगुरु दलाईलामा के नेतृत्व में निरंतर प्रयत्नशील है।

ऐसी भी खबरें मीडिया में आई हैं कि चीन दलाईलामा से तिब्बत की स्वयात्तता पर सीधी वार्ता के लिए मन बना रहा है।

हाल ही में भारत सरकार ने विदेश मंत्रालय की ओर से धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार से राजनय संपर्क साधने के कार्यालय का उच्चीकरण किया है और अब वहां अनुसचिव की जगह विदेश मंत्रालय का निदेशक स्तर का अधिकारी नियुक्त किया गया है। यह भी सूचना है कि भारत सरकार ने तिब्बत की निर्वासित सरकार को सालाना मदद दो करोड़ रुपये से बढ़ाकर सात करोड़ रुपये कर दी है। अपने आप में ये अच्छी खबरें हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि तिब्बत की स्वायत्तता, सांस्कृतिक और धार्मिक स्वतंत्रता को अक्षुण रखा जाए। यह भी महत्वपूर्ण है कि तिब्बत को सैन्य विहीन रखा जाए, क्योंकि भारत और चीन के बीच में तिब्बत सामरिक और राजनैतिक दृष्टि से चट्टान की तरह खड़ा है।

विश्व शांति के लिए तिब्बत को सैनिक छावनी जैसे कार्यक्रमों से मुक्त रखना ही अच्छा होगा और इस दिशा में प्रयत्न भी किया जाना चाहिए। इस सिलसिले

में आधे मन से बात नहीं बनेगी। राजनय में स्पष्टवादिता ही मानवमात्र के हितों की रक्षा कर सकती है।

भारत तिब्बत सहयोग मंच द्वारा आयोजित इस अखिल भारतीय सम्मेलन की पूर्ण सफलता की मैं कामना करता हूँ।

सधन्यवाद

ह०/-

(राजनाथ सिंह)

डा० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री
राष्ट्रीय संयोजक, भारत-तिब्बत सहयोग मंच
१६५, साउथ एवेन्यू, नई दिल्ली-११००११

मुख्यमंत्री
श्रीमती वसुंधरा राजे,

राजस्थान
२३/१०/२००६

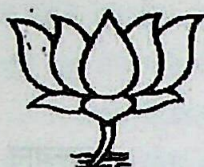
संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि भारत–तिब्बत सहयोग मंच, नई दिल्ली की ओर से २६ अक्तूबर, २००६ को हिमाचल प्रदेश में तिब्बत पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

तिब्बतियों ने व्यावसायिक कौशल से अपनी एक अलग पहचान बनाई है। प्रतिवर्ष काफी संख्या में तिब्बती लोग व्यवसाय के लिए आते रहते हैं। तिब्बतियों की अपनी अलग समस्याएं हैं जिनका निराकरण समय पर होना अपेक्षित है। इसी को मद्देनजर रखते हुए सहयोग मंच की स्थापना की गई है जो प्रशंसनीय है। आवश्यकता इस बात की है कि भारत–तिब्बत के बीच अटूट सहयोग बनाने के लिए समय–समय पर अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेलन आयोजित हों ताकि तिब्बत की अब तक की स्थिति और उसके लिए भावी रणनीति पर विचार–विमर्श किया जा सके।

मैं सम्मेलन में भाग ले रहे प्रतिभागियों को शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

ह०/–
(वसुन्धरा राजे)



भारतीय जनता पार्टी
Bharatiya Janata Party

प्यारेलाल खंडेलवाल
सदस्य (राज्यसभा)

सदस्य : कृषि मंत्रालय स्थायी समिति
सदस्य : ग्रामीण विकास समिति

PL/OCT/451/06

दिनांक : १६ अक्तूबर २००६

डा० कुलदीप चन्द अग्निहोत्री जी,

आपके द्वारा भेजा हुआ भारत-तिब्बत सहयोग मंच का पत्र प्राप्त हुआ। भारत-तिब्बत सहयोग मंच की ओर से २६ अक्तूबर २००६ को हिमाचल प्रदेश में तिब्बत पर एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है यह जानकर प्रसन्नता हुई। जिस तरह तिब्बत की अनदेखी की जा रही है व तिब्बत के लोगों का शोषण किया जा रहा है यह एक चिंता का विषय है। साथ ही वहां नागरिक अधिकारों का हनन किया जा रहा है। आशा है इस संबंध में सम्मेलन में चर्चा होगी। तिब्बत की स्वतंत्रता की मांग लंबे समय से हो रही है। आशा है इन सभी पर गंभीरता से विचार होगा। उत्तर भारत की सीमा सुरक्षा की दृष्टि से तिब्बत एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इसलिए तिब्बत का प्रश्न भारत के लिये अत्यंत महत्व का है। मैं भारत तिब्बत सहयोग मंच द्वारा किये गये प्रयासों की सफलता की कामना करता हूँ।

आपका
ह०/-
(प्यारेलाल खंडेलवाल)

प्रथम अध्याय

चौदहवें दलाई लामा एवं सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी-संवाद यात्रा

(२५ अक्तूबर २००६ को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक दलाईलामा जी से मिलने मैक्लोडगंज स्थित उनके निवास पर गए। यहां पर यह उल्लेख करना उचित ही होगा कि १९६४ में जब श्री गुरुजी की प्रेरणा से विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना का संकल्प लिया गया था, तो उस समय विश्वभर के बौद्धों के श्रद्धा के केन्द्र दलाईलामा जी भी विश्व हिन्दू परिषद के प्रमुख संस्थापक सदस्यों में से एक थे। अतः श्री गुरुजी जन्मशती वर्ष में वर्तमान सर संघचालक और परम पावन दलाईलामा जी की मुलाकात ने भारत तिब्बत संबंधों के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा है। इस ऐतिहासिक भेंट के दौरान सर संघच्यलक जी ने तिब्बत के प्रति श्री गुरुजी के द्वारा व्यक्त किये गये विचारों का तथा भारत और तिंब्बत के बीच सांस्कृतिक, सामाजिक, व्यापारिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भौगोलिक संबंधों का जिक्र किया।-संपादक)

सुदर्शन जी – हम तिब्बत की स्वाधीनता और सार्वभौमिकता के महत्व को समझते हैं। भारत की उस समय की सरकार ने यदि श्री गुरुजी के द्वारा दी गई चेतावनी पर ध्यान दिया होता और चीन के विस्तारवादी इरादों का विरोध किया होता तो तिब्बत स्वाधीन रहता और चीन को भारत पर आक्रमण करने का साहस भी न होता। वर्तमान की समस्यायें न तिब्बत को झेलनी पड़तीं और न ही भारत को। श्री गुरुजी सचेत करते थे '' तिब्बत रहेगा तो भारत सुरक्षित रहेगा। ''

अमेरिका को केवल चीन से भय है। वह जानता है कि चीन के पास १२ हजार किलोमीटर तक वार करने वाले मिजाईल हैं और वह अमेरिका के किसी भी शहर पर बम गिरा सकता है। अतः वह चीन के विरूद्ध स्वयं लड़ने की अपेक्षा भारत को चीन के विरूद्ध खड़ा कर रहा है और भारत पर अंकुश रखने के लिए पाकिस्तान को खड़ा कर रहा है। इसीलिए वह पाकिस्तान को सब प्रकार की सहायता दे रहा है तथा उसके माध्यम से भारत को अस्थिर करने का प्रयास कर रहा है। परंतु दुर्भाग्य से चीन भारत को अपना शत्रु मानता है उसकी प्रकृति विस्तारवादी है और वह हिमालय पर भी अपना दावा जमाता रहता है। व्यवसायिक हितों के कारण अमेरिका और चीन तो फिर मित्र हो सकते हैं लेकिन चीन भारत को इस क्षेत्र में शक्ति नहीं बनने देना चाहता और वह उसे अपना प्रतिद्वंद्वी मानता है। इसलिए उसने तिब्बत पर कब्जा किया हुआ है। अब अणुबम केवल भारत और पाकिस्तान के पास ही नहीं अपितु इस क्षेत्र में अरब देशों और उत्तर–कोरिया के पास भी हैं । अमेरिका ईराक युद्ध में फंसा हुआ है। उसके सैनिक मारे जा रहे हैं। अपने देश में ही उसकी नीति का विरोध हो रहा है। परंतु अब भी ऐसा लगता है कि अमेरिका ईरान पर भी हमला कर सकता है, यदि ऐसा हुआ तो इससे विश्वयुद्ध की संभावना बढ़ जाएगी।

दलाईलामा जी – आपने जो कहा वह बहुत ठीक है, यह सत्य भी लगता है, फिर भी भविष्य का कोई क्रम नहीं होता। तिब्बत कोई वस्तु नहीं है। हम तो इसे भारत का ही विस्तार मानते हैं। भारतीय संस्कृति अध्यात्मवादी है। भारत गुरु है और तिब्बत शिष्य। आपकी सत्य, अहिंसा और प्रेम की संस्कृति हमारे लिए पूज्य है। श्री मोरारजी देसाई जी ने भारत और तिब्बत को एक ही वृक्ष की दो शाखाएं बताया था।

मनुष्य का मूलस्वभाव अहिंसा का है, हिंसा का नहीं। करूणा और मैत्री उसके मन में है, परंतु दिखाई नहीं देती। हमें विश्वास है कि करूणा और मैत्री की विजय निश्चित होगी। ''संघ परिवार सदा ही हमारे साथ रहा; हम आपका धन्यवाद करते हैं; अनेक दबाव आये परंतु संघ सदैव साथ खड़ा रहा। परम्पूज्य रज्जू भैय्या जी के साथ मुलाकात में भी हमने यही अनुभव किया था और आज भी यही अनुभव कर रहे हैं।

काजा में आज से कई वर्ष पहले मैंने कहा था कि चीन तिब्बत में रेल लाईन बिछा रहा है। अब यह बात जगजाहिर हो गई है कि चीन ने वहां रेल लाईन बिछा

ली है। इस रेल से जो चीनी ल्हासा आते है उनमें से ज्यादा वहीं रह जाते हैं। आज वहां की तीन लाख की आबादी में से तिब्बती लोगों की संख्या मात्र एक लाख है। चीन का लक्ष्य वहां सात लाख की आबादी का है और जब यह लक्ष्य पूरा हो जाएगा तो ल्हासा में तिब्बती तो नाम मात्र के ही होंगे। वह असल में चीनी शहर हो जाएगा। चीन इसी रणनीति के तहत तिब्बतियों की संख्या कम करने का प्रयास कर रहा है।

विश्वसनीय सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि तिब्बत में रेल लाईन बिछाने का निर्णय स्वर्गीय माओ ने, १९६२ की विजय के बावजूद युद्ध के दौरान जो कठिनाईयां उन्हें पेश आई थीं, उनको ध्यान में रखकर लिया था। सेना के लिए खाद्यापूर्ति और शस्त्र पहुंचाने में उन्हें दिक्कतें आई थीं। इसलिए उन्होंने रेल लाईन बिछाने को आवश्यक माना था, ताकि भविष्य में खाद्यापूर्ति या शस्त्रापूर्ति में कोई कठिनाई न हो। इसका उद्देश्य और अर्थ सबको समझ में आना चाहिए।

स्वर्गीय श्री मोरार जी भाई ने एक बार मुझे बताया था कि १९६२ के युद्ध के दौरान उन्होंने मंत्रिमण्डल में सुझाव दिया था कि भारत की वायुसेना शक्तिशाली है और हमें हवाई हमला करके चीन की खाद्यापूर्ति और शस्त्रापूर्ति को पूरी तरह बंद कर देना चाहिए। यदि मोरार जी भाई की बात को मान लिया गया होता, तो भी शायद परिणाम कुछ और होता।

मुझे महत्वपूर्ण सूत्रों से पता चला था किपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री तिब्बत की निर्वासित सरकार को मान्यता देने की सोच रहे थे। दुर्भाग्य से ऐसा हो नहीं पाया । उनकी ताशकंद में मृत्यु हो गई। भारत बड़ा भाई है और गुरु भी, तिब्बत छोटा भाई और शिष्य भी। भारत को अपनी भूमिका निभानी चाहिए। जब शिष्य पर आपत्ति आए तो गुरु को जागना चाहिए।

आज राजनीतिक वस्तु स्थिति यह है कि तिब्बत को चीन ने हड़प लिया है। दुनिया में उसे चुनौती देने वाला कोई नहीं है। अतः हमने मध्यमार्ग अपनाकर स्वायत्तता की मांग की है। हमने कहा है कि हांगकांग और मकाओ की तरह तिब्बत को भी पूर्ण स्वायत्तता दी जानी चाहिए। चीन के संविधान के अंतर्गत हमें स्वायत्तता दी जा सकती है। भारत की जनता को और बुद्धिजीवियों को तिब्बत की इस उचित मांग का समर्थन करना चाहिए।

सुदर्शन जी– श्री गुरुजी ने चीन की विस्तारवादी प्रकृति के बारे में सभी को सचेत किया था । चीन की जो प्रकृति है उससे लगता है कि चीन अपनी नीति

बदलेगा नहीं । चीन ने अपने आसपास के सभी पड़ोसी देशों को गुलाम बना लिया है। चीन का मनोविज्ञान चीन को विश्व के केन्द्र में स्थापित करता है। चीन ऐसा मानकर चलता है कि इस समय विश्व में उसे कोई चुनौती नहीं दे सकता। रूस तो टूट ही गया है। अमेरिका के मुकाबले चीन शक्ति का दूसरा ध्रुव बनना चाहता है। मेरी दृष्टि में चीन पाश्विक आसुरी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है।

उधर अमेरिका की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है। वह दूसरे देशों के धन के सहारे काम चला रहा है, अन्यथा वह दिवालिया है। अमेरिका भी एक प्रकार से आर्थिक पशुता का प्रतीक है और इस क्षेत्र में वह आसुरी शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। लेकिन उसकी खाने की भूख बहुत बढ़ी हुई है। वह दुनिया के पेट्रोल पर नियंत्रण करना चाहता है और इसके लिए यदि विश्वयुद्ध की स्थिति भी लानी पड़े तो वह लाएगा।

विकासशील देशों को पहले कर्जा देकर उन्हें अपने चंगुल में फंसाना और बाद में उनके स्रोतों को अपने अधिकार में लेकर उनकी अर्थव्यवस्था को बर्बाद करना ही उसका उद्देश्य है। इनसे सारा कच्चा माल अमेरिका आयात करना चाहता है और उससे निर्मित उपभोग की वस्तुएं फिर उन्हीं देशों को बेचना चाहता है। इस तरह से एक षड्यंत्र रचकर विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था को तबाह करने का अमेरिका प्रयास कर रहा है। उसे लगता है कि यूरोप के देश उसका साथ नहीं देंगे। जॉन पार्किनस की पुस्तक ''The Comparisons of an Economic Hitman'' से स्पष्ट होता है कि संपन्न या सामान्य देशों को सात साल की अवधि में इस षड्यंत्र के माध्यम से कैसे भिखारी या निर्धन बना दिया गया। विकासशील देशों के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के नाम पर ऋण और ब्याज के चक्र में ऐसे फंसाया जाता है कि वे उससे बाहर ही नहीं निकल सकते। इस प्रकार चीन और अमेरिका दोनों आसुरी शक्तियाँ हैं और परस्पर विरोधी भी ।

दलाईलामा जी – यदि अमेरिका और चीन में संघर्ष होता है तो भारत का क्या रूख होगा?

सुदर्शन जी – यह उस समय की सरकार पर निर्भर करेगा। विश्व में जितने भी देश गुलामी से स्वतंत्र हुए हैं उनमें से कई ने हजारों वर्ष तथा कई ने सदियों तक संघर्ष करके अपनी स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त किया है। ईजराइल और भारत इसके उदाहरण हैं। चार आसुरी शक्तियां आज विश्वभर में अव्यवस्था पैदा कर रही हैं और विश्व को तृतीय विश्वयुद्ध की तरफ धकेल रही हैं। यह शक्तियां

चिन्हित हैं चरचैनिटि, जेहादी इस्लाम, साम्यवाद–माओवाद और अमेरिका का उपभोक्तावाद। यदि तीसरा विश्वयुद्ध होता है तो आणविक युद्ध होगा और दोनों तरफ से अणु शक्ति का प्रयोग होगा जिसके कारण इस युद्ध में तीन सौ से चार सौ करोड़ तक लोग मारे जा सकते हैं।

महान ऋषियों की भविष्यवाणियों के अनुसार भी विश्व उस ओर ही बढ़ रहा है। स्वामी विवेकानंद ने १८९३–९५ के बीच अपने गुरु भाइयों को पत्र लिखा था कि १८३६ में जब श्री रामकृष्ण परमहंस का जन्म हुआ तो एक स्वर्ण युग का प्रारंभ हुआ था। भारत की स्वतंत्रता के अवसर पर १९४७ में योगीराज अरविंद ने कहा था कि भारत का विभाजन कृत्रिम है, फिर से अखण्ड भारत बनेगा। युगसंधि का काल १७५ वर्ष का होता है और १८३६ में अगर हम १७५ वर्ष का कालखण्ड जोड़ें तो वह २०११ में पूरा होता है। २०११ से भारत का उत्कर्ष होगा और उसी समय विश्वभर की आध्यात्मिक शक्तियां विश्व में शांति स्थापना का प्रयास करेंगी। इन शक्तियों में भारत और तिब्बत शामिल होंगे और परिणामस्वरूप फिर से विश्व में शांति की स्थापना होगी।

अगर तिब्बत आज़ाद नहीं हुआ तो समूचे संसार में सत्य, न्याय एवं मानवता का नाम मिट जायेगा। धर्म के स्थान पर अधर्म होगा और फिर उसके बाद जो कुछ होगा उसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

– प्रो. सामदोंग रिम्पोछे

द्वितीय अध्याय

करमापा लामा से सुदर्शन जी का संवाद

सुदर्शन जी– मुझे आपके दर्शन करके अत्यंत प्रसन्नता हुई है। मेरी ओर से आपको अनेकों शुभकामनायें। परमपूजनीय डा० हेडगेवार जी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना की थी और उनका मानना था कि हिन्दू संगठन ही संकटों को परास्त कर सकता है। उन्होंने हिन्दू संगठन को शाखा रूपी तंत्र दिया। पूजनीय डॉक्टर जी के पश्चात् १९४० में परमपूजनीय श्री गुरुजी सरसंघचालक बने और ३३ वर्ष तक हिन्दू समाज का मार्ग दर्शन किया। पूजनीय डॉक्टर जी द्वारा लगाये गए वृक्ष को उन्होंने बड़ा किया। श्री गुरुजी ने संघ कार्य को विभिन्न क्षेत्रों में फैलाया। आज वे संगठन चोटी पर पहुंच गए हैं। श्री गुरुजी ने संघ कार्य को अध्यात्म का आधार दिया। विश्वशांति देने का दायित्व इसी अध्यात्म विचार को करना है। श्री गुरुजी जन्मशती के दौरान विभिन्न कार्यक्रमों केमाध्यम से हिन्दू समाज के जागरण का प्रयास होगा।

आप १९९९ में भारत आए थे। चीन एक आसुरी शक्ति है, विस्तारवादी है और साम्यवादी विचारधारा के कारण उसकी यह भूख और बढ़ गई है। श्री गुरुजी ने तिब्बत की स्वतंत्रता को भारत की सुरक्षा के लिए आवश्यक बताया था। परन्तु उस समय की सरकार मानी नहीं और चीन ने तिब्बत को हड़प लिया। चीन का प्रयास है कि तिब्बत वंश समाप्त हो । संघ इन सब चीजों को जानता है और सदैव तिब्बत के साथ खड़ा रहा है और रहेगा।

आज विश्व को और विश्वशांति को कई आसुरी शक्तियों के कारण गंभीर खतरा पैदा हो गया है। आसुरी शक्तियों के रूप में मुख्यतः चार शक्तियों को

चिन्हित किया जा सकता है। पहली चरचैनिटि, दूसरी जेहादी इस्लाम, तीसरी साम्यवाद (माओवाद) और चौथी अमेरीकी उपभोक्तावाद। चरचैनिटि लोभ, लालच और धन बल के माध्यम से लोगों की मजबूरियों का लाभ उठाते हुए धर्मांतरण से अपना प्रभाव जमाना चाहती है। ऐसा लगता है कि इसमें उसे सरकार का संरक्षण भी प्राप्त है। जबकि जेहादी इस्लाम धर्मांधता, कट्टरवाद और आतंकवाद के माध्यम से विश्वशांति को चुनौती दे रहा है। साम्यवाद भी माओवाद, नक्सलवाद और आतंकवाद के माध्यम से आम जीवन को प्रभावित करके अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। अमेरिका उपभोक्तावाद के माध्यम से सारे विकासशील देशों का कच्चा माल अपने यहां आयात करके और फिर इससे निर्मित उपभोक्ता वस्तुओं का निर्यात उन्हीं विकासशीलं देशों को करके उनका शोषण कर रहा है। विकासशील देशों के संसाधनों और विश्वभर के पैट्रोल पर अपना नियंत्रण रख कर अमेरिका सारे विश्व की अर्थव्यवस्था पर अपना कब्जा जमाना चाहता है।

चार आसुरी शक्तियों के हितों के टकराव के कारण विश्वशांति को खतरा पैदा हो गया है और लगता है कि अब तृतीय विश्व युद्ध इनके कारण ही होगा। तृतीय विश्वयुद्ध निश्चित तौर पर आणविक युद्ध होगा और अणुशक्ति का प्रयोग दोनों पक्षों की ओर से होगा। इस भयंकर युद्ध के कारण तीन से चार सौ करोड़ लोग मारे जा सकते हैं।

ऐसी भयंकर तबाही के बाद विश्व का पुनरुत्थान आध्यात्मिक शक्तियों के माध्यम से ही होगा। यह संयोग की ही बात है कि स्वामी विवेकानंद ने १८९३-९४-९५ में अपने गुरुभाइयों को पत्र लिखा था कि सन् १८३६ में जब उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस जी का जन्म हुआ था तो उस समय एक नए युग का शुभारंभ हुआ था। १९४७ में भारत की स्वतंत्रता के समय योगीराज अरविन्द जी ने कहा था कि भारत का विभाजन कृत्रिम है और एक बार फिर से अखंड भारत बनेगा। महर्षि अरविन्द जी ने कहा था कि युगसंधि काल १७५ वर्ष का होता है। दोनों महर्षियों की भविष्यवाणी को ध्यान में रखते हुए यदि हम १८३६ में १७५ वर्षों को जोड़ें तो २०११ में युगसंधि काल पूरा होता है। इसलिए लगता है कि जब आसुरी शक्तियां आपस में लड़ कर तबाह होंगी, तो सन् २०११ से भारत का उत्कर्ष प्रारंभ होगा। वैसे भी कहा गया है कि युगसंधि काल में हिंसा, घृणा, युद्ध अनाचार आदि बढ़ते हैं और जब भय अत्याचार और हिंसा का वातावरण होता है तो ऐसी स्थिति में धर्म में लोगों की आस्था बढ़ जाती है और भगवान में भी

विश्वास बढ़ जाता है। शायद ऐसे समय में लोग धर्म और भगवान में ही अपनी सुरक्षा सुनिश्चित मानते हैं। २०११ से भारत और तिब्बत जैसी आध्यात्मिक शक्तियां शांति स्थापना का प्रयास करेंगी और अपने इस प्रयास में सफल भी होंगी।

करमापा लामा– मैं आपके और अन्य महानुभावों के यहां पधारने पर अत्यंत आभारी हूँ। आपने मेरे प्रति जो स्नेह और प्यार प्रदर्शित किया गया है उसके लिए मैं सबका धन्यवाद करता हूँ।

मेरा मत है कि सभी तिब्बतियों के लिए और विश्व के सब लोगों के लिए भी भारत का शांति के जन्मदाता के रूप में बहुत सम्मान है । भारत विश्वभर में सदा ही शांति के ध्वजवाहक के रूप में जाना जाता है।

मैं आपके विचारों से सहमत हूँ तथा मेरा विश्वास है कि विश्व में फिर से शांति का उदय होगा। मुझे विश्वास है कि जहां विश्वशांति स्थापित करने में भारत एक राष्ट्र के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, वहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी महान् संस्थाओं का योगदान भी अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

(सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी और करमापा लामा की यह भेंट वार्ता २५ अक्टूबर २००६ को धर्मशाला में उनके निवास पर हुई – संपादक)

तृतीय अध्याय

India must play a strong role in Tibet —T.T. Karma Chophel

Today, we are truly fortunate and highly honoured to have the most respected Shr. K. Sudarshanji in our mids. Tibet and India which are amongst some of the most ancient countries of the world have shared a common destiny for thousands of years due to the geographical proximity of being next-door neighbours. Whereas in the case of many other such countries, the physical closeness had unfortunately resulted in wars, enemity, bitterness, mutual destruction and rift, India and Tibet enjoyed an everlasting exchange of spiritual and human values that resulted in the promotion of culture, peace, friendship, trade, art and prosperity. For the last many years since 1959, this examplary good neighbourliness is being missed by the people on both sides of the border and especially in the trans-himalayan areas starting from Jammu and Kashmir to Arunachal Pradesh due to the illegal and forcible occupation of Buddhist Tibet by Communist China. It has also resulted in an unprecedented war between India and China and countless skirmishes on the border for the first time in the long history of the two Asian giants only because Tibet lost

its independent status as a buffer state between these two nations.

At present in Tibet, although the overall conditions are much better compared to the hellish situation of the Cultural Revolution years, still things are far from satisfaction. The true aspiration of the Tibetan people for freedom remains unfulfilled. The condition of the fundamental human rights of the native Tibetans is at a very low ebb. There is no genuine religious freedom and any type of political dissent means either death or prolonged imprisonment, torture and forced labour. Even within the so called Tibet Autonomous Region, the real masters are the cadres of the Chinese Communist Party and the bosses of the People's Liberation Army who are directly responsible to the central leaders in Beijing and not to the local Tibetan people who are actually the rightful owners of the land. Tibetan Language and Culture are not only neglected but looked down upon as inferior to that of the Chinese. Tibetans are encouraged to inter-marry with the Chinese and as many as possible Han Chinese are encouraged to come and settle down permanently in Tibet. There is a serious demographic occupation of Tibet and the Golmo-Lhasa Railway is the prime instrument for this purpose. Therefore, the deliberate and well thought out plan to sinicize Tibet, so that the very identity of Tibet represented by its religion, culture, customs, heritage, traditions, race and language are sought to be completely wiped out and replaced by Chinese replicas or at best corrupted with Chinese mixtures, is one of the prime concerns of the Tibetan Parliament-in-Exile. This in turn, poses a great threat to the Himalayan Culture as a whole.

Another concern of the TPiE is the negative and irresponsible attitude of the Chinese leadership towards our benigne leader

HIs Holiness the Dalai Lama and the Middle Way approach to solve the Tibetan issue. Since the end of May last year, there has been a marked upgradation in the critical attacks on His Holiness. To sum up, the Chinese blame every ill in Tibet on His Holiness and take all the credit by themselves. The unequivocal rejection of the Middle Way in the Chinese media is an indication that they have no intention to negotiate with His Holiness or his envoys. We have always suspected that the delegation diplomacy is only to ward off international pressure to talk to His Holiness and in actuality, they are only biding time for him to pass away. Such calculative and evil attitude will not help matters if an amicable solution is to be found out.

Instead, we demand that the present delegation level exchange be upgraded to full fledged negotiation; that in order to speed up to a purposeful negotiation, H.H. the Dalai Lama and the Chinese President should hold a meeting, preferably on Indian soil as India is the third most important party in this matter; and that the Chinese leadership should invite His Holiness to visit Tibet and also make a pilgrimage to China as desired by him and expressed through the international media a number of times.

India has a very big stake and role to play in all this. Not only for its own security and economic development but for the safety of Asia as a whole, India must and can play a strong, positive and construction role in the solution to the Tibetan issue.

We Tibetans remain ever grateful to the Government and the people of India.

Jai Tibet! Jai Bharat! Jai Jagat!

(Speech given by Mr. T.T. Karma Chophel, Speaker of the Tibetan Parliament-in-Exile (TPiE) at the National Conference on Tibet at Dharamshala, 26th Oct 2006 - Editor)

चतुर्थ अध्याय

स्वतंत्रता हर राष्ट्र का अधिकार है – महाराज अमर ज्योति जी

स्वतंत्रता हर राष्ट्र का अधिकार है अतः तिब्बत का भी। इस दिशा में प्रयास करना अति आवश्यक भी है। तिब्बत में रह रहे लोग यद्यपि अब अल्पसंख्यक हो चुके हैं परंतु समय–समय पर वे शांतिपूर्वक तरीके से प्रदर्शन करते रहे हैं और उनका नेतृत्व भी भिक्षु ही करते हैं।

उसका जो परिणाम वे भोग रहे हैं उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते। जो कष्ट, त्रास, पीड़ा उनको दी जाती है वह अमानवीय है।

यह सारी इन्सानियत को बताने की आज आवश्यकता है कि इसी धरती के एक भाग पर इंसानों द्वारा ही इंसानों का किस प्रकार शोषण हो रहा है। संवेदनशील व्यक्ति ही किसी दूसरे के दुख को उसी प्रकार अनुभव कर सकता है। यदि आप अपने आपको उन त्रस्त, शोषित, भूखे लोगों के स्थान पर रखकर देखें तब आप को स्वतंत्रता की कीमत की जानकारी होगी।

भारत भी अंग्रेजों का उपनिवेश रहा हैं परंतु आज की पीढ़ी ने गुलामी नहीं देखी इसलिए उसका अनुमान नहीं लगा सकती। भारत में एवं विश्व में अन्य स्थानों पर रह रहे तिब्बती शरणार्थी भी उस दासता की कल्पना तक नहीं कर सकते जिसको वहां के लोग भोग रहे हैं। मेरे विचार से पहले तो तिब्बती समाज को ही चाहिए कि वे अपने एक–एक बच्चे को याद करवाते रहें कि वे क्यों शरणार्थी हैं, उनके बड़ों के साथ, भिक्षुओं के साथ, निरीह जनता के साथ क्या–क्या अत्याचार

हो चुके हैं और हो रहे हैं। उनका धर्म, मान्यताएं, मूल्य, संस्कृति सबको अक्षुण्ण रखने की आवश्यकता है। आपको अपनी आवाज़ केवल भारत में ही नहीं विश्व के एक–एक उस व्यक्ति तक पहुँचानी है जो इंसान की कद्र करता है। व्यक्ति से व्यक्ति कंधा मिला कर चले तो उसे भीड़ नहीं शक्ति कहा जाता है।

हम सब आप की स्वतंत्रता का समर्थन करते हैं और आप के साथ हैं हमारा भी पूरा प्रयास रहेगा कि आप फिर से जोखांग मंदिर में अपनी प्रार्थनाएं, मंत्रोचारण पहले ही के समान कर पाएं। आप के बच्चे भी अनुभव कर पाएं कि स्तूप का आध्यात्मिक अर्थ क्या है?

तिब्बत का भाग्य द्वार भारत को ही खोलना होगा। क्योंकि इसे बन्द करने में जाने–अनजाने भारत से भी भूल हुई है। इसका एक ही प्रायश्चित हैं, तिब्बत को पुनः स्वतन्त्रता दिलवाना और यह प्रायश्चित करने के सिवा हमारे पास अन्य कोई विकल्प नहीं है।

–इन्द्रेश कुमार

पंचम अध्याय

तिब्बत का दर्द हमारा दर्द भी है
– प्रो. प्रेम कुमार धूमल

उत्तर पश्चिम भारत सदा से हिन्दुस्तान की खडग भुजा रहा है। देश पर जब–जब भी संकट आया, इस क्षेत्र के लोगों ने छाती तान कर उसका मुकाबला किया। तिब्बत के संकट पर विचार करने के लिए देश भर से तिब्बत समर्थक गुरुओं की इस भूमि पर इकट्ठे हो रहे हैं। मैं उन सभी का स्वागत करता हूँ। यह वह धरती है जहां से महाराजा रणजीत सिंह ने अफगानिस्तान तक में भारत की वीरता के झण्डे गाड़ दिए थे। वजीर राम सिंह पठानिया ने अंग्रेज सेना की नाक में दम कर दिया था। वीरों की इस धरती पर देश पर आए संकट के निवारण हेतु एकत्र हुए हैं तो उसका कोई न कोई रास्ता भी अवश्य ही निकलेगा । गुरु गोविंद सिंह जी ने तो चिड़ियों से बाज लड़ा दिए थे और लोगों में नई चेतना का संचार कर दिया था। आज फिर वही स्थिति पैदा हो रही है। सारा उत्तरी सीमांत अशांत हो रहा है। चीन ने भारत की बहुत सी भूमि पर कब्जा किया हुआ है और एक बहुत बड़े भारतीय भू–भाग को वह मानचित्रों में चीन का ही हिस्सा दिखाता रहता है। तिब्बत जो शताब्दियों से आजाद मुल्क था, चीन के पंजों में कराह रहा है। लाखों तिब्बती बेघर हो गए हैं और तिब्बती संस्कृति एवं भाषा को चीन योजनाबद्ध ढंग से नष्ट करने का कुचक्र चला रहा है। अपने देश की स्वतंत्रता और अस्मिता की रक्षा के लिए लाखों तिब्बतियों ने प्राण न्योछावर किए हैं। पंचेन लामा वर्षों से तिब्बत की जेल में कैद है। मठ ध्वस्त किए जा रहे हैं और तिब्बत को चीन बनाने के लिए

चीनी सरकार अमानवीय हथकण्डे अपना रही है। चीनी दानव का शिकार भारत और तिब्बत दोनों समान रूप से हो रहे हैं। आज यहां भारत और तिब्बत दोनों देशों के लोग सांझी रणनीति बनाने के लिए मिलकर बैठे हैं। मुझे आशा है कि दोनों देश के लोग कोई सर्वमान्य रास्ता ढूंढ लेंगे। रास्त कोई भी हो उसका पालन शक्ति के बलबूते पर ही संभव होता है। भारत को शक्ति की आराधना करनी होगी। उसी शक्ति की आराधना से भारत और तिब्बत दोनों के लिए रास्ता निकलेगा। यह रास्ता सुख और शांति का, स्वतंत्रता और समानता का है। हमारे उत्तरी सीमांत पर जो ड्रैगन घूम रहा है, जिसने अपने एक पंजे में तिब्बत को जकड़ा हुआ है और दूसरे में भारत को लहू लुहान कर रहा है, वह शांति की भाषा भी तभी समझेगा यदि उसके पीछे शक्ति की आराधना होगी। कहा भी गया कि शास्त्र की रक्षा के लिए शस्त्र की साधना बहुत जरूरी है।

पिछले कुछ सालों से भारत और चीन के बीच तथा तिब्बत और चीन के बीच बातचीत का सिलसिला चल रहा है। दोनों देशों के प्रतिनिधि मण्डल एक दूसरे के यहां आते जाते रहते हैं, तिब्बत की निर्वासित सरकार के प्रतिनिधि मण्डल भी चीन जाकर आए हैं। बातचीत का सदा स्वागत होना चाहिए। बात से, तर्क से यदि संतोषजनक समाधान निकल आए तो उससे बड़े-बड़े नरसंहार बच जाते हैं। कृष्ण तो पाण्डवों के लिए केवल पांच गांव लेकर ही संतुष्ट हो जाने वाले थे परंतु बातचीत टूट गई तो महाभारत हुआ। भारतीय संस्कृति यह मानती है कि चाहे बातचीत हो, चाहे युद्ध दोनों का आधार न्याय होना चाहिए। चीन के साथ बातचीत करने में गुरेज नहीं करना चाहिए, यदि चीन न्याय युक्त व्यवहार करने को राजी हो जाता है। अन्याय के खिलाफ संघर्ष करना भारत और तिब्बत की सांझी परंपरा है और उसी परंपरा में से रास्ता तलाशने के लिए हम भारत और तिब्बत के लोग यहां बैठे है।

मुझे इस बात में कभी कोई शंका नहीं रही कि तिब्बत का संघर्ष एक न एक दिन सफल होगा ही। इस संघर्ष का नेतृत्व परम पावन दलाईलामा कर रहे हैं जो आज के युग के श्रेष्ठ संत पुरूष है और मानवीय मूल्यों के जीवंत प्रतीक हैं। वे एक साथ बुद्ध भी हैं और तिब्बती भावना का घनीभूत रूप भी। इससे भी आगे वे मानव मूल्यों के जीवंत रूप है। उनके नेतृत्व में हिमालय ड्रेगन की प्रेत छाया से मुक्त होगा। ल्हासा और कैलाश मानसरोवर की तीर्थ यात्राएं उन्मुक्त होंगी और तिब्बत के लोग अपने देश में अपनी इच्छा के अनुसार

शासन का संचालन कर सकेंगे।

मुझे यहां आप लोगों से एक बात और करनी है। भारत और तिब्बत को सांझे सूत्र में बांधने वाले आचार्य पदमसंभव हिमाचल प्रदेश के मण्डी के ही रहने वाले थे। दूर तिब्बत और मध्य एशिया तक उनकी भी पताका फहराती है। पदमसंभव सैकड़ों साल पहले बुद्ध का संदेश लेकर हिमालय के एक छोर हिमाचल प्रदेश से दूसरे छोर तिब्बत तक गए थेऔर इसे संयोग ही कहना चाहिए कि जब तिब्बत पर लाल छाया का प्रेत मंडराने लगा तो परमपावन दलाईलामा जी ने इस राष्ट्रीय संघर्ष के लिए हिमाचल प्रदेश को ही चुना। कया यह भी संयोग ही नहीं है कि तिब्बत की अस्मिता का हिमाचल से उठा यह आंदोलन सारी दुनिया में फैल गया है। मुझे आशा है कि भारत और तिब्बत दोनों देशों के लोगों का यह राष्ट्रीय सम्मेलन इस आंदोलन को एक नई और सार्थक दिशा देगा।

तिब्बत पर चीन द्वारा कब्जा कर लेने से हिमाचल प्रदेश को अत्याधिक नुकसान हुआ है। हिमाचल प्रदेश के दो विशाल जिले किन्नौर और लाहुल स्पिति की सीमा तिब्बत के साथ लगती। किन्नौर से सैंकड़ों की संख्या में विद्यार्थी पढ़ने के लिए ल्हासा के सेरा, द्रेंपुग और गांदेन विश्वविद्यालयों में जाते थे। लाहौलस्पिति और किन्नौर के अनेक प्राध्यापक भी इन विश्वविद्यालयों में पढ़ाते थे । तिब्बत और हिमाचल प्रदेश में परस्पर आदान प्रदान होता रहता था। रामपुर बुशहर में तिब्बती व्यापार का बहुत बड़ा मेला लगता था। लेकिन चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा कर लेने के उपरांत ये सारी गतिविधियाँ ठप्प हो गईं। हजारों सालों के सांस्कृतिक रिश्तों में मानो एक नई चीन की दीवार खड़ी हो गई हो। मुझे बहुत से तिब्बती मिलते रहते हैं। वे बताते हैं कि भारत के साथ हमारा शरीर और आत्मा का रिश्ता है और चीन के साथ भेड़िये और मेमने का रिश्ता है। भारत सरकार हमारी मदद क्यों नहीं करती? मेरे पास उनके इस प्रश्न को कोई उत्तर नहीं होता। लेकिन मैं उनको कहता हूँ सरकार की ओर से तो मैं कुछ नहीं कह सकता लेकिन जहां तक भारतीय जनता का प्रश्न है जनता आपके साथ है। भारत–तिब्बत सहयोग मंच भारतीय जनता की इसी भावना का प्रतिनिधित्व करता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस देश का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। संघ पूरे तौर पर तिब्बत के साथ है। गुरुजी ने तो १९५० के आसपास ही भारत सरकार को चीन के खतरनाक इरादों के बारे में आगाह करना शुरू कर दिया था। भारत तिब्बत सहयोग मंच देशभर में तिब्बत के मसले पर भारतीयों को जोड़ रहा है।

हमारा मानना है कि भारत सरकार चीन सरकार के साथ जो वार्ता कर रही है उसमें जब तक तिब्बत की बात नहीं उठाई जाएगी तब तक उसका कोई लाभ नहीं होगा। तिब्बत की रक्षा करना भारत का सामरिक दायित्व ही नहीं है बल्कि नैतिक दायित्व भी है। चीन चाहे तिब्बत पर अपनी दावेदारी ठोकता रहे । लेकिन तिब्बत के लोग चीन को कभी अपना स्वाभाविक साथी नहीं मानते । चीनी और तिब्बतियों में मानसिक दूरी ऐतिहासिक है। तिब्बत के लोग भारत में आकर अपने आपको जितना सहज अनुभव करते हैं उतना चीन में नहीं ।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के दो दिवसीय सम्मेलन में पूरे समय उपस्थित रहे हैं । उसी से सिद्ध होता है कि संघ तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को पूरा समर्थन दे रहा है और तिब्बत की समस्या उसकी कार्यसूची में प्राथमिकता पर है। संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्रीगुरुजी ने तिब्बती स्वतंत्रता का खुलकर समर्थन किया था उन्होंने संघ की तिब्बत नीति की नींव तैयार की थी। भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने श्री गुरुजी के जन्मशताब्दी के अवसर पर धर्मशाला में अपना यह ऐतिहासिक सम्मेलन कर स्पष्ट कर दिया है कि भारत संकट की घड़ी में तिब्बत के लोगों के साथ हैं। हम यह मानते हैं कि तिब्बत की स्वतंत्रता जहां तिब्बतियों के लिए है वहीं भारत की सुरक्षा और अखंडता के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। तिब्बत के लोग यदि अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष जारी रखेंगे तो सफलता उनके कदम चूमेगी।

सत्य तो यह है कि चीन ने हमारे साथ विश्वासघात नहीं किया क्योंकि उसमें हमारे विश्वास का कभी प्रश्न नहीं था। इसके विपरीत हमने तिब्बत के उसी विश्वास के साथ धोखा किया, जो उसने हमारे ऊपर किया था। हमने एक बड़ा पाप किया है। ईश्वर ही जाने हमें इसका किस प्रकार से प्रायश्चित करना होगा?

\- माधव राव सदाशिव गोलवलकर

षष्ठम अध्याय

तिब्बत के प्रश्न को सुलझाना ही होगा – इन्द्रेश कुमार

तिब्बत का प्रश्न अब उस मोड़ पर पहुँच गया है जहां यदि हम ठीक ढंग से प्रयास करें तो उसे उसकी निर्णायक परिणति तक पहुँचाया जा सकता है। लेकिन प्रश्न यह है कि भारत सरकार इसमें अपनी भूमिका ठीक ढंग से अदा करती है कि नहीं ? आज इतने सालों के बाद यदि हम तिब्बत आंदोलन पर समग्रता से विचार करें तो इसके तीन पड़ाव स्पष्ट दिखाई देते हैं। १९५९ में दलाईलामा तिब्बत से भारत में आए थे। पंडित नेहरू के सुझाव पर दलाईलामा ने कुछ साल चीन के साथ निभाने का प्रयास भी किया। क्योंकि चीन ने तिब्बत पर कब्जा तो १९४९–५० में ही कर लिया था । १९४९ से लेकर १९५९ तक का यह १० साल का कालखंड तिब्बत के इतिहास का विनाशकारी और निराशाजनक कालखंड है। एक शक्तिशाली पड़ोसी देश चीन तिब्बत को निगल रहा था और दुनिया चुपचाप उसे देख रही थी। तिब्बत के गुलाम हो जाने से सबसे ज्यादा नुकसाना भारत को ही होने वाला था लेकिन भारत सरकार केवल चुप नहीं रही बल्कि दलाईलामा को भी चुप रहकर येनकेन प्रकारेण माओ के साथ तालमेल बनाने की सलाह देती रही। पंडित नेहरू को शायद इसमें कुछ अटपटा नहीं लग रहा होगा। क्योंकि वे उस कालखंड में स्वयं भी माओ से तालमेल बिठाने का हर संभव प्रयास कर रहे थे। वैसे इधर जो नए दस्तावेज मिल रहे हैं उनसे ऐसा आभास भी मिलता है कि पंडित नेहरू चीन के खतरे को पहचान तो रहे थे लेकिन उसका सामना करने में

वे स्वयं को विवश अनुभव कर रहे थे। उनकी इस विवशता या फिर चीन पर उनके विश्वास ने भारत और तिब्बत दोनों को ही घायल किया। तिब्बत के इतिहास का यह कालखंड यदि श्रीगुरुजी माधवराव सदाशिव गोलवलकर के शब्दों में कहा जाए तो तिब्बत के साथ विश्वासघात का कालखंड है। वैसे तो चीन के बारे में १९वीं शताब्दी के अंत में और बाद में २०वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्वामी विवेकानंद और विपिन चंद्र पाल ने कहा था कि चीन सोया हुआ राक्षस है जिस दिन वह जग जाएगा उस दिन दुनिया के लिए काली क्रूर रात्रि प्रारंभ हो जाएगी। तिब्बत के लिए तो यह रात्रि शुरू हो ही गई थी और भारत पर यह काला साया बढ़ रहा था ।

दूसरा कालखंड १९५९ से शुरू होता है जब दलाईलामा को तिब्बत से भारत में आकर शरण लेनी पड़ी। उनके साथ उनके हजारों अनुयायी भी थे। भारत ने दलाईलामा को शरण तो दी लेकिन किसी प्रकार की भी गतिविधियों की उन्हें अनुमति नहीं दी। १९६२ को भारत के इतिहास का भी और तिब्बत के इतिहास का भी टर्निंग प्वाइन्ट कहा जा सकता है। चीन के आक्रमण के कारण भारत का मोह तो उससे टूटा ही साथ ही पंडित नेहरू को इस बात का पता भी चल गया कि चीन के बारे में दलाई लामा का आकलन सही था और उनका अपना गलत । १९६२ के आक्रमण में भारत की पराजय हुई। चीन ने भारत के लगभग एक लाख वर्ग किलोमीटर भू–भाग पर कब्जा कर लिया। भारतीय मनोविज्ञान को पराजय के दंश से भेद दिया। इसकी तैयारी चीन काफी देर से कर रहा था। पंचशील का समझौता नेहरू को अपने जाल में फंसाने की चीन की कूटनीतिक विजय थी। यह अलग बात है कि नेहरू को अपनी चीन नीति की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी और देश को अपना बड़ा भू–भाग खोकर । यहां एक बात और ध्यान में रखनी चाहिए कि चीन का मकसद केवल तिब्बत पर कब्जा करना नहीं था बल्कि माओ संपूर्ण हिमालय मुक्ति की बातें करते थे। चीन की दृष्टि में रेस के आधार पर पूरा हिमालय चीन का हिस्सा है। तिब्बत पर कब्जा तो हिमालय मुक्ति की शुरूआत भर मानी जानी चाहिए। चीनी नक्शों में भारत का बहुत बड़ा हिमालयी भू–भाग चीन का हिस्सा दिखाया गया। परंतु दुर्भाग्य से पंडित नेहरू इस पूरी साजिश को समझ नहीं सके और उन्होंने संकट के समय तिब्बत का साथ छोड़ दिया। लेकिन सौभाग्य से इस संपूर्ण कालखंड में तिब्बत के लोगों को भारतीयों का भरपूर समर्थन प्राप्त होता रहा। देशों के इतिहास में अनेक बार ऐसा कालखंड भी आता है जब लोकतांत्रिक व्यवस्था के बावजूद किसी प्रमुख प्रश्न पर सरकार

की राय उत्तरी ध्रुव की होती है और जनता की राय दक्षिणी ध्रुव की होती है। भारत के इतिहास में तिब्बत का प्रश्न ऐसा ही प्रश्न कहा जाएगा। लेकिन १९६२ के बाद दलाईलामा को भारत सरकार ने कम से कम इस बात की अनुमति तो दे ही दी कि वे भारत में रहकर तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को चला सकते हैं। चाहे यह अनुमति प्रत्यक्ष रूप से नहीं थी परंतु अप्रत्यक्ष रूप से सरकार को इसमें कोई आपत्ति नहीं थी। धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती सरकार ने एक पूरी सरकार का रूप ही अख्तियार कर लिया था। इस कालखंड में भारत के लगभग तमाम राजनैतिक दलों का तिब्बती स्वतंत्रता आंदोलन को भरतपूर समर्थन मिला। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भारतीय जनसंघ की इसमें अग्रणी भूमिका रही। संघ के उस समय के सरसंघचालक माधवराव सदाशिव गोलवलकर और भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष आचार्य रघुवीर तिब्बत के प्रश्न को देश की विदेश नीति में प्रमुख स्थान पर ले आए थे। समाजवादी भी अपने ढंग से इस प्रश्न को लेकर भारत की जनता के बीच जा रहे थे। राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण का स्मरण यहां करना उचित होगा ।

आपात् स्थिति के बाद ऐसा कालखंड आया जिसमें सरकारों ने एक बार फिर चीन के साथ अच्छे संबंध बनाने के नाम पर बीजिंग में दस्तक देनी शुरू कर दी। इधर दलाईलामा भी भारत सरकार का पूरा समर्थन न मिलता देख मध्यमार्ग अपनाने के लिए विवश हुए । अलबत्ता मध्य मार्ग से इतना लाभ अवश्य हो सकता था कि भारत सरकार यदि चाहती तो उसे तिब्बत का खुलकर समर्थन करने का एक अवसर प्राप्त हो गया था। लेकिन दुर्भाग्य से भारत सरकार ने इस अवसर का भी लाभ नहीं उठाया । उसकी चीन के साथ सामान्य संबंध बनाने की इच्छा जरूर तेज होती गई और यह सब तब हो रहा था जब चीन पहले की तरह पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत को घेरने की अपनी कोशिशों में जी-जान से जुटा हुआ था। उसने १९६२ में भारत पर आक्रमण भी इसलिए किया था ताकि उसे सबक सिखाया जा सके और नेहरू की विश्व नेतृत्व की इच्छा का उपहास उडाया जा सके। २१वीं शताब्दी में भी चीन उसी रास्ते पर चल रहा है और भारत सरकार एक बार फिर पंडित नेहरू के रास्ते पर ही चल पड़ी है। भगवान का शुक्र है कि अभी तक साऊथ ब्लॉक में हिंदी चीनी भाई-भाई के नारे लगने शुरू नहीं हुए है। इस मोड़ पर जार्ज फर्नांडिस ने जब यह कहा था कि चीन हमारा शत्रु नम्बर एक है तो वह असलियत से ही पर्दा उठा रहे थे। पर जो लोग असलियत

को ढकना चाहते है उन्होंने जल्दी-जल्दी उस पर फिर पर्दा डालना शुरू कर दिया। परंतु पिछले लगभग १० सालों से तिब्बत का प्रश्न एक बार फिर देश की मुख्य कार्यसूची में शामिल हो रहा है। भारत-तिब्बत सहयोग मंच इसमें प्रमुख भूमिका निभा रहा है। उसने हाशिये पर चले गए इस प्रश्न को फिर देश की जनता के सम्मुख रखा है और नीति निर्धारकों को तिब्बत के प्रश्न से दाएं-बाएं भागने से रोकने का प्रयास किया है। श्री गुरु जी की जन्मशताब्दी के अवसर पर तिब्बत के लिए आवाज उठाना गुरु जी को सबसे बड़ी श्रद्धांजलि मानी जाएगी। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि तिब्बत की गुलामी से कैलाश मानसरोवर भी गुलाम हो गया है। कैलाश मानसरोवर करोड़ों हिन्दुओं, जैनों, सिखों, प्रकृति पूजकों और बौद्धों की श्रद्धा भूमि है। चीन के इतिहास में कैलाश मानसरोवर कहीं नहीं है। जबकि भारत और तिब्बत का इतिहास कैलाश मानसरोवर के बिना अधूरा है । मुझे आशा है कि भारत-तिब्बत सहयोग मंच के प्रयत्नों से और भारत की जनता के दबाव से भारत सरकार तिब्बत के प्रश्न को अपनी विदेश नीति का मुख्य मुद्दा बनाएगी।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा में श्री सुदर्शन जी की उपस्थिति तिब्बत के मामले में श्री गुरु जी की विरासत को आगे बढ़ाने का प्रमाण है। तिब्बत को स्वतंत्र कराना भारत का दायित्व है, क्योंकि तिब्बत उस मूल सांस्कृतिक प्रवाह का अंग है जिसका प्रवाह भारत की धमनियों में सदैव से प्रवाहित हो रहा है।

सप्तम अध्याय

हमने चीनी दानव की दानवता को नहीं समझा - कुप्प. सी. सुदर्शन

आज के इस भव्य समारोह के अध्यक्ष स्थान पर विराजमान निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री मा. सामदोंग रिम्पोछे जी, हम सबको अपने आशीर्वाद से और अपनी उपस्थिति से कृतार्थता प्रदान करने वाले योगी राज अमर ज्योति जी, प.पू. गुरुजी जन्मशताब्दी समारोह समिति हिमाचल प्रदेश के अध्यक्ष, पूज्य महंत सूर्यनाथ जी, तिब्बत की संसद के अध्यक्ष कर्माचोफेल, उपाध्यक्ष श्रीमती गौरी डोलमा जी, मंच पर विराजमान अन्य समस्त मान्यवर गण तथा अपनी उपस्थिति से इस समारोह को गरिमा प्रदान करने आए हुए समस्त बहनों एवं भाईयो।

विष्णु पुराण में उल्लेख आया है-

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने।
यतो हि कर्मभूरेषा ह्यतोऽन्याः भोगभूमयः।।

इस जम्बू द्वीप में भारत वर्ष एक ऐसा स्थान है, जो कर्म भूमि है बाकी की सब भूमियां भोग भूमियां है। इसलिये धर्मभूमि, कर्मभूमि, मातृभूमि, पितृभूमि यह हमारा भारतवर्ष है। यही एक ऐसी भूमि है, जहां योग्य प्रकार का कर्म करेंगे तो मनुष्य जीवन का जो अंतिम लक्ष्य है उसको आप मोक्ष कह लीजिये, उसको आप निर्वाण कह लीजिये, नाम कुछ भी दीजिये लेकिन उस परम मुक्ति की अवस्था केवल इसी भूमि में प्राप्त हो सकती है। दुनिया की किसी भूमि में यह सामर्थ्य नहीं

है। क्राइस्ट को भी भगवान के दर्शन नहीं हुए, देवदूत के दर्शन हुए। हजरत मोहम्मद को भी पैगम्बर मानने वाली दुनियां के अन्दर बहुत बड़ी संख्या है लेकिन उन्होंने भी भगवान के दर्शन नहीं किये। उन्होंने जिन्न के दर्शन किये हैं, शैतान के भी दर्शन कर लिये, भगवान के दर्शन नहीं किये। भगवान का दर्शन करने वाले केवल इसी भूमि में पैदा हुए। वेदकाल से लेकर आज तक इस प्रकार के लोग हुए, जो कहते हैं कि हां हमने भगवान को देखा है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस से जब नरेन्द्र ने पूछा कि स्वामी जी आपने भगवान को देखा है, बोले हां, देखा है। मैंने उससे बात की है, जैसे मैं तुमसे बात कर रहा हूं, वैसी मैंने भगवान से भी बात की है। ऐसा कहने वाले केवल इसी भूमि पर उपजे हैं क्योंकि इसी भूमि में वह सामर्थ्य है। इस भूमि की वह विशेषता है। जिन लोगों ने भूगोल पढ़ा होगा उन्होंने आर्कीज्म में पढ़ा होगा कि एक इस प्रकार की रकाबी नुमा जमीन होती है और उस जमीन के दोनों तरफ कुछ कच्ची जमीन होती है, जिसके अन्दर वर्षा का पानी चला जाता है। दोनों तरफ पक्की जमीन होती है। बीच में से खोदने पर फिर फव्वारा निकलता है। यह उसी जगह निकलता है बाकी सब जगह नहीं निकलता है। यह विशिष्ट प्रकार की भूमि है, वही आर्कीजम में मिलेगा।

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक भूमि

उसी प्रकार से वही यह भूमि है कि जहां योग्य प्रकार के कर्म करने से आपको जीवन का अंतिम लक्ष्य निर्वाण है, वह प्राप्त हो सके। इसलिये स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, यदि पृथ्वी तल पर ऐसा कोई देश है जहां ईश्वरोन्मुख प्रत्येक आत्मा को अपना अंतिम पड़ाव डालना ही होगा, शांति–शुचिता–पावित्र्य इसका जहां चरमोत्कर्ष हुआ है, वह देश केवल भारत है, भारत है, केवल भारत। इस सांस्कृतिक भारत की सीमा कितनी है इस सम्बंध में प. पू. श्री गुरुजी ने, जिनकी हम जन्म शताब्दी मना रहे हैं, प्रचारकों की एक बैठक में कहा था कि हिमालय से लेकर समुद्र तक भारत है। लेकिन हिमालय है क्या? हिमालय पामीर का जो पठार है, उस पामीर के पठार से जितनी भी शाखाएं और प्रशाखाएं निकलती हैं और वह जाकर अन्त में समुद्र को स्पर्श करती है, वह सम्पूर्ण क्षेत्र। यह कर्म भूमि है, यह भारत है। उसके अन्दर अपना तिब्बत भी आता है, उसके अन्दर अफगानिस्तान भी आता है। उसके अन्दर ब्रह्मदेश का भी बहुत बड़ा हिस्सा आता है। समुद्र के

अन्दर आसपास के जितने भी द्वीप हैं, वह सारे द्वीप समूह भी इसके अन्तर्गत आते हैं। राजनैतिक दृष्टि से अलग-अलग राज्य होंगे। भारत भूमि में अनेक राज्य अनेक समय पर रहे लेकिन जिसको हम सांस्कृतिक भूमि कहते हैं, जिसको आध्यात्मिक भूमि कहते हैं, वह यही भूमि है और तिब्बत भी उसका एक अभिभाज्य अंग है। भारतीय साहित्य में तो तिब्बत को स्वर्ग कहा है।

हमारे यहां जो पद्धति रही है कि कथा कहानियों के माध्यम से दर्शन शास्त्र के गम्भीर तत्वों को समस्त लोगों तक पहुंचाया गया है। क्योंकि दर्शन शास्त्र बड़ा रूखा होता है, उसको सुनने और समझने की ताकत सबमें नहीं होती। इसलिये उन्होंने कथा कहानियों के माध्यम से उसको समझाया। हमने गंगा अवतरण की कथा में पढ़ा है। गंगा स्वर्ग लोक में बहती थी। तिब्बत के अन्दर बहती थी। तिब्बत के उत्तर में बहती थी। जिसको आज हम दक्षिण का पठार कहते हैं, यह दक्षिण का पठार पहले अफ्रीका, आस्ट्रेलिया एक भूमि खण्ड था। वह आ कर के टकराया, जिसको हम यहां का एशिया खण्ड कहते हैं। टकराने के परिणामस्वरूप अफ्रीका अलग हो गया, आस्ट्रेलिया अलग हो गया और बीच का भूखण्ड वह भारत के साथ मिल गया। यह लाखों लाख साल पुरानी घटना है लेकिन बीच का जो हिस्सा है वह मैदान हो गया। उसके अन्दर कोई नदी नहीं थी इसलिये वहां निरन्तर अकाल पड़ते रहते थे। तब बाद की तीन पीढ़ियों में पहले अंशुमान ने तपस्या की और स्वर्गलोक से गंगा को उतारने का प्रयत्न किया। वहां से वह एक पग नीचे उतरी और कहते हैं कि शंकर की जटाओं में समा गई। उसके बाद राजा दलीप आए, उन्होंने भी जीवन भर परिश्रम किया, तपस्या की। वह थोड़ी और नीचे उतरी लेकिन शंकर की जटाओं में समाई रही। उसके बाद तीसरी पीढ़ी में भगीरथ आए, उन्होंने भी सारा जीवन लगाया और उसको अन्त में उतार कर वह हरिद्वार तक ले आए। लेकिन वहां भी उसका प्रवाह इतना तेज था कि उसको सहन करने की स्थिति किसी की थी नहीं। तब महर्षि जन्हु ने उसको पी लिया और फिर जब उनसे प्रार्थना की तो अपनी जांघ काट करके फिर से जाह्नवी का प्रवाह हुआ, जो अन्त में समुद्र में जाकर मिली। लेकिन आज की भौतिक परिभाषा में आपको देखना है तो उधर बहने वाली जो गंगा की धारा थी, उसको मरूभूमि में लाने के लिये तीन पीढ़ियों तक लगातार प्रयत्न चलते रहे और हर बार शंकर की जटा में समाती रही। हिमालय की जो शिखाएं शाखाएं हैं, वह सब जटाएं हैं शंकर जी की और वहां आकर के बहुत बड़े विस्तृत तालाब के रूप में बदल जाती थी। फिर उस तालाब में से काटकर

उसे नीचे उतारते हैं। इस प्रकार से गंगा आई और कहते हैं, सगर पुत्रों को तारा। महाराजा सगर के जितने पुत्र थे, वह सब मृत हो गए थे और उन सबको तारा। इस तरह से त्रिविष्टप और भारत का अन्योन्याश्रित सम्बंध रहा है।

धर्म–अधर्म का युग

जिसको हम कर्मभूमि कहते हैं, उस कर्मभूमि में सब आते हैं। इस कर्मभूमि के ऊपर शांति, अहिंसा के भाव मानवता के प्रति सदा सर्वदा रहे हैं। जहां पर आसुरी शक्तियां आकर उत्पात मचाएं, तो साधु और सन्त सज्जन लोगों पर अनेक प्रकार के कष्ट आते हैं। कष्टों को सहन भी करना पड़ता है लेकिन जब इस प्रकार से सज्जनों पर कष्ट आते हैं और दुर्जन वहां बलवान हो जाते हैं तो किसी न किसी रूप में फिर भगवान की शक्तियां प्रकट होती हैं। हम अगर आज से ५१४४ साल का इतिहास देखें तो ५१४४ साल पहले महाभारत का युद्ध हुआ। महाभारत का युद्ध भी धर्म–अधर्म का युद्ध था। एक ओर अधर्म करने वाले आसुरी प्रवृति के कौरव लोग थे और दूसरी ओर हर कीमत पर सब प्रकार के कष्ट सहन करते हुए धर्म की रक्षा करने वाले पांडव थे। बहुत प्रयत्न हुआ। पांच ही गांव दे दो, हम युद्ध नहीं करेंगे। हम नहीं चाहते कि व्यर्थ मनुष्य का रक्त बहे। नहीं माने, युद्ध हुआ। युद्ध में सारी आसुरी शक्तियां मारी गईं। आसुरी शक्तियां यानि जो केवल मात्र इस प्रकार का काम करते वही नहीं, चुप बैठकर जो उसका परोक्ष समर्थन करते हैं, वह भी उसके साथ रहते हैं।

भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य ये दोनों धुरधंर थे। सारे कौरव पांडवों को उन्होंने पढ़ाया था, विद्यादान किया था। शस्त्र–शास्त्र की शिक्षा दी थी, किन्तु द्रोपदी का वस्त्र हरण हो रहा था। द्रोपदी सहायता के लिये चिल्ला रही थी। भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य दोनों चुप बैठे थे। भगवान ने जब यह देखा कि शस्त्रास्त्र धुरंधर होते हुए भी इस अत्याचार को चुपचाप देख रहे हैं। कुछ नहीं कर रहे हैं। तब उन्होंने कहा कि जो अत्याचार अपनी आंखों के सामने देखते हुए भी चुप रहता है, कितना भी श्रेष्ठ पुरुष क्यों न हो, वह अपनी चुप्पी से अत्याचार को बढ़ावा देता है। इसलिये वह भी उतना ही पापी है, जितना कि पाप करने वाला प्रत्यक्ष व्यक्ति। भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज्य की स्थापना करने के लिये एक हिट लिस्ट बनाई थी, उस हिटलिस्ट में अनेक कौरवों आदि के नाम तो थे ही लेकिन उसमें भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य का नाम भी जुड़ गया। महाभारत में युद्ध हुआ, बहुत बड़ा नरसंहार हुआ।

उसके बाद धर्म राज्य की स्थापना हुई। धर्म राज्य की स्थापना होने पर भारत वर्ष के लोग कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् का सन्देश लेकर दुनिया के सब देशों में फैले। दुनिया का कोई भी महाद्वीप उन्होंने छोड़ा नहीं। आज जिसको हम अमेरिका और अफ्रीका कहते हैं (उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका)। वहां पर हमारे पुरखों के पदचिन्ह आज भी विद्यमान हैं। वहां उनसे अपना सम्पर्क जोड़ने वाले लोग आज भी हैं। आज भी यज्ञ करने वाली छोटी सी जनजाति वहां प्र है। हमारे जैसे ही यज्ञ करने वाले लोग आज भी अफ्रीका में, यूरोप में हैं, भले ही बहुत थोड़ी संख्या में हैं। उनको बहुत मारा गया, समाप्त किया गया। जैसे तिब्बत के अन्दर नरसंहार किया गया। वहां पर भी नरसंहार किया। आसुरी शक्तियों ने सब किया लेकिन फिर भी अपनी संस्कृति को, अपने जीवनादर्श को, जीवन मूल्यों को, आज भी वह संजोकर रखे हुए है। सन् २००४ में, जयपुर में इस प्रकार का एक सम्मेलन हुआ। इसमें इस प्रकार की ४३ देशों की वे जनजातियां थी जिन्होंने आज तक अपनी मूल संस्कृतियों को बचाकर रखा है, उन सबको एकत्रित किया गया था। उसमें भारत की भी सब जनजातियां थीं। बाहर की भी जनजातियां थी। मुझे भी उसमें रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। कोयम्बटूर में आर्यविद्यापीठ है। वहां के स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रयत्नों से यह सम्भव हो पाया था। एक दिन कार्यक्रम था कि प्रत्येक जनजाति अपने-अपने ढंग से पूजा करें।

उन सब जनजातियों में एक बात समान थी कि हम सब पंचतत्वों को मानते हैं। पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु। ये पांच तत्व हैं, सभी लोग इन पांच तत्वों को मानते हैं। वहां उन्होंने अपने-अपने ढंग से पूजा की। सब अपने-अपने ढंग से यज्ञ कर रहे थे। मंत्र अलग-अलग बोल रहे थे लेकिन कुल मिलाकर सबकी पद्धति एक ही प्रकार की थी। ये उस भारतीय संस्कृति को संजोए हुए अभी भी बैठे हुए हैं। उनके जो पुराने ग्रन्थ हैं, उन ग्रन्थों को वहीं छिपाकर रखा है, जिसमें लिखा है कि एक समय आएगा कि फिर से तुम्हारी अपनी संस्कृति और तुम्हारे अपने जीवन आदर्श प्रकट होंगे और तुम दुनिया के अन्दर प्रगति करोगे। आज भी उस आशा को संजोए हुए, पिछले १००० वर्षों से वे इन सब चीजों को समेट कर रखे हुए हैं। हमने अपनी संस्कृति का सारी दुनियां के अन्दर प्रसार किया। प्रत्येक राष्ट्र के जीवन में उत्थान और पतन आते हैं क्योंकि दुनिया उत्थान और पतन की प्रक्रिया में से आगे बढ़ती है। हम अगर किसी एक चक्के की परिधि के बिन्दु पर ध्यान केन्द्रित करें तो बिन्दु नीचे आता है, ऊपर आता है, नीचे आता है ऊपर

आता है। लेकिन उस चक्के की धुरी आगे बढ़ती चली जाती है। उसी प्रकार राष्ट्र के जीवन में भी उत्थान और पतन आते हैं। प्रत्येक उत्थान में पतन के बीज होते हैं, प्रत्येक पतन में उत्थान की सम्भावनाएं होती हैं। और इस उत्थान पतन के चक्र में से राष्ट्र का जीवन आगे बढ़ता है। हम देखें कि यह उत्थान की प्रक्रिया जो महाभारत युद्ध के बाद शुरू हुई, वह लगभग २०० साल तक चली।

करूणाकर बुद्ध अवतार

आज से ३८०० वर्ष पहले यानी ईसा से १८०० वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। हमने इतिहास की पुस्तक में पढ़ा है कि गौतम बुद्ध ईसा पूर्व ४३५वें साल में हुए। यह तो कम करके दिखाया गया, अपने पुराणों के अन्दर है कि वह १८०० साल ईसा पूर्व हुए। आज से ३८०० साल पहले। उन्होंने देखा कि उस समय जिस संस्कृति का प्रसार था, यज्ञ संस्कृति सबके कल्याण के लिये होती थी। लेकिन अपनी ही चीजों को और अपने ही आदेशों को समझने की अपात्रता के कारण, अपने स्वयं के स्वार्थ के कारण, यज्ञ का तो हमने पशु मारकर और अपनी जीभ के चटोरेपन को पुष्ट करने के लिये उपयोग करना प्रारम्भ कर दिया। यज्ञ जहां समस्त मानव के, प्राणी मात्र के कल्याण के लिये होते हैं, वहां वे केवल मात्र कुछ लोगों की जीभ के चटोरेपन को शांत करने में उपयोग में आने लगे। उस समय करूणाकर भगवान बुद्ध का अवतार हुआ। उन्होंने उन्हीं सारे तत्वों को नए सिरे से लोगों के सामने रखा। कहा कि ये जो यज्ञ के अन्दर हिंसा होती है, वह नहीं होनी चाहिये। यह गलत है और फिर नए सिरे से उसकी व्याख्या की। बौद्ध धर्म का आविर्भाव हुआ। फिर से हम दुनिया के विभिन्न देशों में पहुंचे। हम अरब स्थान में भी पहुंचे। हम यूरोप में भी पहुंचे, हम चीन, जापान सब जगह पर पहुंचे, दक्षिण पूर्वी एशिया में पहुंचे। आज भी उनके अवशेष वहां पर हैं। ये जो बुत शब्द आया है, इस्लाम में बुत यानि मूर्ति, ये बुद्ध से आया है। अनेक जगह बुद्ध की मूर्तियां थी, वहां के लोग उसको बुत कहते थे। बुत परस्ती और मूर्तियों को तोड़ना उसको कहते हैं बुत शिकन। १०००–१२०० वर्ष तक यह भी फला–फूला। फिर उसमें भी विकृति आई। यह समय का फेर है, आता रहता है। जिस समय गौतम बुद्ध के पट्ट शिष्य आनन्द ने महिलाओं को भी विहारों में समावेश कर दिया, तब महात्मा गौतम बुद्ध ने कहा था कि अब जो १००० साल चलने वाला था, अब शायद ५०० साल ही चलेगा। क्योंकि कुछ दिनों के बाद में मनुष्य की प्रकृति के

अन्दर विचलन होने लगता है तो गड़बड़ियां पैदा हो जाती हैं। इसलिये हम देखते हैं कि बौद्ध मत का प्रभाव भी करीब १०००-१२०० साल तक चला। उसके बाद शंकराचार्य हुए और शंकराचार्य ने बौद्ध मत की समस्त दार्शनिक मान्यताओं को स्वीकार करते हुए वेदान्त की प्रस्थापना की। विभिन्न प्रकार की पूजा-पद्धतियों को सबको समर्पित करते हुए कहा कि वेदान्त के अन्दर सबका सर्वसमाहित है। क्योंकि उन्होंने बौद्ध मत की सारी मान्यताओं को स्वीकार कर लिया था, इसलिये शंकराचार्य को भी प्रच्छन्न बौद्ध कहते हैं। बौद्धों ने फिर से इसको अपने अत्यंत सुदृढ़ आधार पर प्रस्तुत किया। अपनी संस्कृति के उत्थान का कार्य प्रारम्भ हुआ और यह उत्थान का कार्य नवीं शताब्दी तक चला। ९वीं शताब्दी के बाद फिर पतन आया। अपनी ही चीजों को समझने में हम अपात्र होने लगे। हमने कहना शुरू कर दिया, समुद्र यात्रा निषिद्ध है। अरे समुद्र यात्रा निषिद्ध है तो हमारे पुरखे दुनिया के सब देशों में कैसे गए? लेकिन लोगों ने कह दिया समुद्र यात्रा निषिद्ध है और यह जो विश्व विजयी इस प्रकार का अपने यहां का समाज था, ये संकुचित होकर अपने घर में बैठ गया। तुम अगर घर में बैठ गए, आगे बढ़ नहीं सकते तो संकोच ही होता है। अपना विस्तार करो या संकुचित हो जाओ। उस समय में विस्तार किया, कृणवन्तो विश्वम् आर्यम् तो हम फैले। लेकिन हमारे फैलने में और दूसरे लोगों के फैलने में बहुत अन्तर है। हमने कभी किसी पर अत्याचार नहीं किया।

कोई बतलाए काबुल में जाकर कितनी मस्जिद तोड़ी।
अरे भूभाग नहीं शत् शत् मानव के हृदय जीतने का निश्चय,
हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय।
जग के ठुकराए हुए लोगों को लो मेरे घर का खुला द्वार,
मैं अपना सब कुछ लुटा चुका फिर भी अक्षय है धनागार।

यह अपने यहां की परम्परा है। अपनी संस्कृति को हमने फैलाया है। लोगों को उच्च बनाया, लोगों को शालीन बनाया, लोगों को सुसभ्य बनाया। हमारे यहां दूसरे लोग विनाश करने के लिये आए। नवीं शताब्दी के बाद फिर से पतन का काल चालू हो गया और हम सिकुड़ने लगे। सिकुड़ते-सिकुड़ते अफगानिस्तान चला गया। ब्रह्मदेश निकल गया। श्रीलंका भी निकल गया और अभी अपनी आंखों के देखते-देखते तिब्बत भी किसी ने हजम कर लिया। और भारत को भी हजम करने की तैयारी शुरू हो गई, कुतरने की तैयारी शुरू हो गई।

शक्ति का महत्त्व पहचानें

अब ऐसे समय में जब हमारे ऊपर इस प्रकार के आक्रमण हो तो हमारे सिद्धांत कितने भी श्रेष्ठ क्यों न हो, उन सिद्धांतों के पीछे अगर शक्ति का संबल नहीं है तो हमारे सिद्धांत को मानने वाला कोई नहीं है। तुम्हारे गाल के ऊपर कोई एक थप्पड़ मारता है और दस थप्पड़ मारकर तुमने उसका बदला नहीं चुकाया तो तुम आदमी कहलाने लायक नहीं हो। लेकिन दस थप्पड़ मारने की हिम्मत चाहिये। जिस समय भारत का विभाजन हुआ। उस समय ऐसी अनेक घटनाएं हुई। लाहौर इत्यादि के अन्दर लूटपाट चल रही थी। गुंडे लूटपाट कर रहे थे। महिलाओं को ले जा रहे थे। एक सेठ जी अपने छज्जे पर बैठे हुए थे। बन्दूक लेकर बैठे थे। गुन्डे आए, घर को आग लगा दो। कहा, खबरदार! बन्दूक की गोली चलाऊंगा। इतने में नीचे से एक ने कहा, ऐ बुजदिल, फेंक उस बंदूक को, इसी छुरे से तेरा अभी काम तमाम कर दूंगा। नीचे खड़े होकर छत पर खड़े आदमी को कैसे वार करता, लेकिन उसमें दम ही नहीं था। उसने बंदूक छोड़ दी। तो हमारे हाथ में शस्त्र हैं इसलिये हम बहादुर हैं, ऐसा नहीं है। एक आदमी दोनों हाथों में तलवार लेकर जा रहा था। एक ओर आदमी आया, एक थप्पड़ मारा और चल दिया। किसी ने पूछा कि अरे भाई तुम्हारे दोनों हाथों में तलवारें थी, फिर उसने तुमको थप्पड़ कैसे मार दिया। तुमने कुछ किया क्यों नहीं। क्या करें, मेरे दोनों हाथ बंधे थे। ये कायरता है। इसलिये सबसे बड़ी चीज यह है कि हम शक्ति की आराधना करें। हम केवल सज्जन हैं इसलिये दूसरे हमको बख्श देंगे, ऐसा नहीं है।

एक बार एक बकरा ब्रह्माजी के सामने गया कि ब्रह्माजी देखिये, प्रत्येक प्राणी को आपने आत्मरक्षा के कुछ न कुछ साधन दिये हैं। किसी को पैने दांत दिये हैं। किसी को पैने नाखून दिये हैं। किसी को सींग दिये हैं, मुझको आपने कुछ नहीं दिया। इसीलिये जो पकड़ता है, वही मुझको खा लेता है। कहते हैं, ब्रह्मा जी ने कहा कि बाबा मेरे सामने से हट जा, तुझको देख कर मेरे मुंह में भी पानी आ रहा है। इसलिये हमारे यहां एक श्लोक है कि एक भक्त भगवान से पूछता है, हम काहे की बलि दें। घोड़ा दें, बोले न, हाथी की बलि दें, न, बाघ की बलि दें, बिल्कुल नहीं, तो काहे की बलि दें। कि बकरा लाओ। तो कहा–

अश्वं नैव, गजं नैव, व्याघ्रं नैव च नैव च
अजा पुत्रां बलिं दद्यात, देवो दुर्बलघातकः।

देवता भी दुर्बल को मारता है। इसीलिये स्वामी विवेकानन्द ने कहा है, दुनिया में दुर्बल होना सबसे बड़ा पाप है। इसीलिये सज्जनता तभी शोभा देती है, जब हमारे पास में शक्ति होती है, सामर्थ्य होती है। हम यदि सामर्थ्य रखते हैं कि अच्छा पाठ पढ़ा सकते हैं, फिर भी कुछ गलती की और हमने छोड़ दिया, तब तो हैं क्षमा वीरस्य भूषणम्। लेकिन हमारे पास ताकत ही नहीं है, किसी ने तमाचा मार दिया। जाओ तुमको क्षमा कर दिया। क्या मतलब है, तुम्हारे क्षमा करने का। इसीलिये किसी ने कहा है, युद्ध से यदि बचना है तो युद्ध की पूरी तैयारी रखो। जब तुम्हारे पास पूरी तैयारी रहती है और शत्रु को मालूम होता है कि एक थप्पड़ की जगह १० थप्पड़ दे सकता है। तब तुम्हारे साथ वह दोस्ती का हाथ बढ़ाता है। हमारे यहां गलती यही हुई। हमने चीनी दानव के सामने उसकी दानवता को समझा नहीं। चेतावनी दी थी स्वामी विवेकानन्द ने, चीन एक सोता हुआ भस्मासुर है, इसको ऐसे ही सोए रहने दो। जिस दिन यह जागेगा सारी दुनिया के लिये संकट बनेगा। किसी ने प्रश्न पूछा कि क्या भारत के लिये भी संकट बनेगा। बोले हां, वह भारत के लिये भी संकट बनेगा। ये बात स्वामी विवेकानंद ने १८९३–९४ के आसपास कही थी। उनको मालूम था कि कैसा भस्मासुर है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत के नेता इस बात को समझ नहीं सके। इसीलिये उस चीनी दानव को खुश करने में लगे रहे। वह लात मार रहा था, हम हिन्दी चीनी भाई–भाई कह रहे थे। इस प्रकार की जो आसुरी शक्तियां हैं, उन आसुरी शक्तियों को अगर हम बढ़ावा देते हैं तो उनकी असुरता और बढ़ती है। इसीलिये सर्वसद् परामर्श है कि हम शक्ति सम्पन्न बने, बल सम्पन्न बनें, यह आवश्यक है। हम मारेंगे नहीं। हम अपनी तरफ से किसी पर अत्याचार नहीं करेंगे। लेकिन कोई हम पर अत्याचार न करने पाए, इसलिये हमको तो बलवान बन कर ही रहना पड़ेगा। यही इतिहास सबको शिक्षा देता है। यह शिक्षा हम भूले, इसीलिये गड़बड़ हुई। आज फिर से वह समय आ गया है कि एक ही कर्म भूमि, एक ही धर्म भूमि के अन्दर रहने वाले भारत और तिब्बत के लोग और आसपास के जो अन्य पड़ोसी देश हैं, जहां पर इसी प्रकार के लोग हैं, जो धर्म में आस्था रखते हैं, जो अध्यात्म में आस्था रखते हैं, ऐसे सब लोगों को फिर से संगठित और बल सम्पन्न होना पड़ेगा। शक्ति संग्रहित करनी पड़ेगी। कब मौका आएगा, नहीं आएगा। यह परिस्थिति पर निर्भर करता है। तैयारी हमारी चाहिये, तैयारी हो तो मौके का हम लाभ उठा सकते हैं।

उदाहरण के लिये १९७१ में जब पाकिस्तान टूटा। बंगलादेश अलग हुआ,

वह केवल भारत के कारण हुआ। शेख मुजीबुर्रहमान को पाकिस्तान में गिरफ्तार कर लिया गया था। वह तो चुनकर आया था, प्रधानमंत्री बनने वाला था, उसको प्रधानमंत्री बनने नहीं दिया गया। उन लोगों ने उसको गिरफ्तार कर लिया, तब पाकिस्तान की सेनाएं घुस गईं और बंगलादेश के अन्दर निर्मम अत्याचार करना शुरू कर दिया। जब उसने गुहार लगाई तो भारत की सेना वहां गई और वहां जाकर सारे पाकिस्तानी सैनिकों को परास्त किया। उनसे शस्त्र रखवा लिये। ९०,००० सैनिकों ने अपने सारे शस्त्र रख दिये और बंगलादेश पाकिस्तान से मुक्त हो गया। हम सोचते रहे, यह पाकिस्तान से मुक्त हुआ है, कम से कम कुछ तो हमारा लिहाज करेगा। नहीं किया। वह जो मौका था, उस समय पर्वतीय चट्टग्राम बौद्ध बहुल इलाका था। वहां कोई मुसलमान नहीं था और समुद्र के किनारे का जो चटग्राम जिला था, चटगांव जिसको कहते हैं, वह भी हिन्दू बहुल जिला था। गलती से अंग्रेजों ने उसे पाकिस्तान के साथ जोड़ दिया था। अगर उस समय के हमारे लोग उनके सामने दूर दृष्टि होती तो वह कहते, ठीक है हमने तुमको स्वतंत्र कर लिया, लेकिन पिछली बार गलती से यह हिस्सा तुम्हारे पास चला गया था, इसे भारत के साथ जोड़ लेंगे। यह हमने उस समय पर किया होता तो ये हमारी दूरदर्शिता होती। लेकिन यह तब होता, यदि हमारे सामने यह दूरदृष्टि होती। दुर्भाग्य से उस समय के नेताओं के अन्दर यह दूरदर्शिता नहीं थी। इसका परिणाम यह हुआ कि वही बंगलादेश आज हमको आंखे दिखा रहा है। वहां से इधर आईएसआई के लोग आसाम के अन्दर भी गड़बड़ मचा रहे हैं। बम्बई में आकर के बम्ब विस्फोट करते हैं। कश्मीर के अन्दर भी गड़बड़ियां फैलाते हैं। शत्रु को कभी कम नहीं समझें, यह हमारी हमेशा भूल होती रही। अपनी भलमनसाहत में आकर हमने सब कुछ किया है लेकिन समय आ गया है कि हम शक्ति के महत्व को पहचानें। अपने आप को बल सम्पन्न बनाएं। हम बल सम्पन्न होंगे तो सारा वैभव भी हमारे साथ में आएगा और इसलिये–

आंखों में वैभव के सपने, पग में तूफानों की गति हो।
राष्ट्र सिन्धु का ज्वार न रुकता, आए जिस–जिस की हिम्मत हो।

अष्टम अध्याय

भारत को जगतगुरु का दायित्व निभाना होगा - प्रो. सामदोंग रिम्पोच्छे

परम पूज्य श्रद्धेय सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी, पूज्यपाद प्रातः स्मरणीय योगीराज अमरज्योति जी, आदरणीय महंत जी, आदरणीय पूर्व मुख्यमंत्री महोदय, मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य महानुभाव और भाईयो। आज का यह दिवस बौद्ध और भारत के लिये एक ऐतिहासिक दिवस है जो एक मील के पत्थर की तरह स्मरण किया जाएगा। श्रद्धेय सुदर्शन जी के मार्गदर्शन के पश्चात् मेरे पास कहने के लिये शेष कुछ और रह नहीं गया है। मात्र एक औपचारिक अध्यक्षीय भाषण के रूप में मैं यह समझता हूँ कि कुछ कहना आवश्यक है। समय की सीमा है। अतिथिगण को अपने गंतव्य पर जाने के लिये भी कुछ समय चाहिये। इन सब को दृष्टि में रखते हुए मैं बहुत कुछ कहकर आपका समय अपव्यय नहीं करूंगा। मैंने यह इसलिये कहा कि आज का यह दिन ऐतिहासिक है, इसमें कल धर्मशाला की देवभूमि पर बौद्ध और भारत की दो उत्कृष्ट महान आत्माओं का मिलन हुआ। (२५ अक्टूबर २००६ को सुदर्शन जी एवं परमपावन दलाईलामा जी की ऐतिहासिक भेंट वार्ता हुई थी– संपादक) अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर दोनों महात्माओं का वक्तव्य मैंने श्रवण किया। उससे मुझे ऐसा लगा कि योग्य परिवर्तन का पदार्पण है। हम सब उस योग्य परिवर्तन के निमित्त बन सकते हैं। इससे अधिक सौभाग्य एक पुरुष के लिये और क्या हो सकता है। यह एक ऐतिहासिक घटना है। आज इस विशाल सभास्थल पर धर्मशाला के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित हैं। तिब्बती

शरणार्थी वर्ग का नेतृत्व एवं उनके नवयुवक छात्रगण भी उपस्थित हैं। यहां पर मा. सुदर्शन जी का अत्यंत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन और उपदेश हमें प्राप्त हुआ है। इन महानुभावों के द्वारा प्रदर्शित मार्ग में चलकर हम तिब्बत या भारत ही नहीं, सम्पूर्ण मानव मात्र के लिये एक नए युग के दिशा निर्देश को देख सकते हैं। इसका आश्वासन, इसका विश्वास आज हमें प्राप्त हुआ है। यह दूसरी महत्वपूर्ण घटना है। यह दोनों ऐतिहासिक घटनाएं हैं। गत १५-२० वर्षों से परम पावन दलाई लामा जी का ये कथन रहा है कि २१वीं सदी में मानवता का मार्गदर्शन, आर्यव्रत भारतवर्ष को करना होगा। यह जगत गुरु होने का एक दायित्व है और उस दायित्व को निभाना चाहिये। आज इस सभास्थल पर दो महानुभावों की जो अमरवाणी हमें प्राप्त हुई है इससे हम आश्वस्त हुए हैं। तिब्बत की समस्या मात्र ६० लाख लोगों की समस्या नहीं है। इस मानव मात्र की गहरी समस्या को एक व्यापक दृष्टि से देखना होगा। मानवीय कष्ट और क्लेशों के परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। इसलिये एक व्यापक स्तर पर और एक व्यापक उपाय से इस समस्या का समाधान, सम्पूर्ण जगत के हित के लिये खोजना होगा। इस कार्य में भारत तिब्बत सहयोग मंच और भारतीय जनता, तिब्बती लोग संगठित होकर लगे हुए हैं। हम अपने लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त करेंगे ऐसा विश्वास है। यह जो हमारे सामने भारत तिब्बत की सांझी समस्या है इसका समय की दृष्टि के साथ उचित उपाय से समाधान खोजना पूज्य श्रीगुरुजी की जन्मशती को मनाने का और उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करने का सबसे उत्तम मार्ग होगा, ऐसा भी मैं मानता हूँ। इन्हीं शब्दों के साथ सभी महानुभावों के प्रति आदर और श्रद्धा अभिव्यक्त करते हुए और विद्यार्थियों को अपना साधुवाद देते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जय तिब्बत। जय भारत।

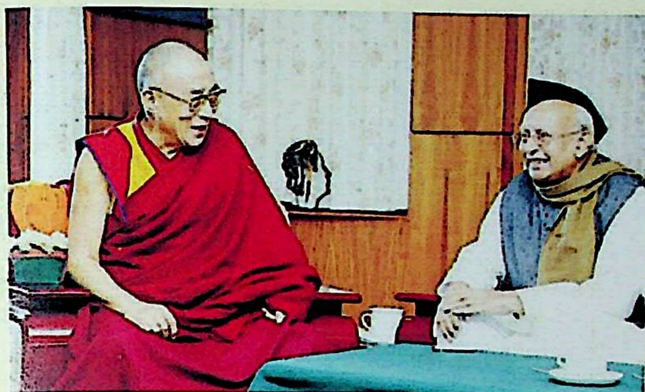
नवम अध्याय

तिब्बत का प्रश्न श्री गुरु जी से श्री सुदर्शन जी तक

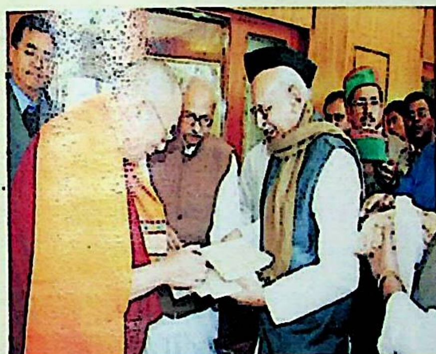
– डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

आज से ६० वर्ष पूर्व की घटना है। दलाईलामा ल्हासा के अपने भवन से निकल चुके थे। अंधेरी रात्रि थी, उनके साथ उनके गिने चुने विश्वासी अंगरक्षक और उनकी सरकार के साथी थे। चीन सेना आदमबो–आदमबो करती हुई उनका पीछा कर रही थी। आकाश में वायुयानों का सहारा भी लिया जा रहा था। दलाईलामा के आगे एक लंबा रास्ता पड़ा था। वे भारत की ओर आ रहे थे। भारत आने का यह रास्ता तीन दिन का हो सकता था। चार दिन का भी हो सकता था, लेकिन आगे का रास्ता कितना लंबा हो सकता है इसका अंदाजा शायद दलाईलामा को भी न रहा हो। अमेरिका भी दलाईलामा के एक–एक पग की टोह ले रहा था। अमेरिका की रणनीति थी कि दलाईलामा अमेरिका में ही शरण लें। वह इसके लिए अपने माध्यमों से दलाईलामा को प्रेरित भी कर रहा था। वे शीत युद्ध के दिन थे। न्यूयार्क में दलाईलामा को अमेरिका चीन के खिलाफ एक ट्रॉफी की तरह इस्तेमाल कर सकता था। लेकिन अमेरिका की इतनी हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह यह घोषणा कर दे कि तिब्बत एक स्वतंत्र देश है।

इतनी हिम्मत तो शायद दिल्ली में पंडित नेहरू भी नहीं जुटा पा रहे थे। परंतु दलाईलामा जानते थे उनका भारत में आना और भारत सरकार द्वारा उनको



तिब्बत का भविष्य हमें ही बनाना होगा (दलाई लामा और सुदर्शन जी)



भारत–तिब्बत के रिश्ते कोई नहीं तोड सकता,
दलाई लामा और सुदर्शन जी



हमारा अभिवादन भी स्वीकार करें ,
श्री इन्द्रेश कुमार जी और श्री दिनेश चन्द्र जी



निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री
प्रो. सामदोंग रिंपोछे – सुदर्शन जी आपका स्वागत है



तिब्बत की स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री और
पूर्व केन्द्रीय मंत्री शांता कुमार, प्रो. सामदोंग रिंपोछे के साथ विचार विमर्श



(बायें से दायें)सुदर्शन जी, कर्मा छोफेल जी इन्द्रेश कुमार जी



तिब्बत को लेकर बनानी होगी रणनीति (बायें से दायें) दिनेश चन्द्र जी, हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी और श्री सुदर्शन जी



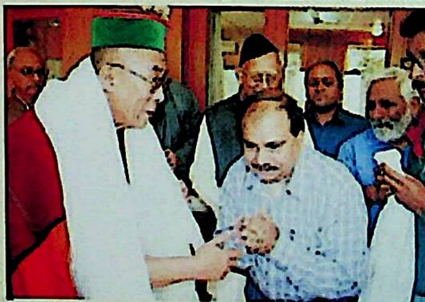
राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा (बायें से दायें) डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री, डा सुदेश गर्ग, सुनील मनोचा और डा. मन्त्रिणी प्रसाद



श्रीनिवास मूर्ति (हिमाचल प्रांत प्रचारक) : हम आपके साथ हैं।









हमारा अभिनंदन भी स्वीकारें, प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री , डा विवेक कुमार, महेश चड्ढा, अरविंद गर्ग



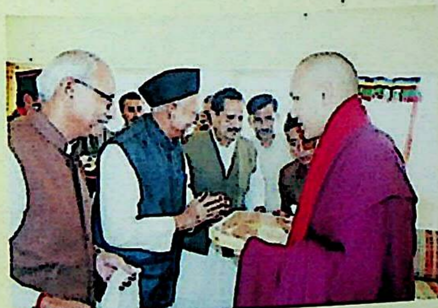
तिब्बती स्वतंत्रता की ओर बढेगी डगर



तिब्बत की चिंता हमारी चिंता है , प्रो. सामदोंग रिंपोछे को आश्वस्त करते प्रो. प्रेम कुमार धूमल (बायें) और दिनेश चन्द्र जी (दायें)।



तिब्बती बालाएं – हम भारत के आभारी हैं



भारत हर प्रकार की सहायता करेगा, कर्मापा लामा को आश्वासन (बायें से दायें) दिनेश चन्द्र जी, सुदर्शन जी, इन्द्रेश कुमार जी, प्रदीप जोशी जी



हिमाचल के प्रांत कार्यवाह श्री चेतराम जी कर्मापा लामा का अभिवादन करते हुए । साथ हैं दिनेश चन्द्र जी और इन्द्रेश कुमार जी



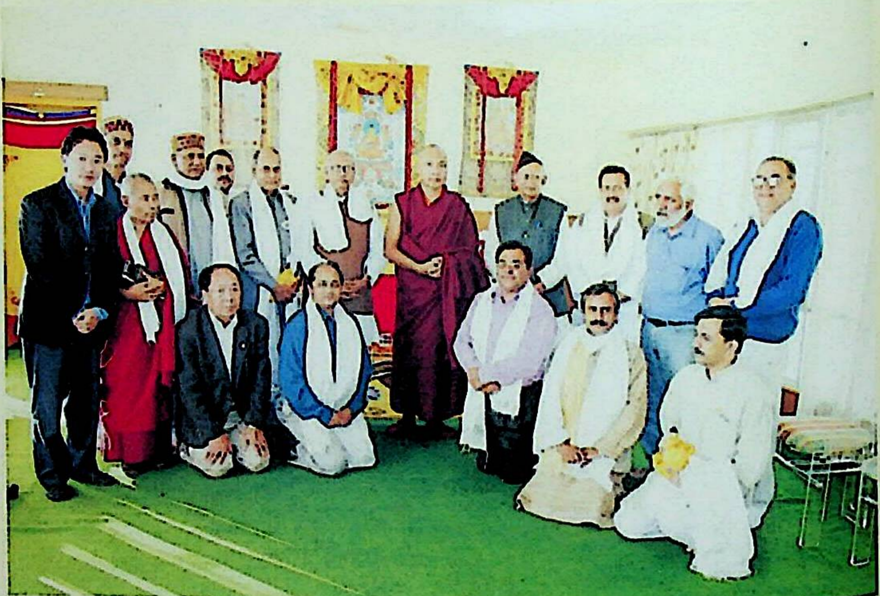
कर्मापा लामा – चीन की गुलामी से छूट कर आया हूं
भारत से सहायता पाने ।



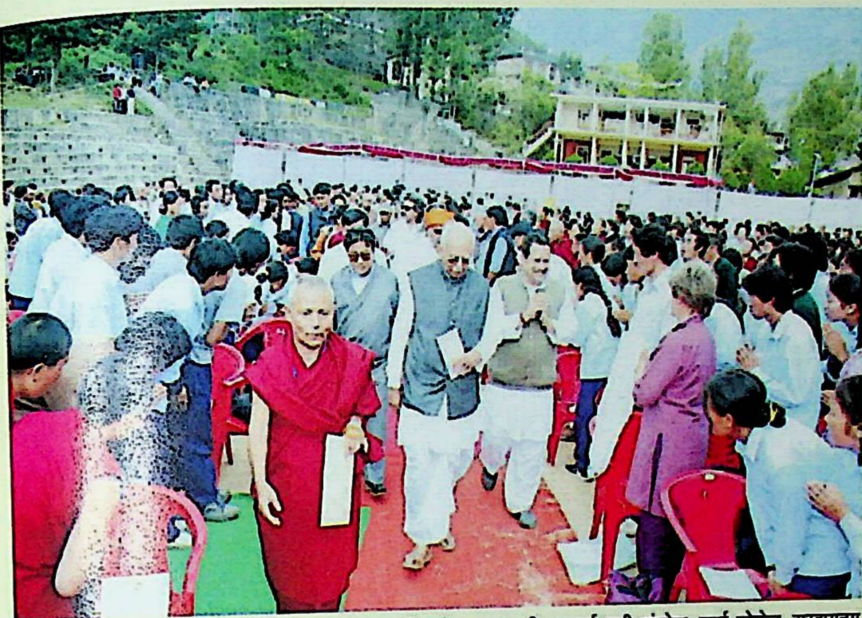
सुदर्शन जी– तिब्बत [illegible] लंबी है ले[illegible] में जीतनी ही होगी



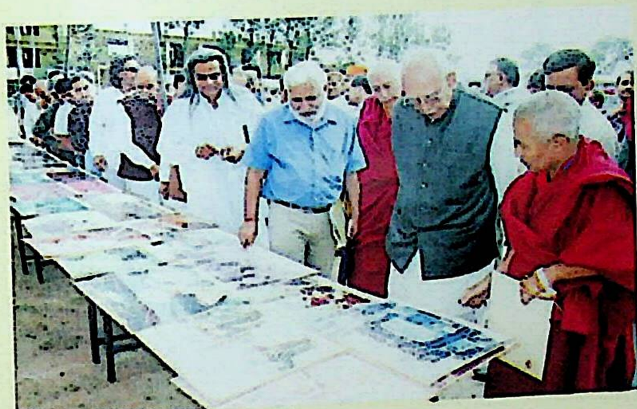
कर्मापा लामा के निवास के सामने सुदर्शन जी और प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी,
दूर पीछे खडे हैं श्रीनिवास मूर्ति जी



कर्मापा लामा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ– तिब्बत को लेकर भविष्य का संकल्प



तिब्बत सम्मेलन में भाग लेने पधारे सुदर्शन जी, साथ हैं इन्द्रेश कुमार जी, आचार्य यशी फुंछोक, कर्मा छोफेल, सुस्वागतम्



चीनियों ने कैसे किये तिब्बतियों पर अत्याचार, प्रदर्शनी देखते हुए सुदर्शन जी



तिब्बत का भविष्य हमारे हाथों में सुरक्षित है



तिब्बत सम्मेलन का उद्घाटन, द्वीप प्रज्वलित करते



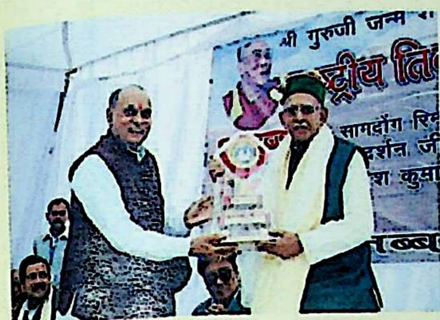
श्रीमती डोलमा गेरी ने श्री गुरुजी के आगे किये श्रद्धासुमन अर्पित



महंत सूर्यनाथ जी ने भी किया द्वीप प्रज्वलित



तिब्बत सम्मेलन में मंच के चंडीगढ के अध्यक्ष
श्री वी. रामस्वरूप जी, अमरज्योति जी का अभिवादन करते हुए



तिब्बत सम्मेलन में प्रो. प्रेमकुमार धूमल जी ने किया सुदर्शन जी का स्वागत



श्री महेश चड्ढा जी ने भेंट किया श्री सुदर्शन जी को खतक



तिब्बत सम्मेलन में श्री सुदर्शन जी– तिब्बत को बचाना ही होगा





तिब्बत सम्मेलन में उपस्थित जनसमुदाय एक और दृश्य

तिब्बत सम्मेलन में प्रो. सामदोंग रिंपोछे– हम भारतीयों के आभारी हैं



तिब्बत सम्मेलन में इन्द्रेश जी ने कहा– संकल्प लो [illegible]



तिब्बत सम्मेलन में श्री कर्मा छोफेल के शब्दों में छलका तिब्बत का दर्द



सुदर्शन जी ने मंच के कार्यकर्ताओं ने उनकी गतिविधियों की खोज खबर ली

स्वीकार करना ही अपने आप में अंतर्राष्ट्रीय जगत में यह प्रमाण होगा कि भारत ने तिब्बत को एक स्वतंत्र देश मान लिया है। लेकिन यह सब भविष्य की बातें थीं। भविष्य के गर्भ में क्या छिपा हुआ है, कौन जान सकता है? पीछे ल्हासा में चीनी सेना खून की होली खेल रही थी। निहत्थे तिब्बती चीनी बंदूकों का निवाला बन रहे थे। नारबूलिंगा पर चीन ने बम गिरा दिया था। बारखोर के इर्द-गिर्द तिब्बतियों की लाशों का ढेर पड़ा था। पोताला के नीचे हाथें में तिब्बत का ध्वज लेकर तिब्बती सोए हुए थे। अब वे कभी नहीं उठेंगे। वे दलाईलामा के लिए, तिब्बत के लिए, बुद्ध के लिए लड़ते हुए शहीद हो गए थे।

उधर दलाईलामा का काफिला 'चार नदियाँ, छः श्रृंखलाएं, के स्वतंत्रता सेनानियों की देखरेख में आगे बढ़ रहा था। हिमालय को पार करके उस भू की रज लेने के लिए यहां धम्मं शरणं गच्छामि के मंत्र गूंज रहे थे। स्वतंत्रता सैनिक चौंक्कने भी थे और उनकी आँखों में आँसू भी थे। वे दूर से परम पावन को आँख भरकर देख भी लेते थे और फिर गर्दन नीची करके रोने भी लगते थे। इतिहास इतना क्रूर भी हो सकता है शायद इसकी किसी ने कल्पना नहीं की होगी। परंतु यह काफिला रूक नहीं सकता था। क्योंकि दाएं-बाएं आगे पीछे सब जगह चीनी ड्रैगन फुंकार रहा था। वह तिब्बत को लील लेना चाहता था और उसके लिए जरूरी था कि दलाईलामा को लील लिया जाए। तिब्बती जानते थे दलाईलामा बच जाते हैं तो तिब्बत अपने आप बच जाएगा। दलाईलामा तिब्बत की राष्ट्रीयता के जीवंत प्रतीक हैं।

दलाईलामा की इस यात्रा की खबरें छन-छन कर भारत में भी पहुँच रही थीं। तिब्बत की वेदना भारत की अपनी वेदना थी। चीन की यह तिब्बत पर चोट नहीं थी बल्कि महात्मा बुद्ध पर चोट थी। कभी हजारों साल पहले आचार्य पद्मसंभव, आचार्य कमलशील, आचार्य दीपंकर अतिशा महात्मा बुद्ध के वचन लेकर तिब्बत के पठार पर गए थे। तिब्बत के लोगों ने इन आचार्यों पर विश्वास किया था और बुद्ध वचनों को आत्मसात कर लिया था। त्रिपिटिक को उन्होंने इच्छानुसार बदल दिए जाने वाले अंकुश उत्तरीय की तरह धारण नहीं किया था बल्कि वे उनके मांस और मज्जा का अंग बन गए थे। एक दृश्य था जब भारतीय आचार्य पर्वतों के उत्तुंग शिखिरों को लांघते हुए तिब्बत की ओर जा रहे थे। तिब्बत के लोगों के मन में, उस लोक को लेकर, उठने वाले प्रश्नों का उत्तर देने के लिए। आज शायद इतिहास अपने आप को दोहरा रहा था। तिब्बत के धर्मगुरु

जिन्हें महात्मा बुद्ध का अवतार भी माना जाता है, अपने कुछ प्रश्नों का उत्तर पाने के लिए तिब्बत के पठार से नीचे उतरकर भारत की ओर आ रहे थे। लेकिन इस बार उनके प्रश्न ''उस लोक'' से ताल्लुक नहीं रखते थे बल्कि ''इस लोक'' से ही ताल्लुक रखते थे। ये प्रश्न चीन द्वारा तिब्बत को हड़प लेने के बारे में थे।

लेकिन दलाईलामा के मन में एक चिंता समाई हुई थी। उनके इन प्रश्नों का उत्तर भारत में कौन देगा? क्या पंडित नेहरू देंगे? शायद नहीं। क्योंकि उन्होंने तो १९५६ में ही इस प्रश्न का उत्तर दे दिया था। दलाईलामा महात्मा बुद्ध की २५००वीं जयंती में भाग लेने के लिए भारत आए हुए थे। चीन के तेज नाखून तिब्बत की देह पर यत्र तत्र सर्वत्र गड़ रहे थे। सारा तिब्बत लहू लुहान हो रहा था। दलाईलामा ने पंडित नेहरू से पूछा- क्या आप मुझे शरण देंगे? पंडित नेहरू ने शरण तो नहीं दी परंतु उनका यह प्रश्न चीन के प्रधानमंत्री चाऊ--एन-लाई तक अवश्य पहुँचा दिया। अब तीन साल बाद भारत की ओर आ रहे दलाईलामा के मन में यही सब उमड़-घुमड़ रहा था। भारत में उनके प्रश्नों के उत्तर कौन देगा? भारत में शरण मिलने को लेकर दलाईलामा के मन में कोई दुविधा नहीं थी। क्योंकि इस बार शरण पंडित नेहरू नहीं देंगे बल्कि भारत की जनता देगी। परंतु दलाई लामा के प्रश्नों का उत्तर कौन देगा? दलाईलामा का काफिला धीरे-धीरे अरुणाचल प्रदेश की ओर बढ़ रहा था। इसी अरुणाचल प्रदेश में कभी छठे दलाईलामा ने जन्म लिया था।

दलाईलामा को अपने प्रश्नों का उत्तर मिला। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सर संघचालक श्री गुरुजी ने दलाईलामा के भारत आगमन पर पांचजन्य में एक लंबा आलेख लिखा। जिसको चीन तिब्बत की मुक्ति कह रहा है वह उसकी मुक्ति नहीं बल्कि उसकी गुलामी है। श्रीगुरुजी ने तो एक और सुझाव भी दिया। रूस को तिब्बत पर चीनी आधिपत्य का प्रतिरोध करना चाहिए। इससे विश्व राजनीति के समीकरण बदलेंगे। उन्होंने रूस को भी चेताया कि भविष्य में चीन रूस पर भी आक्रमण कर सकता है। भारत पर चीन आक्रमण करेगा इसकी सूचना हिमालय से आने वाली हवाओं में तैर रही थी। इसे सारा भारत सुन रहा था। इसे श्रीगुरु जी सुन रहे थे। नहीं सुन रहे थे तो पंडित नेहरू।

तिब्बत की वेदना श्रीगुरुजी के सीने में अंतिम क्षणों तक विद्यमान रही। मृत्यु से पूर्व कुछ महीनों तक भी। वे कहा करते थे- चीन ने भारत के साथ

विश्वासघात नहीं किया क्योंकि भारत को चीन पर कभी विश्वास था ही नहीं । विश्वासघात तो भारत ने तिब्बत के साथ किया है क्योंकि तिब्बत को भारत पर ही विश्वास था। श्रीगुरु जी का कहना था कि इस विश्वासघात का प्रायश्चित भारत को ही करना होगा । दलाईलामा अरुणाचल से उतरकर हिमालय के दूसरे छोर हिमाचल तक पहुंच चुके थे। इस बीच अनेक वर्ष बीत गए । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ श्रीगुरुजी के नेतृत्व में तिब्बत के समर्थन में अग्रिम पंक्तियों में खड़ा रहा। यहां तक कि उसने प्रस्ताव पारित कर इतना तक कहा कि तिब्बत की निर्वासित सरकार को मान्यता दे देनी चाहिए। संघ के एक स्वयंसेवक श्री श्रीचंद गोयल ने तो तिब्बत की निर्वासित सरकार को मान्यता देने के लिए लोकसभा में बाकायदा प्रस्तुत कर दिया था। दलाईलामा हिमाचल के एक कोने में बैठे थे लेकिन तिब्बत को लेकर संघ के दर्द को वे भी अच्छी तरह समझ रहे थे। कम से कम भारत की जनता तिब्बतियों के साथ थी।

कई साल पहले कालांतर में श्री गुरुजी का व्यास पीठ संभालने वाले प्रो० राजेन्द्र सिंह धर्मशाला में दलाईलामा को मिलने आए थे। दलाईलामा को भारत में आए हुए दशकों हो गए थे। चीन का वैश्विक प्रभाव बढ़ता जा रहा था। १९६२ में भारत पराजित तो हो ही चुका था। अमेरिका का निक्सन भी इसी बीच चीन हो आया था। बकौल पालदेन ग्याछो जो उस समय चीन की जेल में बंद थे, जेल के अंदर चीनी रक्षकों ने प्रसन्नता से नृत्य करते हुए तिब्बती स्वतंत्रता सेनानियों से कहा 'जिसके बलबूते पर तुम नाच रहे थे उस अमेरिका का निक्सन कुत्ते की तरह दुम दबाकर बीजिंग में हाजिर हुआ है।' ऐसे ही जुमले चीनी रक्षकों ने तब कहे थे जब १९६२ में भारत के हारने की खबरें इधर-उधर से जेल के अंदर पहुंचनी शुरू हो गई थी। गंगा और ब्रह्मपुत्र में बहुत पानी बह चुका था। सेरा, ड्रेपुंग और गांदेन की धर्म ध्वजाएं भू लुंठित हो चुकी थी। महात्मा बुद्ध की बहुमूल्य मूर्तियाँ या तो खंड-खंड हो चुकी थीं या फिर उनको गलाकर बाजार में बेचा जा चुका था। दलाईलामा बेचैन थे। उनका प्रश्न अभी भी अनुत्तरित था। प्रो० राजेन्द्र सिंह के मिलने पर उनको एक बार फिर लगा होगा कि कभी न कभी इस प्रश्न का उत्तर अवश्य मिलेगा। यह उत्तर भारत ही देगा। प्रो० राजेन्द्र सिंह मानो इसका आश्वासन दे रहे हों।

और अब श्रीगुरुजी का जन्मशताब्दी वर्ष है। गुरुजी आज से १०० साल पहले पैदा हुए थे। इस ग्रह को छोड़े हुए भी उन्हें ३५ वर्ष हो गए हैं। परंतु

श्रीगुरुजी मरकर भी जिंदा हैं। तिब्बत के पठारों से उतर रहे दलाईलामा को कहीं न कहीं भारत में ऐसे महापुरूष की तलाश रही होगी जो मरकर भी जिंदा हो। तिब्बत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नीति के केन्द्र में रहा है। इसी जन्मशताब्दी वर्ष में यदि श्री गुरुजी व्यास पीठ पर बैठे श्री सुदर्शन जी धर्मशाला जाकर दलाईलामा से न मिलते तो क्या जन्मशताब्दी वर्ष पूरा हो सकता था? आज सुदर्शन जी दलाईलामा को ही मिलने के लिए धर्मशाला पहुँचे थे। तिब्बत को लेकर श्रीगुरुजी के समय से अभिव्यक्त हो रही जनभावना का प्रतिनिधित्व संघ ने हर स्तर पर किया था १९६२ में जब चीन ने भारत पर आक्रमण कर दिया था तब तो दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में लाखों-लाखों स्वयंसेवकों को संबोधित करते हुए श्रीगुरुजी ने तिब्बत मुक्ति का आवाह्न किया था और भारत सरकार से गुजारिश की थी कि तिबबत की निर्वासित सरकार को मान्यता प्रदान की जाए। उसके बहुत वर्षों बाद श्री सुदर्शन जी ने निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे को नागपुर में संघ के विजयदशमी कार्यक्रम की अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया था । प्रो. सामदोंग रिम्पोछे को दिया गया यह निमंत्रण ही प्रकारांतर से भारतीय जनता द्वारा निर्वासित तिब्बती सरकार को मान्यता का प्रतीक था। प्रो. रिम्पोछे इस अवसर पर अभिभूत थे। धर्मशाला में भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के सम्मेलन के अवसर पर जब सुदर्शन जी पधारे तो उनका स्वागत करने वालों में सबसे पहले प्रो. रिम्पोछे ही उपस्थित थे। यह किसी अहसान का बदला नहीं था । एक समान सांस्कृतिक प्रवाह से ओत-प्रोत दो देशों के प्रतिनिधियों का मर्मस्पर्शी मिलन था। उसके बाद सुदर्शन जी परमपावन दलाईलामा से मुलाकात करने के लिए उनके निवास स्थान पर गए। दलाईलामा जी सुदर्शन जी का स्वागत करने के लिए बाहर ही उपस्थित थे। सुदर्शन जी ने उन्हें हिमाचल की टोपी पहनाई । दलाईलामा जी ने सुदर्शन जी को तिब्बत की पावनता तथा आतिथ्य का प्रतीक खतक भेंट किया। इस रेशमी उत्तरीय से मानो श्रीगुरु जी के समय से तिब्बत के साथ संघ का जो हिमालयी संबंध जुड़ गया था, उसकी पुनः पुष्टि की । सुदर्शन जी शायद पहले सरसंघचालक थे जिन्होंने तिब्बत की समस्या पर भिन्न दृष्टिकोणों से दलाईलामा से लंबी वार्ता की। उन्होंने परमपावन को श्री गुरुजी जन्मशताब्दी के अवसर पर प्रकाशित संघ से संबंधित साहित्य भेंट किया। इस अवसर पर तिब्बती स्वतंत्रता के इस प्रवाह हो गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हिमालय

परिवार के संयोजक इन्द्रेश कुमार जी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर क्षेत्रीय प्रचारक श्री दिनेश कुमार जी, प्रांत प्रचारक श्री श्रीनिवास मूर्ति जी, प्रांतकार्यवाह श्री चेतराम जी और हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल भी उपस्थित थे। उनकी उपस्थिति जमीनी स्तर पर तिब्बत को समर्थन की प्रतीक थी। दूसरे दिन अखबारों ने लिखा कि दलाईलामा और सुदर्शन जी की इस ऐतिहासिक भेंट ने तिब्बत के प्रश्न को एक नया आयाम दिया है।

दशम अध्याय

महत्वपूर्ण पत्र

(तिब्बत के प्रश्न पर और भारत चीन के संबंधों पर अनेक प्रमुख व्यक्तियों के भारत सरकार को लिखे गए पत्र उपलब्ध होते हैं। इनमें से सरदार पटेल द्वारा पंडित जवाहर लाल नेहरू को तिब्बत पर चीनी कब्जे से पूर्व इसकी आशंका जताते हुए नेहरू को लिखा गया पत्र अत्यंत प्रसिद्ध है, जिसकी यत्र तत्र चर्चा भी होती रहती है। इसी प्रकार का एक पत्र राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सहसंपर्क प्रमुख श्री इंद्रेश कुमार ने तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को जून २००३ में उनकी चीन यात्रा से पूर्व लिखा था। इस अध्याय में उनके इस पत्र समेत प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को, चीनी राष्ट्रपति हू–जिन–ताओ की २० नवंबर २००६ को होने वाली भारत यात्रा के अवसर पर लिखा गया उनका दूसरा पत्र और महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर के कुलपति प्रो० मोहन लाल छीपा का इसी विषय पर पत्र यथारूप दिया गया है। –संपादक)

(क) इन्द्रेश जी का श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को लिखा गया पत्र

आदरणीय श्री अटल जी

सादर प्रणाम ।

आप द्वारा देश को दिये गये अभी तक के नेतृत्व का मूल्यांकन करने पर अनेक सफलताओं का उल्लेख किया जा सकता है। वैश्विक कूटनीति में भारत ने अपनी भूमिका के कारण एक अलग पहचान ही नहीं बनाई है बल्कि एक

स्वाभिमानी राष्ट्र के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया है। परंतु अभी भी अनेक कठिन परिक्षाओं को उत्तीर्ण करना शेष है और उसी में एक अग्नि परीक्षा आपकी चीन यात्रा भी है। आप २२ जून से चीन यात्रा पर जा रहे हैं। चीन कैसा दोस्त या दुश्मन है, आप भली-भाँति जानते हैं।

सन् १९४९ में माओ द्वारा सत्ता संभालते ही तिब्बत में चीन की प्रत्यक्ष दखलंदाजी बढ़ी और अत्यंत चतुराई से सामान्य दिखने वाली कार्यवाहियाँ करते-करते उसने तिब्बत में सेना बिठाई और ल्हासा को घेर लिया। ल्हासा चीन को समझ नहीं सका यह उसकी विवशता थी या कमजोरी? परंतु यह सत्य है कि सन् १९५९ में पू. दलाई लामा जी को ल्हासा (तिब्बत) छोड़कर कुछ हजार तिब्बती शरणार्थियों के साथ भारत में शरण लेने हेतु चुपचाप छुपकर तिब्बत से प्रस्थान करना पड़ा। भारत ने अपना दायित्व निभाते हुए उन्हें शरण देकर एक महत्वपूर्ण कार्य किया।

पं. नेहरू की अनेक गलतियों में यह भी एक भारी गलती थी कि उन्होंने तिब्बत को चीन का भू-भाग स्वीकार कर लिया। कहते हैं आम आदमी गलती करे तो उसकी सजा समाज व सदियों को नहीं भुगतनी पड़ती है परंतु यदि बड़ा व्यक्ति गलती करे तो उसकी सजा सदियों तक समाज को भुगतनी पड़ती है। यह भी उसी प्रकार की गलती थी। हिन्दी चीनी भाई-भाई का नारा, चाऊ-माओ की भारत यात्रा, १९५४ में आठ वर्ष के लिए किया गया पंचशील समझौता आदि में भारतीय नेतृत्व इतना भ्रमित हो गया था कि सत्य को समझना तो दूर उसने चीनी षड्यंत्र को ही आंखों से ओझल कर दिया। परिणाम निकला सन् १९६२ में भारतीय सीमाओं पर चीनी आक्रमण। इस आक्रमण के बारे में पू. गुरुजी (श्री माधव राव सदाशिव गोलवलकर), आपने एवं अनेकनेताओं ने चीन की दादागिरी कितनी क्रूर व भयानक है, इसको चेतावनी के रूप में अनेकों बार भारत की जनता व वैश्विक ताकतों को बताया है।

कैलाश मानसरोवर पराया हो गया। भाई व पड़ोसी का घर जो अपना था बेगाना हो गया है। तिब्बती नसल को समाप्त करने की साजिश के तहत २०० लाख चीनियों को सन् २०२० तक तिब्बत में बसाने की योजना चल रही है। तिब्बती कन्याओं के विवाह जोर जबरदस्ती अथवा बहला फुसला कर चीनी युवकों से करवाये जा रहे हैं। हिमालय में अनेक सैनिक छावनियाँ व हवाई अड्डों के साथ-साथ मिसाईल हमले तक के केन्द्र स्थापित किये जा चुके हैं। सड़कों का जाल

बिछाया जा चुका है और अब बहुत अधिक धन का व्यय करते हुए रेलव लाईन ल्हासा तक पहुँचाई जा रही है ताकि बड़े आयुध व सामान को भारतीय सीमाओं तक सीधे लाया जा सके। पर्यावरण नष्ट किया जा रहा है। तिब्बत को विकसित करने के नाम पर तिब्बती बौद्ध संस्कृति के स्थलों को धीरे-धीरे समाप्त किया जा रहा है। पू. दलाईलामा जी का चित्र घर, दुकान में रखने तथा गले में धारण करने पर प्रतिबंध हैं। तिब्बत भारत के लिए मित्रवत् ही नहीं रहा बल्कि ''भारत गुरु है तिब्बत शिष्य है'' इस बात को पू. दलाईलामा जी व सारा तिब्बती समाज दिल से मानता है। चीन द्वारा सरकारी तौर पर प्रकाशित मानचित्र जिसमें बीजिंग (पेकिंग) से एक चीनी बाजू निकलता है जिसमें दिखाया गया है तिब्बत हथेली है तथा उंगलियाँ नेपाल, भूटान, लद्दाख, सिक्किम व अरुणाचल हैं। यह मानचित्र चीन के कुत्सित इरादों को स्पष्ट उद्घोषित करता है। अरब सागर में ग्वादर पोर्ट को सैनिक अड्डे का रूप दे दिया गया है। म्यांमार, चीन व पाक विश्व राजनीति में मित्र देश माने जाते हैं। भारत को अस्थिर करने में चीन पाकिस्तान को हर संभव मदद कर रहा है। पाक व चीन हमारी हजारों वर्ग कि.मी. भूमि पर बलात् कब्जा किये हुये हैं।

आप ये सब बातें जानते भी हैं, समझते भी हैं। आपको यह सब बताना छोटा मुँह बड़ी बात है। परंतु मन कहता है कि राष्ट्र जीवन के हर महत्वपूर्ण मोड़ पर अपना कर्त्तव्य करने से चूकना नहीं चाहिए। आपकी चीन यात्रा पर विश्व, विशेष रूप से एशिया महाद्वीप, भारतीय समाज और उसमें भी विशेष रूप से हिमालयी निवासी व निर्वासित तिब्बत समुदाय आशा की नजर गड़ाये है। शंकित व चिंतित भी है और विश्वास भी है इस दुविधा की भूमिका में देश खड़ा है। चीनी नेताओं से मिलने पर व्यापार (आर्थिक), सामरिक (आतंकवाद, घुसपैठ आदि), सीमा समेत सांस्कृतिक, खेलकूद, चिकित्सा आदि अनेक क्षेत्रों पर वार्ताएं होंगी और महत्वपूर्ण समझौते भी होंगे। कुछ आवश्यक बातों की ओर संकेत कर रहा हूँ।

(१) विश्व जानता है कि कैलाश मानसरोवर सभी पंथों की साधना स्थली होने के कारण आध्यात्मिकता का केन्द्र है। यह कभी भी चीन का न था न होना चाहिए। परंतु आज चीन के कब्जे में है। यह कब्जा विश्व शांति की साधना स्थली के साथ बलात्कार है। कम से कम चीन कैलाश मानसरोवर से अपनी सेनाएं हटाये तथा वहाँ की यात्रा और वहाँ पर साधना की पूर्ण स्वतंत्रता कायम हो। उस क्षेत्र को शांति क्षेत्र घोषित करवा

उसे भारतीय संरक्षण में लिया जावे। हमें कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए चीन से अनुमति लेनी पड़ती है, यह शर्मनाक दर्द भी समाप्त हो जावेगा।

(२) चीन से वार्ता को श्रद्धा अथवा विश्वास में परिवर्तित नहीं किया जाना चाहिए। दो देशों की वार्ताएं सदैव राजनैति व कूटनैतिक होती हैं । इसलिए इसी स्तर पर रहकर परंतु सावधानीपूर्वक बातचीत व समझौते करें। अपने व हिमालयी देशों के हितों के हम संरक्षक हैं यह संदेश प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष झलकना चाहिए।

(३) तिब्बत की निर्वासित सरकार के प्रतिनिधि व चीन के बीच वार्तालाप चल रहा है। पू. दलाईलामा जी ने मध्यम मार्ग (Middle Path) चुना है ताकि तिब्बत समस्या का समाधान निकले । हमें उसके लिए दबाव बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। बहुद्देशीय लाभ होगा।

(क) तिब्बती अपनी मातृभूमि (देश) लौट सकेंगे।

(ख) एक बलशाली, जोर–जबरदस्ती से पड़ोसी बना चीन हमारी सीमाओं से बहुत दूर चला जावेगा अर्थात् हिमालय की पीड़ा और हमारी असुरक्षा दूर होगी।

(ग) चीन जो पाक को प्रत्यक्ष मदद कर भारत को अशांत बनाने का कार्य करता रहता है वह पाक को भी मदद नहीं कर पायेगा।

(घ) हमारा विश्व के साथ संपर्क एवं व्यापार हेतु धरती मार्ग खुलेगा।

(ङ) तिब्बती शरणार्थियों पर होने वाला व्यय उनके अथवा अपने देश के विकास पर व्यय होगा।

(च) चीन के तिब्बत हड़पने व हिमालय में अड्डे बनाने से पूर्व लद्दाख से अरूणाचल तक की अघोषित सीमाओं पर केवल ७५ से १०० तक पुलिस वाले थे। देश की कानून व्यवस्था, शांति, अखण्डता सुरक्षित थी तथा व्यय भी बहुत कम था। परंतु आज हजारों लाखों में सेना है, प्रतिदिन का ५ से ७ करोड़ रु० का व्यय है और देश की एकता व अखण्डता पूरी तरह से खतरे में है सीमा सुरक्षा के व्यय में भारी बचत होगी।

(४) चीन विभिन्न समझौतों द्वारा हमारी मण्डी के उत्पादन व माल को चौपट न कर दे और अपने माल की बिक्री के नानाविध तौर तरीकों की आड़

में चीन गुप्तचरी व अन्य प्रकार के अड्डे न बनाना शुरू कर दे, यह सावधानी रखना जरूरी है।

सभी आशा में प्रतीक्षारत हैं। आप यशस्वी बनें, राष्ट्र समर्थवान हो, इन शुभकामनाओं के साथ –

आपका

(इन्द्रेश कुमार)

संस्थापक संयोजक – हिमालय परिवार

संस्थापक संरक्षक – भारत–तिब्बत सहयोग मंच

हिमालय परिवार

(१६८१, मेन बाजार, पहाड़गंज (चित्रगुप्त मंदिर के सामने), नई दिल्ली –५५)

केन्द्रीय संयोजक
इन्द्रेश कुमार

आदरणीय श्री मनमोहन सिंह जी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार,
नई दिल्ली

सादर प्रणाम!

आपको एक महान देश के प्रधानमंत्री के रूप में नेतृत्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। आज भारत व एशिया का ही नहीं बल्कि विश्व का बहुत बड़ा जनमत भारत को विश्व पटल पर एक शक्तिशाली नेतृत्व के रूप में देखना चाहता है। भारत के अध्यात्म में विश्व शांति, बंधुत्व व विकास के बीज विद्यमान है। परंतु सन् १९४७ के स्वतंत्रता के अवसर पर दुर्भाग्य पूर्ण विभाजन से लेकर आज तक हम एक कमजोर नेतृत्व वाला विभाजित सा देश व समाज दिखाई दे रहे हैं। अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय संकटों के अवसर पर जाति, दल व पंथ (धर्म) से ऊपर उठकर हमने राष्ट्रीय व मानवीय अस्मिता से जुड़े अनेक मुद्दों जैसे– चीन से अपना भू–भाग खाली करवाना, पाक अधिकृत कश्मीर वापिस लेना, समान नागरिक संहिता, कश्मीर घाटी में विस्थापिताओं की वापसी, गऊ हत्या बंदी (गऊ संरक्षण एवं संवर्धन), अधिकांश यानि ९० प्रतिशत से अधिक मुस्लिम व ईसाई बंधु पूर्वज, परंपरा व वतन से भारतीय हैं न कि विदेशी (अल्पसंख्यक अवधारणा), आतंकवाद व आतंकवादी स्वतंत्रता, सम्मान, विकास व शांति का दुश्मन है तथा विदेशी इशारों पर नाचने वाला है उसे कुचलने के लिए सख्त कानून व कार्यवाही ही करना ताकि मुख्यधारा में भी लाया जा सके, भारत व भारतीय होने का स्वाभिमान, आरक्षण जो कि गरीब व पिछड़े को सम्मान व स्वावलंबन हेतु प्रावधान था उसका आज वोट बैंक के रूप में उपयोग कर समाज को बांटना व लड़वाना आदि–आदि पर समान मत व समाधान की नीति से

एकजुट भारत की छवि बननी चाहिए थी, वह नहीं बन रही है।

इस पत्र में एक विशेष प्रसंग पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। चीन के राष्ट्रपति श्री हू जिंताओ भारत की यात्रा पर आ रहे हैं। उन्होंने २० नवंबर की तिथि शायद इसलिए चुनी क्योंकि उस दिन चीन द्वारा भारत की हजारों वर्ग कि.मी. भूमि पर कब्जा कर लेने के पश्चात एक तरफा युद्ध विराम घोषित किया था। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए हमें इस विज़िट के लिए कोई अन्य तिथि सुझानी चाहिए थी। उदाहरण के लिए हम १४ नवंबर की तिथि सुझा सकते थे। यह दिन प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिवस होने साथ-साथ, इस दिन भारत के दोनों सदनों ने एकमत से एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित कर चीन से एक-एक इंच जमीन मुक्त करवाने का संकल्प लिया था। २० नवंबर चीन की विस्तारवादी कूटनीति का विजय का दिन है एवं हमारे विश्वास की पराजय का एवं कमजोर इच्छा शक्ति का दिन है।

चीन के राष्ट्रपति भारत आ रहे हैं। सामरिक, आर्थिक, सांस्कृतिक समझौतों के साथ-साथ सीमा विवाद का समाधान हो इस पर भी चर्चा होगी। यहाँ हमें एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि चीन ने कम्युनिज्म को पूरी तरह नकार कर पूंजीवाद का मार्ग अपना लिया है परंतु उसने अपने मूल साम्राज्यवादी, विस्तारवादी आचरण को नहीं बदला है और न ही उसमें संशोधन किया है। आज भी वह अक्साईचिन, अरूणाचल के कुछ भू-भाग व कैलाश मानसरोवर पर कब्जा जमाये है तथा पूरे अरूणाचल प्रदेश को अपना भू-भाग मानता है। उसका वह नक्शा जिसमें बीजिंग से एक चीनी बाजू निकलती है और उसका हाथ हिमालय पर रूक जाता है। हथेली पर तिब्बत तथा पांच ऊंगलियों में से प्रथम पर लद्दाख, दूसरी पर भूटान, तृतीय उंगली पर नेपाल, चौथी उंगली पर सिक्किम, पांचवी पर अरूणाचल लिखा है। आज आवश्यकता है कि हमें प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से कैलाश मानसरोवर सहित अन्य सभी चीन के अवैध कब्जे में भारतीय भू-भाग को चीन से खाली कराने की बात उठानी चाहिए। अगर हमने दावा करना ही बंद कर दिया तो सत्य पराजित अथवा गुलाम हो जायेगा। यह एक भारी अपराध होगा। हमें कैलाश मानसरोवर यात्रा के सभी मार्ग खोलने तथा यात्रा के योग्य बनाने की मांग करनी चाहिए तथा चीन ने अपनी जोर जबरदस्ती रखी सेना को वहां से हटाना चाहिए। इस सारे क्षेत्र को मुक्त करने के अति मानवीय कर्तव्य को निभाने हेतु चीन को बताना तथा उस पर दबाव बनाना चाहिए।

१९४९ में चीन ने नई रोशनी की घोषणा की परंतु उससे पूर्व अधिकांश मंगोलिया व मंचूरिया को वह हड़प चुका था और तिब्बत में पांव पसारने प्रारंभ कर दिये थे । हमने सन् १९५४ में पंचशील समझौता कर तिब्बत से भारतीय सेना, डाकघर आदि समेट लिए तथा तिब्बती जतना को साम्राज्यवादी चीन के रहमोकरम पर छोड़ दिया। उसने सेना व कूटनीति की सब चालें चल तिब्बत पर कब्जा कर लिया और हमने तिब्बत को चीन का भू-भाग मान एक मानवीय व राजनैतिक अपराध किया। अनेक दूरदृष्टा नेताओं में से एक उस समय के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय पूजनीय सरसंघचालक श्री गुरु जी (माधव सदाशिव राव गोलवलकर) ने सतत् कहा कि चीन पर भरोसा नहीं करना चाहिए, हिमालय पूर्णतया असुरक्षित हो जायेगा, खतरा उस ओर से है। परंतु इन राष्ट्रीय व मानवीय संकेतों को समझना तो दूर बल्कि तत्कालीन नेताओं और विशेष रूप से प्रधानमंत्री पं. नेहरू का आचरण अत्यन्त अशोभनीय रहा जिसका परिणाम निकला सन् १९६२ में चीन का भारत पर आक्रमण । सीमा पर सैनिक तैयारी तो बहुत दूर की बात हमारे सत्ताधारी नेता चीनी आक्रमण के बारे में देश को भी धोखे में रख रहे थे। पूजनीय दलाई लामा जी हजारों लाखों तिब्बतियों के साथ भारत में आज तक निर्वासित जीवन जी रहे हैं। तिब्बतियों ने भारत व विश्व में स्वतंत्र तिब्बत आंदोलन को जन्म दिया। भारत व विश्व की ताकतों की उदासीनता देखते हुए वर्तमान में पूजनीय दलाई लामा जी ने मध्यम मार्ग चुना है जिसमें उन्होंने मुख्य बात कही है कि तिब्बत को चीन का भू-भाग मान लिया जाए परंतु तिब्बत को पूर्ण स्वायत्तता अधिकारों सहित मिले और हजारों निर्वासित तिब्बती पूजनीय दलाई लामा जी के नेतृत्व में पुनः ल्हासा लौट सकें ताकि तिब्बत, तिब्बती समाज व संस्कृति को अक्षुण्ण बनाए रखा जा सके। परंतु चीन से मित्रता खरीदने की नीति के कारण हम सत्य को उठाने में संकोच व कमजोर पड़ रहे हैं। मित्रता समान शक्ति वालों में होती है। कमजोर की मित्रता उसे अपमान व गुलामी देती है। पूजनीय दलाईलामा जी व लाखों तिब्बती यह मानते हैं कि भारत गुरु है तिब्बत शिष्य है। भारत पूरी ताकत से खड़ा होगा। भारत लोकतंत्र व मानव स्वतंत्रता का पक्षधर है। फिर तिब्बत पर मौन क्यों? हमें सरकार व समाज के स्तर पर चीन के राष्ट्रपति से इस विषय को उठाना चाहिए।

चार पांच वर्ष पूर्व हिमाचल में सतलुज में भारी बाढ़ के कारण भयानक तबाही यानि जानमाल की हानि हुई थी। आज तक उसका कारण अस्पष्ट है। न तो ऊपर

भारी वर्षा हुई, न ही बादल फटा, न ही झीलों में अधिक पानी था जो बहकर आया और न ही भूस्खलन से जल रूका जो एक साथ बहुत सारा जल बाढ़ रूप में आया हो। आज भी एक संदेह कायम है कि चीन ने उस ओर कोई भूमिगत आणविक विस्फोट किया जिस कारण हिमालय के उस ओर की झीलों का जल उछला और भारी तबाही भारत को झेलनी पड़ी। अभी–अभी ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन ने डैम बनाने की घोषणा कर दी है। डैम का अर्थ है ब्रह्मपुत्र पर चीन का अधिकार बनाये रखना। चीन–भारत की मैत्री की बातें हो रही हैं। चीन ने संपूर्ण हिमालय में सड़कों का जाल बिछाकर छः से अधिक स्थानों पर प्रक्षेपास्त्र दागने के केन्द्र (मिसाईल अटैकसेन्टर) निर्माण कर लिये हैं। अनेक अस्त्र व शस्त्रागार भी बना लिए हैं। मित्रता, विकास व शांति की आड़ में चीन की इस तरह सामरिक तैयारी को भारत के नेताओं को समझने में कमजोर नहीं पड़ना चाहिए। यदि सरकार, राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक नेतृत्व व जनता को अंधेरे में रखकर चीन से समझौता करती है तो आपके दल, सरकार व देश को क्या मिलेगा? हमें सारे समाज को साथ लेकर एक शक्तिशाली संगठित देश के रूप में चीन से वार्ता करनी चाहिए न कि एक दल के रूप में।

तिब्बत में विकास के नाम पर रेलवे लाईन बिछाई जा चुकी है। सड़कें ताबड़तोड़ बन रही हैं। अन्य अनेक प्रकल्प भी विकसित किए जा रहे हैं। बीजिंग से ल्हासा, ल्हासा से काठमाण्डू, काठमाण्डू से ढाका तक भारत से होता हुआ व्यापार सड़क मार्ग बनाने की चर्चा चल रही है जो हमारी सुरक्षा व अखण्डता के लिए चुनौती है। तिब्बती व तिब्बती पहचान को नष्ट किया जा रहा है। आज विश्व में प्राचीन धरोहरों के संरक्षण के लिए कानून बन रहे हैं, धन का आवंटन हो रहा है तथा व्यवस्थायें निर्माण की जा रही हैं। लेकिन तिब्बत में इसके उल्ट हो रहा है। विकास के नाम पर सांस्कृतिक मौलिक पहचान की रक्षा होनी चाहिए। विश्व के सर्वाधिक छोटी आयु के बंदी पंचेन लामा के बारे में चीन जानकारी ही नहीं दे रहा और न ही किसी को पंचेन लामा को देखने व मिलने की अनुमति दे रहा है। फिर मानवाधिकारों की बातें करने वाले देश व संस्थायें चीन की इस क्रूरता पर चुप क्यों? हमें विकास के नाम पर अपनी व पड़ोसी देशों की स्वतंत्रता, सम्मान व संस्कृति की रक्षा को भी सुनिश्चित करने का विचार करना होगा। मौलिक रूप से सभी पड़ोसी देश भारतीय संस्कृति से जुड़े है।

आज चीन व भारत में आयात निर्यात है। चीन से हमें अनेक आधुनिक

इलेक्ट्रॉनिक उपकरण व अन्य वस्तुएं मिल रही हैं। हम भी दवाई, वस्त्र, स्टील, फल आदि अनेक वस्तुएँ चीन को बड़े पैमाने पर दे रहे हैं। दोनों महाशक्तियों में सरकार से लेकर समाज के स्तर पर मित्रतापूर्ण संबंध बनें व दृढ़ हों परंतु सम्मान, स्वतंत्रता, सुरक्षा व संस्कृति की शर्त पर नहीं। आज तक इतिहास चिल्ला-चिल्ला कर बोल रहा है कि चीन जो कुछ सामने दिखता है भीतर से वह विपरीत आचरण करता है। आगामी वर्ष सन् २००७ स्वतंत्रता संग्राम की १८५७ की महानक्रांति की, १५० वीं वर्षगांठ व सन् १९४७ की स्वतंत्रता की स्वतंत्रता प्राप्ति की ६०वीं वर्षगांठ का है। अत्यधिक संघर्ष व बलिदान की लंबी कालावधि का है। बहुत-बहुत मूल्य देकर स्वतंत्रता मिली है और आज भी बलिदानों की परंपरा के कारण हम अपनी स्वतंत्रता को बनाए हुए हैं। कवि ने कहा है -

आजादी का इतिहास कहीं पैसे से खेला जाता है,
यह शीश कटाने का सौदा नंगे सिर झेला जाता है।
आजादी का इतिहास कहीं काली स्याही लिख पाती है,
इसको लिखने के लिए खून की नदी बहाई जाती है।

शायर ने कहा है -

सारा लहू बदन का सर जमीं को पिला दिया,
वतन का कर्ज बहुत था सारे का सारा चुका दिया।

लेखक ने कहा है -

स्वतंत्रता, सुरक्षा व सम्मान के लिए रक्त बहाया जाता है,
खुशी व खुशहाली के लिए नैतिकता पूर्ण ढंग से पसीना बहाया जाता है,

''अतिथि देवो भवः'' की संस्कृति ''प्राणियों में सद्भावना हो'', ''विश्व का कल्याण हो, एकं सद् बिप्रा बहुधा वदन्ति'' की संस्कृति वाला देश कमजोर, चापलूस व कायर नही बल्कि स्वाभिमानी व शक्तिशाली दिखाई दे, इसका विश्वास चीनी राष्ट्रपति के प्रवास में झलकेगा इसी आशा से देश आपको निहार रहा है।

आपका

इन्द्रेश कुमार
अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य रा.स्व. संघ
मार्गदर्शक - माई हिन्दुस्थान
(राष्ट्रवादी मुस्लिम आंदोलन)

His Excellency,
President of the People's Republic of China

THROUGH : HIS EXCELLENCY, THE PRESIDENT OF INDIA, NEW DELHI

·Your Excellency,

India and China share similar physical geography and obligate identical environmental concerns, Indian environmentalists are deeply concerned about the state of the environment in China, Tibet and India and protection of wildlife.

The core issue of our many environmental concerns is the policy carried out by your Excellency's government in Tibet, that has a progressively negative impact not only on Tibet's fragile environment but also on the environment and the very livelihood of millions of people who depend on their survival on the river waters that originate from the roof of the world.

Your Excellency, it is needless for us to point out that the Tibetan plateau has a profound impact on the annual monsoon pattern of South Asia and is also the world's water tower and the source of ten of Asia's major rivers that feed about 47% of the earth's total human population.

It is with deep regret we point out that some of the major developmental activities in Tibet carried out by your government are contributing to global warming, rampant deforestation in Tibet and lead to the silting of the rivers that flow into South Asia and China itself, which is the contributory cause of the massive annual flooding in India, Bangladesh and China.

Unprecedented mining in Tibet and extensive road construction to cart away the minerals extracted there from are contrib-

uting to Himalayan glacial meltdown. One clear example is that of Pareechu River. Based on the available sources, it is quite clear that the natural dam formed in Tibet was the result of a huge landslide sometime in early 2004, blocking in natural flow of Pareechu in Tibet, a tributary of Sutlej River. This development caused death and destruction on the Indian side of Himalayas in 2000 and a great deal of concern in 2004.

There was a great uproar last year over Tibetan's use of animal pelts in their chupa (traditional dress). At a time when the world was appealing for increased wildlife protection, highlighting the fact that Indian tigers are vanishing from their reserves, it is unfortunate that the new tradition involving the use of animal fur and pelts to line and decorate the Tibetan chupa was quietly gaining strength in Tibet.

I appreciate His Holiness the Dalai Lama's appeal to Tibetans during the Kalachakra festival held in January 2006 in Amravati in Andhra Pradesh, India, to shun the use of animal products in their clothes and personal life.

The conservation of the Tibetan plateau not only helps Tibetan people themselves, neighbouring countries and wildlife, but also helps in protecting the earth's bilogoical wealth which is our common human heritage.

with regards,

Yours Sincerely

(Prof. M.L. Chhipa)

Dr. A.P.J. Abdul Kalam
His Excellency The President of India
Rashtrapati Bhawan, New Delhi

एकादशम अध्याय

सम्मेलन–मीडिया की दृष्टि में

दिव्य हिमाचल, धर्मशाला,

२६ अक्तूबर, २००६

१. सुदर्शन ने दलाईलामा से लिया आशीर्वाद

भारत–तिब्बत सहयोग मंच के दो दिवसीय सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे

उदयवीर पठानिया : धर्मशाला

भारत–तिब्बत सहयोग मंच के दो दिवसीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए आरएसएस के राष्ट्रीय सरसंघचालक सुदर्शन बुधवार को धर्मशाला पहुंच गए। वह करीब १२ बजे धर्मशाला पहुंचे। श्री सुदर्शन पहुंचने के तुरंत बाद महामहिम दलाईलामा के साथ शिष्टाचार भेंट करने उनके प्लेस मकलोडगंज पहुंचे। करीब एक घंटे तक चली मुलाकात के दौरान आरएसएस प्रमुख और महामहिम ने विभिन्न मसलों पर आपस में विचार–विमर्श किया। इस मुलाकात के दौरान विभिन्न भाजपा नेताओं और आरएसएस कार्यकर्ताओं के अलावा विपक्ष के नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल भी उनके साथ थे। बुधवार को श्री सुदर्शन के धर्मशाला पहुंचने पर उनके स्वागत में पूर्व केंद्रीय मंत्री शांता कुमार भी उपस्थित हुए। दिल्ली में बैठक होने की वजह से वह कुछ समय बाद ही आरएसएस प्रमुख से इजाजत लेकर दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

महामहिम दलाईलामा के साथ मुलाकात के दौरान श्री सुदर्शन ने उन्हें पूर्व सरसंघचालक गुरु गोलवलकर के जन्मशताब्दी समारोह के समापन उत्सव पर १८ फरवरी, २००७ को दिल्ली आने का न्योता दिया। इस पर महामहिम ने तिब्बती पर्व लोसर का हवाला देते हुए आने में असमर्थता जाहिर की, लेकिन नवंबर २००६ को काशी में होने वाले अंतर्राष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन में अपनी उपस्थिति को सुनिश्चित करने का आश्वासन देते हुए कहा कि वह इसमें विश्व शांति के लिए अवश्य पहुंचने का प्रयास करेंगे। इसके बाद सर संघचालक ने करमापा लामा के साथ भी मुलाकात की। दोनों मौकों पर भारत–तिब्बत सहयोग मंच के डा. कुलदीप अग्निहोत्री, इंद्रेश कुमार, सुनील मनोचा, संजय शर्मा भी उनके अंग संग रहे। करमापा से भेंट करने के बाद श्री सुदर्शन ने चामुंडा मां के मंदिर में जाकर शीश नवाया।

२. तिब्बत मसले पर दलाईलामा को समर्थन

भारत के तिब्बत के प्रति रुख में बदलाव के आसार

उदयवीर पठानिया : धर्मशाला

अमरीका के कांग्रेशनल अवार्ड और कनाडा में सिटीजनशिप का सम्मान हासिल कर हाल ही में विदेश दौरे से लौटे महामहिम दलाईलामा को अब भारत के सबसे बड़े हिंदू संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का भी जबरदस्त समर्थन हासिल हो गया है। विश्व मंच पर तिब्बत के शीर्ष बौद्ध धर्म गुरु को आरएसएस का प्रचंड समर्थन मिलने से अब भारत के तिब्बत के प्रति स्टैंड में देर–सवेर बदलने के आसार की भी ठोस पृष्ठभूमि तैयार हो गई है। द्वितीय सरसंघचालक गुरु गोलवलकर के जन्मशताब्दी वर्ष के दौरान उनके ही तिब्बत पर कड़े संज्ञानों की बदौलत आरएसएस के वर्तमान सर संघचालक के. सुदर्शन ने आरएसएस गुरु गोलवलकर के नक्शे कदम पर चलते हुए कहा कि पूर्व में श्री गोलवलकर के चेताने पर भी तत्कालीन सरकार के मुखिया जवाहर लाल नेहरू ने तिब्बत को चीन का हिस्सा करार देकर भारत को खतरे में धकेला था। स्पष्टवादिता का परिचय देते हुए उन्होंने मात्र एक प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को तिब्बत मसले पर कड़ा संज्ञान लेने का श्रेय देते हुए बाकी सरकारों में शामिल वाजपेयी सरकार का बिना नाम लिए तिब्बत और देश की सुरक्षा के लिए फेल करार दिया। भारत–तिब्बत सहयोग मंच

के राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने पहुंचे सर संघचालक और महामहिम दलाईलामा की वार्ता में भी ऐसे कई मौके आए जब मामले की गंभीरता चरम सीमा पर पहुंच गई। बैठक में मौजूद सूत्रों के मुताबिक चीन की भाषा में तिब्बत को चीन का अंग होने का राग अलापने के भारतीय सरोकारों पर महामहिम भी दुखित थे। सूत्रों के मुताबिक उन्होंने कहा कि तथ्य व इतिहास के आधार पर अब भारत सहित पूरे विश्व समुदाय को तिब्बत को समर्थन देने में एकजुट होना चाहिए। महामहिम से भेंट के बाद सुदर्शन ने भी अपने कड़े रूख को पत्रकारों के समक्ष जाहिर करने में पूरी बेबाकी के साथ अपना मत स्पष्ट किया। तिब्बत में चीन की मौजूदगी से भारत के लिए बढ़ रहे खतरे और नक्सलवाद पर उन्होंने कहा कि जब तक तिब्बत मसले का हल नहीं होता तब तक सुरक्षा पर प्रश्नचिन्ह लगा रहेगा। धर्मशाला में सरसंघचालक की मौजूदगी और महामहिम से भेंट के बाद उभरे समीकरण निर्वासित तिब्बतियों के लिए नया आत्मविश्वास जगाने वाले रहे। सर संघचालक की देश की सुरक्षा के प्रति संजीदगी से तिब्बत समुदाय को भी सबसे बड़े हिंदू संगठन के समर्थन से अपने देश की आजादी या स्वायत्तता मिलने की आस को बल मिला है।

२७ अक्तूबर, २००६

३. चीन की भारत पर बुरी नजर

सुदर्शन बोले, आदर्शों की खातिर देश को नहीं बनने देंगे बलि का बकरा

कार्यालय संवाददाता, धर्मशाला

चीन ने तिब्बत को तो हजम कर ही लिया है और अब उसकी वक्र दृष्टि भारत पर है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक के.एस.सुदर्शन ने भारत-तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय सम्मेलन के बाद तिब्बत चिल्ड्रन विलेज के प्रांगण में आयोजित एक समारोह के दौरान विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि अब वह वक्त नहीं रहा कि आदर्श की खातिर देश को बलि का बकरा बना दिया जाए। उन्होंने अपने हमले जारी रखते हुए कहा कि सज्जन की भूमिका को हमेशा बनाए रखने से दुश्मन अपनी सोच नहीं बदलता, अगर भारत सरकार सज्जनता के आलम में ही रहती है, तो चीन अपने घातक इरादों को त्यागने वाला

नहीं है। उन्होंने सरकार को चेताते हुए कहा कि अगर युद्ध से बचना है, तो उसे युद्ध की तैयारी भी रखनी होगी।

स्वामी विवेकानंद के एक वक्तव्य कि 'चीन सोया हुआ भस्मासुर है और जिस दिन वह जागेगा तब भयंकर नरसंहार की वजह बनेगा' का हवाला देते हुए कहा कि पूर्व की केंद्र सरकार की नालायकी की बदौलत मौजूदा सरकार ने भी कोई सबक नहीं सीखा है। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि शत्रु की चालों के अनुरूप खुद को युद्ध के लिए तैयार रखा जाए। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि मौजूदा हालातों में दुश्मन अगर एक थप्पड़ मारने की सोच रखता है, तो जरूरी है कि उस पर दनादन दस थप्पड़ चस्पां कर दिए जाएं। बौद्ध व हिंदू संस्कृति के विभिन्न तर्कों और उदाहरणों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि अब अपने देश व समाज की शांति के लिए ऐसे कदम उठाए जाने चाहिएं, जिससे दुश्मन हमला करने की बात तो दूर, आंख उठाने से भी परहेज करे। मौजूदा हालातों में तभी राष्ट्र व तिब्बत सुरक्षित रह सकते हैं, जब चीन की हर मंच पर, हर परिस्थिति में घेराबंदी करके उसके नापाक इरादों को बलवान होने से रोका जाए।

४. राष्ट्रीय सम्मेलन में तीन प्रस्ताव पारित

धर्मशाला

भारत–तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय सम्मेलन के अंतिम दिन गुरुवार को तीन महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए। दो अक्तूबर, २००७ को तिब्बत मसले पर दिल्ली में विराट प्रदर्शन करने का अहम फैसला लेने के साथ तिब्बत में रेल लाइन निर्माण और वहां हो रहे अत्याचारों पर निंदा प्रस्ताव भी पारित हुए। सम्मेलन में तिब्बत समस्या पर भारत सरकार के ढुलमुल रवैये पर रोष प्रकट किया गया। सभी वक्ताओं ने एकजुटता में भारत सरकार को लपेटे में लेते हुए कहा कि सरकार को चीन पर दबाव बनाना चाहिए कि वह महामहिम दलाईलामा के प्रस्तावों के अनुरूप तिब्बत समस्या के समाधान के लिए उस पर दबाव बनाए। मंच और आरएसएस नेताओं ने कहा कि अब चीन से बढ़ रहे खतरे के अनुरूप विदेश नीति में बदलाव अति आवश्यक है। तिब्बत में चीन के हस्तक्षेप पर सम्मेलन में हुई चर्चा में कहा गया कि रेलवे लाइन के विस्तार से भारत की सुरक्षा दांव पर है।

दैनिक जागरण, धर्मशाला

२६ अक्तूबर, २००६

१. अमेरिका आसुरी शक्ति, चीन की सोच खतरनाक : सुदर्शन

तिब्बत मसले पर दृढ़ता से खड़ा होना होगा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक के सर संघचालक के.एस. सुदर्शन ने जहां तिब्बतियों को दिलासा दिया है वहीं तिब्बत के मसले पर भारत सरकार को दृढ़ता से खड़े होने की सलाह भी दी है। उन्होंने कांग्रेस की भूमिका तथा अमेरिका व चीन के रवैय्ये व सोच पर तीखा प्रहार भी किया है।

निर्वासित तिब्बत सरकार के मुख्यालय मैकलोडगंज में तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा से मुलाकात के बाद यहां पत्रकारों से बातचीन में सुदर्शन ने कहा कि अमेरिका तिब्बत से मौखिक सहानुभूति जताता हैं, पर वास्तव में उसकी सोच कुछ और ही है। उन्होंने अमरीका को उपभोक्तावाद से जोड़कर आसुरी शक्ति बताया। उन्होंने यह भी कहा कि हमें यह बात कभी भी कबूल नहीं होगी कि हमारे अनुसंधान पर कोई देश बंधन चाहे। क्योंकि अमेरिका को पता है कि भारत के पास थोरियम का भंडार है उससे ही भारत अणु शक्ति बनाने की क्षमता रखता है।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच के सम्मेलन के लिए आए सुदर्शन हालांकि दिनभर की थकान के कारण सम्मेलन में तो भाग नहीं ले पाए लेकिन पत्रकार सम्मेलन में वे तिब्बत से जुड़े कई पहलुओं पर कड़क अंदाज में नजर आए। सुदर्शन ने चीन को विस्तारवादी सोच वाला देश बताते हुए कहा कि भारत को तो अपनी सुरक्षा के मद्देनजर तिब्बत मसले पर दृढ़ता से खड़ा होना होगा। उन्होंने कहा कि भारत की स्थिति इस वक्त तिब्बत मसले पर निरपेक्ष बनी हुई है। पर हमें इस बात को याद रखना होगा कि तिब्बत पर चीन का कब्जा भारत के लिए खतरनाक है। सुदर्शन ने कहा कि हालांकि यह स्थिति सदैव रहने वाली नहीं है, पर हमें अपनी क्षमता दिखानी होगी। तिब्बत के मसले पर कांग्रेस की भूमिका को कठघरे में लाते हुए उन्होंने कहा कि देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने तिब्बत को चीन का अंग बताकर बहुत बड़ी भूल की थी। जबकि उस वक्त गुरु गोलवलकर ने कहा था कि चीन भारत में प्रवेश कर रहा है और वही हुआ। वर्ष १९६२ में चीन ने

भारत पर हमला बोल दिया। उस वक्त जवाहर लाल नेहरू ने माना कि धोखा हुआ है। पर गुरु गोलवलकर ने कहा कि अपनी आदर्शवादिता में हम खो गए और तिब्बत को भी चीन के हवाले कर दिया। पर लाल बहादुर शास्त्री जब प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने तिब्बत के प्रश्न उठाने शुरू किए। इसके अलावा आज तक हर सरकार ने तिब्बत के मसले पर अपना स्टैंड निरपेक्ष (नयट्रल) ही रखा। सरसंघचालक ने कहा कि आरएसएस का तिब्बत के मसले पर दृष्टिकोण हमेशा समर्थन वाला रहा है। उन्होंने कहा कि संघ ने तो हमेशा तिब्बत की आजादी की पैरवी की है। उन्होंने कहा कि तिब्बत कभी चीन का अंग रहा ही नहीं है। यह बात इतिहास के पन्नों में भी देखी जा सकती हैं यह तो मात्र चीन की विस्तारवादी सोच है। सुदर्शन ने यह भी कहा कि तृतीय विश्व युद्ध संभव है। चार से पांच साल के बीच हो सकता है। उसके बाद जो शांति का काम करना होगा। उसके लिये आध्यात्मिक शक्तियों को इकट्ठा होना होगा। इसी के चलते मैं महामहिम दलाईलामा से मिलने गया था। उन्होंने बताया कि इस उद्देश्य को लेकर ही २५-२६ नवबंर को वाराणसी में एक सर्वधर्म सम्मेलन बुलाया गया है, जिसके लिए महामहिम दलाईलामा को निमंत्रण दिया गया है।

२. सुदर्शन के सम्मुख छलका धर्मगुरु का दर्द

अनल पत्रवाल, धर्मशाला :

तिब्बत मसले पर महामहिम दलाईलामा भारत से ऐसा सहयोग चाहते हैं, जिससे इस मसले का ठोस हल निकल सके। हालांकि दलाईलामा अब तक जो सहयोग भारत से मिलता रहा है उससे संतुष्ट हैं, पर उन्हें लगता है कि लंबा समय हो चुका है अब कोई ऐसा समाधान हो, जिससे निर्वासित तिब्बत जनता को संतुष्ट किया जा सके। राष्ट्रीय स्वयं सेवकसंघ के सर संघचालक केएस सुदर्शन ने बुधवार को दलाईलामा से मुलाकात की तो कुछ ऐसी ही बातें उठी। दलाईलामा पैलेस मैक्लोडगंज में ४५ मिनट की इस मुलाकात के बाद सुदर्शन ने कहा कि मुलाकात अच्छी रही और चल दिए। पर इस मुलाकात के दौरान कहीं न कहीं दलाईलामा का दर्द भी उभर कर सामने आया। पता चला है कि सुदर्शन ने तिब्बत मसले पर दलाईलामा को पूर्ण सहयोग देने की बात कही है। दलाईलामा ने इस मुलाकात के दौरान बौद्ध व हिंदुस्तानियों को जुड़वा भाई बताया। सुदर्शन ने दलाईलामा को फरवरी २००७ के दौरान द्वितीय सरसंघ चालक की जन्मशताब्दी पर आयोजित

होने वाले समारोह में शरीक होने का न्योता दिया, पर महामहिम ने उसमें यह कहकर अपनी असमर्थता जताई कि उस दौरान लोसर रहेगा। लोसर के दौरान महामहिम कम ही बाहर जाते हैं। पता चला है कि सुदर्शन ने महामहिम को नवंबर में होने वाले अंतरराष्ट्रीय सर्वधर्म सम्मेलन में शामिल होने का न्योता भी दिया है, उस पर महामहिम ने सुदर्शन को आश्वस्त किया है। इस मौके पर आरएसएस के क्षेत्रीय प्रचारक दिनेश, भारत तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक इन्द्रेश , निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिंपोछे व पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल भी उपस्थित थे। इस दौरान जो चर्चा हुई वह तिब्बत के मसले पर ही आधारित रहीं। इससे पहले सुदर्शन ने महामहिम का नतमस्तक होकर अभिवादन किया। दलाईलामा ने भी उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इसके बाद सुदर्शन कर्मा काग्यू संप्रदाय के १७वें करमापा उग्येन त्रिनले दोरजे से भी मिले । करीब आधे घंटे की इस मुलाकात में सुदर्शन ने करमापा का हालचाल पूछा व तिब्बती मसलों पर चर्चा की। उन्होंने काग्यू संप्रदाय की भी जानकारी हासिल की। इसके बाद सुदर्शन ने चामुंडा मंदिर में जाकर माथा टेका।

२७ अक्टूबर, २००६

१. आजादी के लिए तेज होगा आंदोलन

वरिष्ठ संवाददाता, धर्मशाला

भारत-तिब्बत सहयोग मंच ने तिब्बत की आजादी के लिए आंदोलन को जहां तेज करने का निर्णय लिया, वहीं तिब्बत मसले पर केंद्र सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया। तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा ने तिब्बत की समस्या के समाधान के लिए किए जा रहे प्रयासों को सराहा है। मंच के तिब्बत पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में जो प्रस्ताव पारित हुए हैं, उनमें से एक प्रस्ताव यही है कि भारत सरकार तिब्बत समस्या के समाधान के लिए अपनी उचित भूमिका नहीं निभा पा रही है। प्रस्ताव के अनुसार भारत का यह नैतिक व देश की सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह चीन सरकार पर दबाव डाले कि वह दलाईलामा के प्रस्तावों के अनुरूप तिब्बत समस्या के समाधान के लिए आगे आए। इस सम्मेलन का आयोजन धर्मशाला के सामुदायिक भवन में किया गया था।

इसमें देश भर से मंच के सदस्य शामिल हुए । राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

सर संघचालक के.एस. सुदर्शन भी इस सम्मेलन के मद्देनजर धर्मशाला में थे। प्रस्ताव में कहा गया है कि भारत सरकार समस्त भारतीयों व तिब्बतियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए तिब्बत के प्रति सक्रिय नीति का पालन करेगी, मंच ऐसी उम्मीद करता है।

सम्मेलन में मंच के संरक्षक इन्द्रेश कुमार ने प्रतिनिधियों से कहा किं अब तिब्बत की आजादी के आंदोलन को तेज करने का वक्त आ गया है । प्रस्ताव में इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की गई कि निर्वासित सरकार व चीन के बीच संवाद की नींव पड़ चुकी हैं उन्होंने बताया कि अन्य प्रस्ताव में चीन द्वारा ल्हासा तक बनाई गई रेललाइन को भारत की सुरक्षा के लिए भी खतरा बताया गया है। एक अन्य प्रस्ताव में हाल ही में तिब्बती लोगों पर हुए गोलीकांड की निंदा भी की गई व भारत सरकार से आग्रह किया गया है कि इसका चीन के प्रति विरोध दर्ज करवाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दबाव बनाने की कोशिश करे। यह सम्मेलन मंच के सदस्यों को दो अक्टूबर २००७ को दिल्ली चलो का आह्वान करते हुए समाप्त हो गया।

निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे भी सुदर्शन द्वारा अमेरिका पर किए गए प्रहारों का कुछ इस तरह से समर्थन करते नजर आए कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। उनसे जब सुदर्शन की कही बातों पर प्रतिक्रिया जाननी चाही, तो उनका कहना था कि अमेरिका तिब्बतियों के पुनर्वास में मदद कर सकता था पर ऐसा नहीं हो रहा है। उन्होंने माना कि मित्र होना व भाई होना दो अलग-अलग बाते हैं।

अमेरिका को उन्होंने मित्र की संज्ञा दी तो भारत को भाई की। सम्मेलन के समापन के अवसर पर मंच के प्रदेश अध्यक्ष सुनील मनोचा, ने आए हुए प्रतिनिधियों का आभार जताया।

२. युद्ध के लिए तैयार हो भारत :

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक के.एस. सुदर्शन ने कहा कि कश्मीर आईएसआई का सुरक्षित अड्डा बन गया है तो चीन भी भारत पर नजर रखे हुए है। समय आ गया है कि हम बलशाली बनें और युद्ध के लिए तैयार रहें।

भारत-तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय सम्मेलन मंच के सार्वजनिक कार्यक्रम में सुदर्शन ने कहा कि इसी तरह बांग्लादेश भी आंखें फाड़े भारत को देख रहा है। लोअर टीसीवी धर्मशाला में हुए कार्यक्रम में सुदर्शन ने कहा कि अगर अगर

युद्ध से बचना है, तो युद्ध की तैयारी रखनी होगी क्योंकि यह समय शत्रु को बख्शने का नहीं है, बल्कि अपनी शक्ति के वैभव को चमकाने का है।

आईएसआई के लोग असोम में गड़बड़ियां फैला रहे हैं, तो मुंबई में बम फोड़ रहे हैं। इसलिए अब यह जरूरी है कि हम संगठित होकर इनके खिलाफ लड़ें। ऐसे में शेष सिद्धांत किसी काम के नहीं रह जाते कि हम सज्जन बनकर दुश्मन को बख्शते रहें। इसका यह मतलब होगा कि हम अपने खात्मे को न्योता दे रहे हैं। भारतीय नेतृत्व ने कभी भी तिब्बत के मसले पर दूरदर्शिता नहीं दिखाई । पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि तिब्बत की सुरक्षा होगी, तभी भारत सुरक्षित रह सकता है। निर्वासित तिब्बत सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिंपोछे ने कहा कि भारत ही तिब्बत के मसले का ठोस हल निकाल पाने की क्षमता रखता है। मंच के राष्ट्रीय सरंक्षक इंद्रेश ने तिब्बत मसले पर भारत सरकार का ध्यान खींचने का प्रयास किया। इस मौके पर तिब्बत सरकार के स्पीकर कर्मा चोफेल डिप्टी स्पीकर डोलमा गेयरी सहित कई गणमान्य लोग मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरुआत भारत व तिब्बत के राष्ट्रीय गान से हुई। कार्यक्रम में किशन कपूर, विद्यासागर, विपन परमार, कृपाल परमार, राजन सुशांत, कमला पटियाल आदि मौजूद थे। टीसीवी के बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम पेश किया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ के एक विधायक भी मौजूद थे।

दैनिक भास्कर, धर्मशाला

२६ अक्टूबर, २००६

१. तिब्बत समस्या के हल को जारी रहेगा समर्थन

• आरएसएस प्रमुख के.एस. सुदर्शन बुधवार को भारत तिब्बत सहयोग मंच के कार्यक्रम में भाग लेने धर्मशाला पहुंचे। उन्होंने मैक्लोडगंज स्थित दलाईलामा के अस्थाई निवास पर उनसे मिलकर विश्व समस्याओं के साथ-साथ तिबबत मुक्ति आंदोलन पर आरएसएस के विचारों से अवगत कराया। दोनों के बीच अनुवादक की भूमिका तिब्बत निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे ने निभाई।

दलाईलामा से भेंट के दौरान उन्होंने कहा कि आरएसएस शुरू से ही तिब्बत समस्या के हल के लिए आवाज बुलंद करता रहा है और भविष्य में भी वह इसके लिए अपना समर्थन जारी रखेगा।

उन्होंने कहा कि २०११ तक भारत विश्व मानचित्र पर धर्म गुरु के रूप में उभरेगा और विश्व को नेतृत्व प्रदान करेगा। उन्होंने आरएसएस द्वारा तिब्बत समर्थन के लिए चलाए अभियान की विस्तृत जानकारी दलाईलामा को दी। सुदर्शन व आरएसएस के पदाधिकारियों ने करमा कग्यू बौद्ध पंथ के मुखिया १७वें करमापा से भेंट कर आज के तिब्बत पर विचार सांझे किए। इससे पहले भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष शांता कुमार, पूर्व मुख्यमंत्री एवं भारत तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक प्रेम कुमार धूमल व तिब्बत निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे ने आरएसएस सुप्रीमो का स्वागत किया।

आरएसएस प्रमुख व प्रेम कुमार धूमल ने श्री चामुंडा नंदीकेश्वर धाम में पूजा–अर्चना की। दौरे पर उनके साथ आरएसएस के उत्तरी क्षेत्र के प्रखंड प्रचारक दिनेश, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य एवं अखिल भारतीय भारत तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक इंद्रेश कुमार थे।

२. चीन पर बातचीत का दबाव बनाए भारत सरकार : दलाईलामा

दलाईलामा ने कहा कि वह भारत सरकार व यहां की जनता सदैव ऋणी है, जिन्होंने खुले दिल से तिब्बत समस्या हल के लिए अपना समर्थन दिया है। उन्होंने कहा कि अब आवश्यकता है कि भारत सरकार व जनता खुलकर तिब्बत समस्या हल के लिए उन द्वारा अपनाए जा रहे मध्य मार्ग को समर्थन देकर चीन पर बातचीत के लिए दबाव बनाए।

सशक्त भारत के रूप में अपनी बात रखें संगठन :

अखिल भारतीय भारत तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक व आरएसएस के राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य इंद्रेश ने कहा कि भारत को अपनी सीमा का एक इंच भी किसी दूसरे देश के पास नहीं रहने देना चाहिए। चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा के दौरान सभी राजनीतिक व स्वेच्छिक संगठन चीन के समक्ष एक सशक्त भारत के रूप में अपनी बात रखें। उन्होंने कैलाश मानसरोवर को वीजा व पासपोर्ट मुक्त करने की भी बात कही।

आरएसएस के कार्यक्रमों को सराहा :

१७वें करमापा ने आरएसएस द्वारा चलाए कार्यक्रमों की सराहना करते हुए इसे तिब्बती समुदाय के लिए भी प्रेरणास्रोत बताया। उन्होंने आरएसएस द्वारा तिब्बत समस्या के हल के लिए दिए जा रहे सहयोग व समर्थन को जारी रखने की बात कही।

अध्यात्मिक शक्तियां ला सकती है विश्व शांति :

विश्व में बढ़ती अशांति से संभव है कि अपने वाले ५–६ वर्षों में तृतीय विश्व युद्ध हो। इस बार का आणविक युद्ध होगा, जिसमें करोड़ों लोग मारे जाएंगे। दुनिया में शांति स्थापित करने में अध्यात्मिक शक्तियों को ही आगे आना पड़ेगा। भारत उस समय अग्रणी भूमिका निभाएगा। यह उद्गार आरएसएस प्रमुख के.एस. सुदर्शन ने धर्मशाला में पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहे। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद भारत द्वारा तिबबत को चीन का भाग करार देना एक ऐतिहासिक भूल थी। आज ल्हासा तक सड़क के साथ–साथ रेल का विस्तारीकरण जारी रहना भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। सुदर्शन ने दलाईलामा से मुलाकात को आध्यात्मिक शक्तियों को एकत्रित करने का प्रयास बताया और कहा कि इसी दिशा में शीघ्र ही वाराणसी में धर्म संस्कृति संगम का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें भारत व दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी प्रमुख धार्मिक गुरुओं को आमंत्रित किया गया है।

तिब्बत समस्या सुलझाए भारत :

भारत सरकार द्वारा तिब्बत समस्या के समाधान पर डिप्लोमेटिक नीति अपनाने की कड़ी आलोचना करते हुए भारत–तिब्बत सहयोग मंच ने देश के लिए इसे नैतिक व सुरक्षा की दृष्टि से घातक करार दिया।

मंच ने सरकार से आग्रह किया है कि वे दलाईलामा के प्रस्तावों के अनुरूप तिब्बत समस्या के समाधान के लिए आगे आए व भारतीयों एवं तिब्बतियों की भावना का सम्मान करते हुए तिब्बत के प्रति सक्रिय नीति का पालन करे।

धर्मशाला में भारत–तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक वीरवार प्रातः ११ बजे आयोजित की गई। इस बैठक में आरएसएस प्रमुख सुदर्शन ने विशेष तौर पर शिरकत की। इसमें पारित प्रस्ताव के अनुसार निर्वासित तिब्बत

सरकार व चीन के मध्य वर्तमान में संवाद रचना के प्रयासों का स्वागत करते हुए मंच ने इसे एक बेहतर शुरूआत माना है।

बैठक में दलाईलामा के अहिंसा के मार्ग पर चलकर तिब्बत समस्या के समाधान के लिए किए जा रहे प्रयासों की प्रशंसा की गई। तिब्बत समस्या का संतोषजनक समाधान भारत का कर्त्तव्य है।

१२ प्रांतों में सहयोग मंच की शाखाएं :

अखिल भारतीय तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक इंद्रेश कुमार ने राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के पांचवें सम्मेलन के आयोजन को लक्ष्य के प्रति अग्रसर बताते हुए कहा कि वर्तमान में १२ प्रांतों में सहयोग मंच की शाखाएं कार्य कर रही हैं। २ अक्तूबर २००७ को दिल्ली चलो का नारा देकर चीनी दूतावास के समक्ष एक विशाल प्रदर्शन आयोजित किया जाएगा।

सुदर्शन ने ली गतिविधियों की जानकारी :

सहयोग मंच की कार्यकारिणी बैठक में मंच पदाधिकारियों ने अपनी राष्ट्र स्तर पर जारी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी संघ प्रमुख सुदर्शन को दी। सुदर्शन ने मंच के कार्यक्रमों को सराहते हुए भविष्य में सहयोग व मार्गदर्शन का वादा किया। मंच ने संघ प्रमुख का इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए धन्यवाद प्रस्ताव भी पारित किया।

२७ अक्टूबर, २००६

१. तिब्बत समस्या का जल्द समाधान किया जाए : सुदर्शन

भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के पांचवें सम्मेलन का समापन समारोह टीसीवी स्कूल में आयोजित किया गया । इस समारोह की अध्यक्षता तिब्बत निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे ने की। जबकि आरएसएस प्रमुख सुदर्शन इसमें बतौर मुख्यातिथि उपस्थिति हुए । दोनों नेतओं ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए तिब्बत समस्या के समाधान के लिए भारत व चीन की सरकारों से कारगर कदम उठाने का आह्वान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुदर्शन ने दीप प्रज्जवलित कर किया। इस मौके पर मंच

के संरक्षक इंद्रेश कुमार, राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप अग्निहोत्री, संघ क्षेत्रीय प्रचारक दिनेश, पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल, मंच के प्रदेश अध्यक्ष सुनील मनोचा, तिब्बती स्पीकर चौफेल, गैरी डोल्मा, दावा छिरिंग, अनीश रुस्तगी, चांद किशोर, सुनील धवन, रामलाल ठाकुर सहित भारत व तिब्बत के कई प्रतिनिधि उपस्थित थे।

पंजाब केसरी, धर्मशाला

२६ अक्टूबर, २००६

१. आध्यात्मिक शक्तियों वाले देश इकट्ठे हों : सुदर्शन

आर.एस.एस. तिब्बत की स्वतंत्रता का पक्षधर, कहा आणविक हो सकता तृतीय विश्व युद्ध

धर्मशाला, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक के.सी. सुदर्शन ने कहा है कि भविष्य में आध्यात्मिक शक्तियों वाले भारत–तिब्बत व दक्षिण पूर्वी देश ही विश्व में शांति स्थापित करने में सक्षम होंगे। सरसंघ चालक के.सी. सुदर्शन ने आज धर्मशाला में पत्रकारों से बातचीत करते हुए कहा कि तृतीय विश्व युद्ध आणविक हो सकता है जिससे भारी तबाही की आशंका है।

इस युद्ध में यदि ३००–४०० करोड़ लोग मारे जाते हैं तो आश्चर्य नहीं होगा। इस विनाशकारी युद्ध को रोकने के लिए आध्यात्मिक शक्तियों वाले देश इकट्ठे होकर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि अमरीका की हमेशा नीति रही है कि दूसरे देशों के कंधे पर बंदूक चलाई जाए। अमरीका दोहरी भूमिका निभा रहा है। एक ओर पाकिस्तान की कुख्यात गुप्तचर संस्था आई.एस.आई. को सहायता प्रदान कर भारत में गड़बड़िया करने काप्रयास कर रहा है तो दूसरी ओर भारत को फुसला कर चीन के विरूद्ध खड़ा करने का प्रयास कर रहा है। अमरीका ने ही अफगानिस्तान में इसके विरुद्ध तालिबान को खड़ा किया था परंतु वह भस्मासुर प्रमाणित हुए और अमरीका में आतंकवादी गतिविधियां चलाईं।

उन्होंने कहा कि तिब्बत पर चीन का कब्जा भारत की सुरक्षा के लिए खतरा

बना हुआ है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आरंभ में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि चीन विस्तारवादी रहा है और भारत पर हमला कर सकता है परंतु तब कोई भी इस पर विश्वास नहीं कर रहा था। चीन ने हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाते हुए तिब्बत पर कब्जा कर लिया। तिब्बत चिल्लाता रहा परंतु कोई उसकी सहायता के लिए नहीं आया। वास्तव में अंग्रेजों ने उसे भारत और चीन के मध्य वफर स्टेट का दर्जा दिया हुआ था। चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जा करने के उपरांत भारत ने स्वीकार कर लिया कि तिब्बत-चीन का ही भाग है। ५ नवंबर १९५९ को महामहिम दलाईलामा को भारत में शरण लेनी पड़ी और निर्वासित सरकार स्थापित की। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आरंभ से ही तिब्बत की स्वतंत्रता का पक्षधर है। १९६२ में जब चीन ने भारत पर हमलाकर अरुणाचल प्रदेश में ५०,००० वर्ग मील पर कब्जा कर लिया तो तत्कालीन भारतीय प्रधानमंत्री स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू ने बयान दिया कि भारत के साथ धोखा हुआ है। उन्होंने आरोप लगाया कि चीन आसुरी शक्ति रहा है और उसने तिब्बत में मिसाइल स्थापित कर रखे हैं जो कि भारत के किसी भी शहर को तबाह करने में सक्षम हैं।

चीन-नेपाल में गड़बड़ी करवा रहा है व पाकिस्तान को भी अस्त्र-शस्त्र सप्लाई कर रहा है। चीन तिब्बत का नामोनिशान मिटाना चाहता है। उन्होंने कहा कि आज महामहिम दलाईलामा से उनकी मुलाकात काफी सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई महामहिम दलाई लामा ने उन्हें बताया कि उन्होंने मध्यवर्गीय दृष्टिकोण अपनाकर चीनी प्रतिनिधियों से वार्ता आरंभ की हुई है। उन्हें महामहिम दलाईलामा का आर्शीवाद लेकर काफी प्रसन्नता हुई है।

२. तिब्बत मामले में मध्यवर्गीय दृष्टिकोण का समर्थन प्रदान करे भारत : दलाईलामा

धर्मशाला, तिब्बतियों के धार्मिक गुरु महामहिम दलाईलामा ने कहा है कि भारत तिब्बत के मामले में उनके मध्यवर्गीय दृष्टिकोण को समर्थन प्रदान करे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक के.सी. सुदर्शन जो कि भारत-तिब्बत सहयोग मंच द्वारा आयोजित सम्मेलन में भाग लेने के लिए बुधवार को धर्मशाला पहुँचे, के साथ मुलाकात में कई मसलों पर लगभग एक घंटा बातचीत हुई। बातचीत के दौरान महामहिम दलाईलामा ने अनुरोध किया कि भारत तिब्बत समस्या के समाधान में अपने प्रभाव का इस्तेमाल करे।

महामहिम दलाईलामा ने कहा कि उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग त्यागते हुए मध्यवर्गीय दृष्टिकोण अपनाया है। विश्व में अनेक भागों से इस दृष्टिकोण को समर्थन मिला है। यह मध्यवर्गीय दृष्टिकोण पूरी तरह से व्यवहारिक व यथार्थपरक है तथा चीन व तिब्बत दोनों के हित में है। चीन व तिब्बत दोनों के हित में है। चीन व तिब्बत दोनों के हित में है। चीन के बुद्धिजीवियों द्वारा भी इस दृष्टिकोण को समर्थन दिया गया है। इस दृष्टिकोण के अंतर्गत तिब्बत में रह रहे तिब्बतियों पर ही तिब्बत के प्रशासन का मुख्य दायित्व रहेगा और वह तिब्बत प्रशासन में न कोई पद ग्रहण करेंगे और न ही कोई राजनीतिक स्थान। बताया जाता है कि इस बातचीत में विश्व के सबसे कम उम्र के राजनीतिक कैदी पंचेन लामा की रिहाई को लेकर भी चर्चा हुई। महामहिम दलाईलामा ने इस बातचीत के दौरान रहस्योद्घाटन किया कि तिब्बत में बड़े पैमाने पर मूल चीनियों को बसाया जा रहा है। अकेले ल्हासा में ही ३ लाख की आबादी में लगभग २ लाख लोग चीनी मूल के बस गए हैं। तिब्बत में रेल लाइन बिदने के उपरांत काफी संख्या में चीनी मूल के लोग तिब्बत में आ गए हैं। इससे तिब्बती अपने ही देश में अल्पसंख्यक हो गए हैं। इस अवसर पर विश्व के अन्य घटनाक्रमों पर भी विस्तार से चर्चा हुई। सरसंघ चालक सुदर्शन ने कहा कि जिस प्रकार उथल-पुथल मची हुई है उससे २०११ तक भारत और तिब्बत विश्व का मार्गदर्शन करेंगे। उन्होंने तिब्बत समस्या के समाधान में उनको हर प्रकार से समर्थन का आश्वासन दिया है।

२७ अक्तूबर २००७

१. युद्ध से बचना है तो युद्ध की तैयारी रखो : सुदर्शन

कहा भविष्य में भारत के लिए खतरा बन सकता है चीन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सर संघचालक के.सी. सुदर्शन ने कहा है कि शक्ति ही शांति का आधार है और बलवान राष्ट्र की ओर कोई आंख उठा कर भी नहीं देख सकता। दुर्बल राष्ट्र होना एक अभिशाप जैसा है।

उन्होंने कहा कि यदि युद्ध से बचना है तो युद्ध की तैयारी रखो। सरसंघचालक के.सी. सुदर्शन ने वीरवार को धर्मशाला में भारत-तिब्बत सहयोग मंच द्वारा आयोजित समारोह को बतौर मुख्यातिथि संबोधित करते हुए कहा कि जब दुर्जन बलवान हो जाता है तो भगवना की शक्ति अवतरित होती है। लगभग ५१४० वर्ष पहले

महाभारत युद्ध में आसुरी शक्तियों का नाश हुआ । उन्होंने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र के जीवनकाल में उत्थान और पतन आते हैं।

महाभारत के युद्ध के उपरांत भी भारत में उत्थान की प्रक्रिया आरंभ हुई और लगभग १२०० वर्ष तक यह उत्थान जारी रहा परंतु उसके उपरांत कुछ विकृतियां आने के उपरांत पतन आरंभ हो गया। लगभग १८०० वर्ष पहले भगवान बौद्ध का अवतार हुआ और बौद्ध धर्म पूरे विश्व में फैला । आज भी बौद्ध धर्म के अवशेष कई राष्ट्रों में विद्यमान हैं।

बौद्ध धर्म भी लगभग १००० वर्ष तक खूब विकसित हुआ परंतु उसके उपरांत विकृतियां आ गईं। उसके उपरांत शंकराचार्य का अवतार हुआ व वेदांत धर्म की स्थापना हुई।

९वीं शताब्दी के बाद भारत में फिर पतन की प्रक्रिया आरंभ हो गई। भारत से अफगानिस्तान, श्रीलंका व बर्मा का कुछ भाग अलग हो गया और कुछ राष्ट्रों द्वारा भारत को भी हजम करने की प्रक्रिया आरंभ हो गई।

उन्होंने कहा कि तिब्बत में भी यही स्थिति है। चीन तिब्बत को समाप्त करने पर तुला हुआ है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने १८९३-९४ में ही भविष्यवाणी कर दी थी कि चीन एक सोया हुआ भस्मासुर है और इसे सोया हुआ ही रहने दिया जाए। चीन भविष्य में भारत के लिए खतरा बन सकता है। उन्होंने कहा कि भारत ही कर्मभूमि है और विश्व का कोई भी देश भारत का मुकाबला नहीं कर सकता है। परम भक्ति, मोक्ष व निर्वाण की अवस्थ इसी कर्मभूमि में प्राप्त होती है। भारत और तिब्बत विश्व की आध्यात्मिक शक्तियां रही हैं। भागीरथ द्वारा ३ पीढ़ियों के प्रयास के उपरांत उस समय मरुस्थल रही इस भूमि में गंगा को लाया गया।इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने तिब्बत की वर्तमान स्थिति के लिए तत्कालीन सरकार की गलतियों को दोषी करार दिया। भारत तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक इन्द्रेश कुमार ने कहा कि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आरंभ से ही तिब्बत की समस्या का समर्थन करता रहा है। तिब्बत की निर्वासित सरकार के प्रधानमंत्री साम्दोंग रिम्पोछे ने कहा कि भारत-तिब्बत सहयोग मंच के इस समारोह के आयोजत के बाद लोग तिब्बत समस्या के प्रति जागरूक होंगे। मंच के राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप अग्निहोत्री ने भी चीन के कब्जे वाले तिब्बत में मानवाधिकारों के उल्लंघन का जिक्र किया और कहा कि तिब्बती लोग अपने ही देश में अल्पसंख्यक होकर रह गए हैं। अन्य वक्ताओं ने भी महामहिम दलाईलामा

द्वारा मध्यवर्गीय दृष्टिकोण का समर्थन किया और जोर दिया कि चीन तिब्बत समस्या के समाधान के लिए आगे आए।

अमर उजाला, धर्मशाला

२६ अक्तूबर २००६

१. चर्च, जेहाद और साम्यवाद से शांति को खतरा : सुदर्शन

दलाईलामा से आरएसएस प्रमुख ने की मुलाकात

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघ चालक के.सी. सुदर्शन ने चर्च, जेहादियों और साम्यवाद को विश्व की शांति के लिए सबसे बड़ा खतरा बताया है। उन्होंने क़हा कि इन तीनों का बढ़ता जाल तीसरे विश्व युद्ध का कारण बन सकता है। भारत–तिब्बत सहयोग मंच के समारोह में भाग लेने यहां पहुंचे सुदर्शन ने तिब्बती बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा से भेंट में कहा कि भारत और तिब्बत लिकर साम्यवाद जैसी आसुरी शक्तियों को पराजित कर शांति और भाईचारे का बढ़ावा दे सकते हैं।

सुदर्शन ने कहा कि आरएसएस शुरू से ही तिब्बत की आजादी का पक्षधर रहा है। तिब्बत–चीन संबंधों पर चिंता प्रकट करते हुए संघ प्रमुख ने कहा कि गुरु सदाशिव गोलवलकर ने कई दशक पूर्व ही भारत सरकार की चीन के प्रति सावधान कर दिया था, लेकिन तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने तिब्बत मसले की और ध्यान नहीं दिया। इससे यह समस्या उलझती गई और साम्यवाद का जाल फैलता गया। तिबबत मसले पर आरएसएस के स्टैंड की सराहना करते हुए दलाईलामा ने सुदर्शन का धन्यवाद किया। धर्मगुरु ने कहा कि चीन का भारत पर हमला और तिब्बत की आजादी छीनना दोनों अमानवीय कृत्य थे। दलाईलामा ने सुदर्शन से कहा कि विश्व में शंति का विकास आवश्यक है और इसका गारंटर भारत ही हो सकता हैं भारत सरकार को तिब्बत मसले को लेकर चीन पर दबाव डालना चाहिए।

दलाईलामा के अनुसार अगर चीन तिब्बत को स्वायत्त क्षेत्र घोषित कर दे तो तिब्बती समुदाय को वह भी मंजूर होगा। तिब्बत को शिष्य और भारत को गुरु की संज्ञा देते हुए दलाईलामा ने कहा कि दोनों देश सांस्कृतिक सेतु से बंधे हैं।

लिहाजा भारत के सहयोग के बगैर तिब्बत कभी भी स्वायत्त क्षेत्र नहीं बन सकता। दलाईलामा ने कहा कि चीन से ल्हासा तक बनाई गई रेल लाइन विकास का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत के लिए खतरे की घंटी है।

इससे पूर्व आरएसएस प्रमुख दोपहर करीब एक बजे दलाईलामा से भेंट करने यहां पहुंचे। उन्होंने दलाईलामा को गुरु सदाशिव गोलवलकर के बारह समग्र, आरएसएस की गतिविधियों की पुस्तकें, दीपावली की मिठाइयां और बुद्ध पर एक किताब भी भेंट की। सुदर्शन ने करमापा लामा से भी करीब आधा घंटे तक मुलाकात की।

२. पांच साल में हल होगा तिब्बत मसला : सुदर्शन

आरएसएस के सरसंघचालक को उम्मीद, लाल बहादुर शास्त्री के अलावा किसी ने नहीं दी अहमियत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक के सर संघचालक कु.सी. सुदर्शन ने तिब्बत पर चीन के अधिकार को भारत के लिए खतरा बताया है उन्हें उम्मीद है कि आने वाले चार पांच सालों में तिब्बत मसले का हल हो जाएगा। उन्होंने कहा कि गुरु गोलवलकर ने १९४९ में ही चीन को विस्तारवादी बता कर आने वाले समय में भारत की सुरक्षा के लिए खतरा बता दिया था, लेकिन पंडित जवाहर लाल नेहरू ने उदारता दिखाते हुए तिब्बत को चीन का ही अंग बताकर अपने ही देश के लिए खतरा बना दिया था, चीन की १९५४ की कार्रवाई के बाद उस समय भी गुरुजी ने घोषणा की थी कि भारत के अंदर चीन का प्रवेश घातक सिद्ध होगा। उस समय उनकी बातों को महत्व नहीं दिया था।

पंचशील के समझौते में हिन्दी चीनी भाई-भाई के नारे लगवाकर चीन ने भारत में प्रवेश कर लिया। १९५६ में चीन ने तिब्बत पर अपना कब्जा जमाना शुरू कर दिया। उसने उन पर अत्याचार किए। लेकिन उस समय तिब्बत की सहायता के लिए कोई आगे नहीं आया। तिब्बत में भारत की कुछ सेना थी, वहां पर पोस्टल सर्विस का काम भारत ही संभालता था लेकिन चीन के हस्तक्षेप के बाद वहां भारत को वापस आना पड़ा। इसी तरह दलाईलामा को भी भारत में शरण लेनी पड़ी। संघ शुरू से ही तिब्बत की आजादी का समर्थक रहा है। गुरुजी ने इस विषय को प्रमुखता से उठाया। जब चीन का भारत पर आक्रमण हुआ था तो पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इस बात को माना था कि उनके साथ चीन ने धोखा

किया है। उस समय भी गुरु जी ने कहा था धोखा तिब्बत के साथ हुआ है। जिसने भारत को अपना छोटा भाई मानकर भरोसा किया था।

हालांकि दलाईलामा तिब्बत के मसले पर कोई संघर्ष नहीं चाहते हैं, इसलिए उन्होंने मध्यस्थता का रास्ता अपनाते हुए बातचीत के लिए प्रयास भी किए। दलाई लामा ने इस बात की शर्त रखी कि तिब्बत को आंतरिक मामलों में पूर्ण स्वायत्तता मिले। हालांकि चीन ने उन्हें बातचीत के लिए बीजिंग बुलाया था। लेकिन दलाईलामा के प्रतिनिधियों के चीन पहुंचते ही जब उनके समर्थन में नारे लगने शुरू हुए तब चीन को एहसास हुआ कि तिब्बत मसले पर समझौता हितकर नहीं होगा । उसके बाद तीन चार बार प्रस्ताव भेजे गए लेकिन चीन ने इंकार कर दिया। धीरे-धीरे चीन तिब्बत के लोगों को कब्जे में करके उनका नामोनिशान मिटाना चाहता है। चीन का तिब्बत पर अधिकार हमेशा के लिए नहीं रहेगा। जेहादी, चर्च नीतियां, चीन, अमेरिका का उपभोक्तावाद यह सब आसुरी शक्तियां हैं। आने वाले समय में यह पूरे विश्व के लिए खतरा है। यह संघर्ष शुरू हो गया है। तीसरा विश्वयुद्ध अगर होता है तो यह सभी के लिए खतरनाक होगा। महाभारत में भी पांडवों ने मात्र पांच गांव ही मांगे थे। लेकिन न मिलने पर महाभारत की रचना हुई थी। अमेरिका को खतरा चीन से है इसलिए वह चीन का समर्थन कर रहा है। वास्तव में इस्लामिक शक्ति को बढ़ावा देकर अमेरिका दूसरे के कंधे पर बंदूक रख कर अपना मकसद निकाल रहा है। आज भारत के पास इतनी शक्ति है कि वह अपने दम पर खड़ा है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में हालात को देखते हुए आध्यात्मिक शक्तियों को एकजुट होना पड़ेगा। इसी संदर्भ में २५ व २६ तारीख को वाराणसी में एक आयोजन होने जा रहा है जिसमें दलाईलामा व कारमापा को भी आमंत्रित किया गया है। १८ फरवरी को गुरुजी जन्मशताब्दी के समापन कार्यक्रम में भी दलाईलामा को आमंत्रित किया गया हैं । उन्होंने दलाई लामा से हुई बातचीत के संबंध में कहा कि दलाईलामा ने संघ के दृष्टिकोण पर आभार व्यक्त किया है। एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अमेरिका की तिब्बती संस्थानों को मिल रही सहायता मौखिक सहानुभूति है। भारत भी अपने तरीके से सहायता दे रहा है। उन्होंने कहा कि आज तक मात्र लाल बहादुर के समय में ही तिब्बत मसले पर कोई राजनीतिक सहायता मिली है अन्यथा किसी भी समय में तिब्बत के मसले को प्रमुखता नहीं दी गई है।

३. तिब्बत का आजाद न होना भारत को खतरा

धर्मशाला में भारत तिब्बत सहयोग मंच की बैठक का आयोजन

देश के समक्ष राष्ट्रीय चुनौतियों को लेकर भारत तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने बैठक की। बैठक में देश भर से आए प्रतिनिधियों ने चीन की गतिविधियों से पैदा होने वाले खतरे पर चर्चा की। चीन के लगातार तिब्बत पर बढ़ते प्रभाव को भारत के लिए बड़ा खतरा माना जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बदलते परिवेश को भी हिंदुत्व के लिए खतरा मानते हुए तिब्बत के माध्यम से चीन के कदम रोकने के लिए विषय रखे गए।

भारत–तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक बुधवार को सामुदायिक भवन कोतवाली में हुई। बैठक में देशभर से आए मंच के प्रतिनिधियों ने तिब्बत की संस्कृति, नेपाल में हिंदू राष्ट्र का भंग होना व माओवादियों के रूप में चीन का प्रभुत्व बढ़ना आदि विषय प्रमुखता से उठाये। मंच के प्रतिनिधियों ने तिब्बत के आजाद होने की वकालत की। चीन का ल्हासा तक रेल शुरू करने सहित दूसरे माध्यमों से भारत की ओर बढ़ते कदमों को देश की अखंडता के लिए खतरा बताया गया ।

भारत–तिब्बत सहयोग मंच की हिमाचल इकाई के अध्यक्ष सुनील मनोचा ने कहा कि भारत के लिए सबसे बड़ा खतरा पाकिस्तान नहीं बल्कि चीन बन गया है।

उन्होंने कहा कि इस मसले को यूएनओ में गंभीरता से उठाने की आवश्यकता है। बैठक में भारत–तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक इंद्रेश कुमार, राष्ट्रीय संयोजक कुलदीप चंद अग्निहोत्री, मंच के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व तिब्बत सांसद यशी फुंछोक, मंच के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष अरविंद महासचिव हेमंत, हरियाणा प्रांत के अध्यक्ष सुरेश गर्ग, आसाम के अध्यक्ष जवाहर ठाकुर, चंडीगढ़ के अध्यक्ष राम स्वरूप, छत्तीसगढ़ के विनोद खांडेकर, प्रवीण भौरे, कन्हैया व रश्मि शर्मा, जम्मू कश्मीर के रमेश कुमार, किन्नौर से भगत नेगी व सरला नेगी, कांगड़ा के जिला अध्यक्ष सुनील धवन, कुलदीप कुमार, सुरेश कुमार, ऋषि वालिया सहित प्रदेश व देशभर से मंच कार्यकारिणी के सदस्यों ने भाग लिया।

४. तिब्बत मसले पर सीधे मदद की योजना नहीं !

तिब्बती समुदाय और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दोनों की नजर में चीन

खलनायक हैं आरएसएस चीन से ज्यादा उसके साम्यवादी शासकों को खतरनाक मानता चीन और उसके शासकों की नीतियों से गहरे मतभेद रखने के कारण ही तिब्बती समुदाय और आरएसएस एक दूसरे के काफी नजदीक चले गए हैं। लेकिन इन दोनों पक्षों की गहरी दोस्ती के बावजूद संघ ने तिब्बत मसले पर सीधे मदद की किसी योजना के सवाल पर हाथ खड़े कर दिए हैं। अलबत्ता वह तिब्बत समुदाय को नैतिक समर्थन देता रहेगा। धर्मशाला में बुधवार को तिब्बती धर्मगुरु दलाईलामा और आरएसएस के प्रमुख कुसी सुदर्शन की मुलाकात से दोनों पक्षों के रिश्ते और अधिक मजबूत होने की उम्मीद है। लेकिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख सुदर्शन ने यह कहकर स्थिति साफ कर दी है कि आरएसएस नैतिक समर्थन ही कर सकता है। जाहिर है कि संघ की भूमिका तिब्बत मसले पर बहस और नैतिक दबाव बनाने तक ही सीमित रहेगी। दोनों पक्ष विश्व मंच पर चीन को खलनायक साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। संघ प्रमुख को पांच साल में तिब्बत मुद्दे का हल निकल आने की उम्मीद है। दरअसल वे चाहते हैं कि केंद्र सरकार इस मामले पर तिब्बत का पक्ष खुले तौर पर चीन के सामने रखे। संघ प्रमुख ने यह कहकर इस मसले पर केंद्र में काबिज रहे सत्ताधीशों को भी परोक्ष रूप से आड़े हाथों ले लिया कि लाल बहादुर शास्त्री के अलावा दूसरे किसी और के कार्यकाल में इस तरफ गंभीरता से ध्यान नहीं दिया गया। नवंबर माह में चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा पर संघ के दृष्टिकोण को लेकर संघ प्रमुख ने कहा कि चीन के प्रधानमंत्री के समक्ष भारत को तिब्बत मसला प्रमुखता से रखना चाहिए। दलाईलामा ने संघ से किस तरह की मदद मांगी है, इस प्रश्न पर उन्होंने कहा-संघ इस संबंध में नैतिक समर्थन ही दे सकता है ।

२७ अक्तूबर, २००६

१. तिब्बतियों को दी ताकतवर बनने की सीख

धर्मशाला, भारत-तिब्बत सहयोग मंच के राष्ट्रीय सम्मेलन में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख कु.सी.सुदर्शन ने तिब्बत समस्या के समाधान के लिए तिब्बतियों को अहिंसा के साथ-साथ शक्तिशाली बनने की सीख दी। स्वाकी विवेकानंद का कथन याद दिलाते हुए उन्होंने कहा कि दुर्बलता सबसे बड़ा पाप

है। चीन जैसे शक्तिशाली शत्रु को झुकाने के लिए ताकतवर बनना जरूरी है।

भारत को तिब्बत की आजादी के लिए विश्व समुदाय को साथ लेकर चीन पर दबाव बनाने की नसीहत भी दी। तिब्बत की आजादी, चीन के कब्जे से मानसरोवर और भारतीय भूमि को वापस लेने के रास्ते को भारत–चीन संबंधों का आधार बताया गया। अहिंसा को अच्छा सिद्धांत तो माना, मगर ताकतवर शत्रु से निहत्थे होकर ऐसे सिद्धांत की बात करने को कायरता बताया गया।

सर संघचालक सुदर्शन ने साफ तौर पर कहा कि हमारे धर्मग्रंथ थप्पड़ मारने वाले व्यक्ति को दस थप्पड़ जड़कर जवाब दिए जाने की बात कहते हैं। लिहाजा एक गाल पर थप्पड़ पड़ने पर दूसरा गाल आगे करना कायरता कहलाती हैं। उन्होंने कहा कि अगर कोई बलशाली व्यक्ति ऐसा करता है तो ही क्षमा कहलाएगी।

सुदर्शन ने चीन को दानव की संज्ञा देते हुए उससे कूटनीति से निपटने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि जो गलती पहले हमारे नेताओं ने की है उसे सुधारने के लिए तिब्बत को चीन के चंगुल से छुड़ाना होगा। भारत–तिब्बत सहयोग मंच के संरक्षक एवं संघ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने तिब्बत की आजादी के लिए देशभर के लोगों को जागरूक कर २ अक्तूबर २००७ को दिल्ली में विशाल प्रदर्शन करने का ऐलान किया है। यह प्रदर्शन रामलीला मैदान या राजघाट में किए जाने की योजना है। इसमें तिब्बतियों और संघ कार्यकर्ताओं सहित देश–विदेश के तिब्बत समर्थकों को जुटाने की योजना है । यह प्रदर्शन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर तिब्बत की आजादी की लड़ाई के लिए शंखनाद होगा। उन्होंने विस्थापन और देश की गुलामी को मानवता पर कलंक बताया।

उन्होंने तिब्बत समस्या के हल के लिए चीन को दलाईलामा द्वारा सुझाए गए मध्यस्थता के मार्ग अनुसार वार्ता करने की सलाह दी है। साथ ही भारत सरकार को १४ नवंबर १९६२ को संसद में भारत की एक–एक इंच जमीन चीन के कब्जे से छुड़ाने के संकल्प को पूरा करने की भी नसीहत दी। सम्मेलन में मौजूद संघ के उद्घोषकों ने तिब्बत की आजादी के लिए शक्तिशाली होकर लड़ने की वकालत की।

THE TRIBUNE, JALANDHAR

OCTOBER 26, 2006

(1) Tibetans being reduce to minority : Dalai Lama

The Dalai Lama here today reportedly expressed his concern over the growing Chinese population in Lhasa and sought Indian support for his middle-path approach as a tool to finding a solution to the contentious Tibet issue.

Inc a closed door meeting with RSS chief K. Sudarshan, the Dalai Lama is believed to have told him that the Tibetans could soon be reduced to a minority in their own homeland if the Chinese influx into Tibet continued unchecked.

He elaborated that of the total population of around three lakh in Lhasa, the number of Chines had soared to two lakh. This was an alarming situation, he reportedly told the RSS chief.

Mr. Sudarshan is here to attend a national seminar to be organised by the Bharat Tibet Sahyog Manch in Dharamsala tomorrow.

Mr. Sudharshan, on his part, endorsed the Dalai Lama's views and assured him of is party's support in finding a solution to the Tibet issue.

The Dalai Lama, during his meeting, elaborated on the middle-path policy, which aims at achieving a genuine autonomy for all Tibetans living in the three traditional provinces of Tibet within the frame-work of the People's Republic of China. It is a non-partisan and moderate position that safeguards the vital interests of all parties concerned.

The Dalai Lama has been reassuring the Chinese authorities

that as long as he was responsible for the Tibetan affairs, the Tibetans would remain "committed to the middle path approach for not seeking independence for Tibet and are willing to remain within the People's Republic of China."

Senior BJP leader and former Chief Minister Prem Kumar Dhumal was also present during the hour-long meeting. The RSS chief presented a set of books to the Dalai Lama on the occasion.

Later, Mr. Sudharshan met Karmapa and also paid obeisance at the historic Chamunda Devi temple. Meanwhile, The 41 Tibetan refuges, who have crossed over from Tibet had an audience with the Dalai Lama today. One Tibetan nun was allegedly shot dead by Chinese security personnel and 32 of them are still missing.

FRIDAY, OCTOBER 27, 2006

RSS chief Sudarshan supports Tibetans' cause

RSS chief K. Sudarshan here today advocated that China should accept the middle-path approach of the Dalai Lama to find a solution to the issue of Tibet and expressed his party's support for the cause. He was speaking at a national seminar organised by the Bharat Tibet Sahyog Manch in memory of Guru Golvalkar.

The RSS chief said there was historical evidence to prove that Tibet was never part of China and condemned the incidents of alleged violations of human rights in Tibet by the Chinese security agencies.

Mr. Sudarshan said an international conference would be organized by the Bharat Tibet Sahyog Manch on October 2,2007, in Delhi to discuss the Tibet issue. Besides, he said, he had extended a formal invitation to the Dalai Lama to participate in an all-religion conference being organised at Varanasi on

Novemeber 25 and 26 this year to discuss ways and means to achieve world peace.

Appreciating the RSS's support, Tibetan Prime Minister Samdhog Rinpoche said this would help in spreading awareness about the issue of Tibet and the problems being faced by Tibetans in Their faced by Tibetans in their own homeland.

Mr. Prem Kumar Dhumal, senior BJP leader and former Chief Minister, said India had always supported the Tibetan issue and China's control over Tibet also posed a security threat to the country.

HINDUSTAN TIMES, CHANDIGARH

Friday, October 27, 2006

RSS unleashes verbal attack on China

Sahyog Manch asks govt to escalate pressure of China

AS NEW Delhi awaits Chinese President Hu Jintao next month, Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS) unleashed a fresh verbal assault on the Chinese leadership, accusing them of escalting anti-India activities.

RSS top brass raised serious doubts over Chinese intentions towards India. Flaying China's expansion design, RSS chief K.S. Sudarshan opined that India was next target. "Cina occupied Tibet, now they have set their eyes on India," said Sudrashan while addressing participants at the fifth seminar of Bharat Tibet Sahyog Manch, here.

Sudrashan observed that lack of visionary policies, has furthere lead to increase in anti-national activities as the militant and other

organisation have stepped up their activities around the national boundary. "Today kashmir has become the den of ISI activities, consequently Bangladesh was also staring at India while developments in Nepal are unfortunate for the nation," said Sudarshan, expressing concern over national security.

"We should strenghten ourselves, before it is too late. We Don't want to fight but we have to be self reliant and strong to face the challenges." He said RSS had maintained a consistent position on Tibet and added that the spirtitual leader should unite, against the evil forces. Sudarshan gave clarion call to the Sahyog Manch activist to fan out and work for Tibet cause.

Earlier, in its renewed support on Tibet issue Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS)- backed Bharat Tibet Sahyog Manch asked the Indian government to mount pressure on China for reciprocating the proposals of exiled Tibetan temporal leader Dalai Lama for negotiated settlement of vexed Tibetan issue. Manch passed a resolution urging Government of India to make concerted efforts to resove the Sino- Tibet disput.

In a resolution passed here today at the fifth national meeting, the manch expressed pleasure over initiation of Sino-Tibetan dialogue. At the same time lauded the attempts of Dalai Lama and his 'Middle Way Approach.'

Manch condemned the Indian government for its failure to play an active role for early settlement of the Tibetan issue. The manch in its resolution asked the Indian government to mount pressure on Chinese leadership to reciprocate to Dalai Lama proposal for settlement of Tibet issue.

Rightist-backed Tibet support group observed that Indian goverment would adopt gympathetic attitude towards Tibetans and Indian supporting the cause and would further frame active

policy for resolving problem."

The Manch also flayed China latest engineering feat Gormud Lhasa railway line. "The rail lines is not on my detrimental for Tibet, but a Threat to Indian security," maintained the resolution. Support group further claimed that China was making attempts to marginalize the Tibetan population in Tibetan by settling Chinese people, which would reduce the community to a minority." The Manch also expressed concern over railway expansion plan of China aiming to connect the boundaries with Nepal and India. Manch said government should review its defence policy towards China.

Reaffirming its support, Manch condemned the recent killings at Nangpa Pass on the Nepal-China border by Chinese troops. "Manch also asked the government of India to officially take up the killing issue with China."

परिशिष्ट

परिशिष्ट-१

भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के चौथे सम्मेलन (२०-२२ जून २००४) जयपुर में पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव -१

भारत सरकार पिछले कुछ अर्से से चीन के साथ संबंध सुधारने के लिए द्विपक्षीय वार्ता कर रही है। वार्ता करने से कोई बुराई नहीं है। परंतु वार्ता तभी संभव है, जब दोनों पक्षों में से कोई भी पक्ष बल का प्रयोग न करे। चीन ने पहले बल प्रयोग द्वारा भारत की धरती पर कब्जा किया हुआ है। भारतीय संसद ने भारत के उस भू-भाग को पुनः स्वतंत्र करवाने के लिए १४ नवंबर १९६२ को सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव भी पारित किया था। इसके साथ ही १९५४ में चीन के साथ तिब्बत के प्रश्न पर संधि करते समय भारत ने तिब्बत को आश्वासन दिया था कि वह उसकी स्वायत्तता की गारंटी लेता है। भारत सरकार ने उस समय तिब्बत के शासक दलाईलामा को भी इस विषय पर आश्वास्त किया था।

लेकिन दुर्भाग्यवश चीन ने तिब्बत पर जबरदस्ती कब्जा तो कर लिया लेकिन उसे वायदे के मुताबिक वास्तविक स्वायत्तता नहीं दी। अतः चीन के साथ वर्तमान बातचीत जारी रखने का तभी लाभ है यदि चीन वार्ता से पहले बलपूर्वक हथियाये गये भारतीय भू-भाग को खाली करता है और दलाईलामा के साथ वास्तविक स्वायत्तता के लिये बातचीत करने के लिये राजी होता है।

इन दोनों शर्तों के पूरा होने के बाद ही चीन से बातचीत का लाभ हो सकता

है अन्यथा यह बातचीत असंतुलित बातचीत ही कहलायेगी जिसका भारत को नुकसान ज्यादा होगा। भारत के विदेशमंत्री चीन गये हैं। उन्हें चाहिये कि भारत की सुरक्षा का ताल्लुक रखने वाले उपरोक्त दोनों प्रश्न चीन के साथ उठायें।

प्रस्ताव –२

चीन सरकार तिब्बत के भीतर तिब्बती राष्ट्रीयता और उसके तमाम प्रतीकों को नष्ट करने का प्रयास कर रही है। तिब्बती भाषा अपने देश में ही बेगानी हो रही है। मठ, मंदिर तोड़ दिये गये है–भिक्षुओं को धार्मिक अध्ययन करने के बजाय अन्य कार्यों के लिए विवश किया जा रहा है। भिक्षुओं की नई पौध धार्मिक ज्ञान में अधूरी है। मठों एवं भिक्षुओं का उपयोग चीन सरकार केवल पर्यटकों को दिखाने के लिये कर रही है। मठों की व्यवस्था भिक्षुओं के हाथ में न रहकर सरकार के हाथों में चली गई है। तिब्बत में चीनी भाषा को प्राथमिक भाषा का दर्जा दे दिया गया है और तिब्बती भाषा पढ़ने वालों के लिए रोजगार के रास्ते बंद किए जा रहे हैं। भारत सरकार को तिब्बती संस्कृति को नष्ट करने के इन चीनी प्रयासों का नोटिस लेना चाहिए और संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकार आयोग के सामने इस मामले को केवल उठाना ही नहीं चाहिए बल्कि अन्य सदस्य देशों के साथ मिलकर इसे रूकवाने का प्रयास भी करना चाहिए।

प्रस्ताव–३

प्रत्येक वर्ष अनेक तिब्बती चीनी दमन से भाग कर नेपाल के रास्ते भारत पहुँचते हैं। पिछले कुछ अर्से से नेपाल की पुलिस ने न केवल उन्हें पकड़ना शुरू कर दिया है बल्कि उन्हें चीनी पुलिस के हवाले भी करना शुरू कर दिया है। ऐसे अनेक उदाहरण सामने आए हैं। यह सहज ही कल्पना की जा सकती है कि चीन सरकार इन तिब्बतियों से कैसा व्यवहार करती होगी। चीन से भागकर आने वाले इन तिब्बतियों में अनेक बच्चे, छात्र और स्त्रियां भी होती हैं।

भारत सरकार को चाहिए कि वह नेपाल सरकार के समक्ष यह मामला उठाए क्योंकि इन तिब्बती शरणार्थियों को अंततः भारत में ही आना होता है। वे नेपाल में नहीं रहते। मानवीय दृष्टिकोण से इन सारी समस्याओं पर विचार करते हुए मंच का मत है कि इन शरणार्थियों को सुरक्षित रास्ता मुहैया करवाने में भारत को सार्थक व सक्रिय भूमिका अदा करनी चाहिए।

प्रस्ताव –४

तिब्बत की आजादी के पक्ष में आवाज़ उठाने के कारण अनेक तिब्बती चीन की जेलों में बंद है। अमानवीय व्यवहार के कारण उनमें से अनेक की तो जेल में ही मौत हो गई और अनेकों १०–१५ सालों से भी ज्यादा समय से जेलों में बंद है। प्रसिद्ध भिक्षु तेजिंग देलक को फांसी की सजा दी जा चुकी है और निश्चित अवधि के लिए उसे स्थगित किया हुआ है। उस अवधि के उपरांत उन्हें फांसी पर लटका दिया जाएगा। आधुनिक युग में भी चीन का यह मध्ययुगीन व्यवहार निश्चय ही चिंता जनक है। पंचेनलामा को छः साल की आयु में ही गिरफ्तार कर लिया था और अब वह उन्हें कैद हुए नौ साल हो चुके हैं। इनका उद्देश्य तिब्बत के लोगों का मनोबल तोड़ना है। भारत ने स्वयं अभी लगभग छः दशक पहले अपनी स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी है और अनेक स्वतंत्रता सेनानी ब्रिटिश सरकार में फांसी के फंदे के शिकार हो गए। अतः भारत से बेहतर तिब्बत स्वतंत्रता सेनानियों की भावना को कौन समझ सकता है। अतः भारत को इन कैदियों का मामला संयुक्त राष्ट्रसंघ में तो उठाना ही चाहिए, तेजिंग देलक और पंचेनलामा की मुक्ति के लिए भी चीन सरकार पर दबाव डालना चाहिए।

परिशिष्ट - २

भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के पाँचवे सम्मेलन (२५-२६ अक्टूबर २००६) धर्मशाला में पारित प्रस्ताव किए

प्रस्ताव क्रमांक -१
तिब्बत समस्या के समाधान हेतु सरकार आगे आए

भारत-तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा का पांचवा सम्मेलन इस बात पर प्रसन्नता प्रकट करता है कि निर्वासित तिब्बती सरकार और चीन सरकार में संवाद रचना की शुरुआत हुई है। परमपावन दलाईलामा जी अहिंसा के मार्ग पर चलकर तिब्बत समस्या के समाधान के लिए जो प्रयास कर रहे हैं वे निश्चय ही प्रशंसनीय है। परंतु मंच को इस बात का दुःख है कि भारत सरकार तिब्बत समस्या के समाधान के लिए उचित भूमिका नहीं निभा रही है। भारत सरकार का यह नैतिक व देश की सुरक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण दायित्व है कि वह चीन सरकार पर दबाव डाले कि चीन दलाई लामा के प्रस्तावों के अनुरूप तिब्बत समस्या के समाधान के लिए आगे आए। मंच का मानना है कि तिब्बत समस्या का संतोषजनक समाधान भारत का कर्त्तव्य है और भारत सरकार को अपनी विदेश नीति की इसी के अनुरूप रचना करनी चाहिए। मंच को आशा है कि सरकार समस्त भारतीयों एवं तिब्बतियों की भावना का सम्मान करते हुए तिब्बत के प्रति सक्रिय नीति का पालन करेगी।

प्रस्ताव क्रमांक–२
तिब्बत में रेलवे का निर्माण

चीन सरकार तिब्बत को पूरी तरह चीन में मिला लेने का प्रयास पिछले पचास सालों से कर रही है। इसी के अंतर्गत चीन ने गोर्मो से ल्हासा तक रेलवे लाइन का निर्माण कर लिया है। यह रेलवे लाइन तिब्बत के अस्तित्व के लिए घातक तो है ही भारत की सुरक्षा के लिए भी खतरा है। चीन इस रेल के माध्यम से तिब्बत में बड़ी संख्या में हान लोगों को बसाने का षड़यंत्र कर रहा है। यदि यह षड़यंत्र कामयाब हो गया तो तिब्बत में ही तिब्बती अल्पसंख्या में रह जाएंगे । इस से पूरी संस्कृति और भाषा समाप्त होने के कगार पर पहुंच जाएगी।

चीन अब इस रेलवे को नेपाल की सीमा तक और भारत की सीमा तक बढ़ा रहा है। ऐसी घोषणा चीन की सरकार ने अधिकारिक तौर पर की है। मंच भारत सरकार से आग्रह करता है कि इस नई रेलवे लाइन के परिप्रेक्ष्य में सरकार भारत और तिब्बत की सुरक्षा नीति का आंकलन करे।

प्रस्ताव क्रमांक –३
तिब्बतियों की हत्याओं की निंदा

भारत–तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा का यह पांचवा सम्मेलन पिछले दिनों नेपाल–तिब्बत सीमा पर चीनी सेना द्वारा तिब्बतियों पर गोली चलाने की घटना की कड़े शब्दों में निंदा करती है। ये तिबबती शांतिपूर्ण ढंग से भारत में परम पावन दलाई लामा जी के दर्शनों के लिए आ रहे थे। लेकिन चीनी सेना द्वारा उन पर गोली चलाने से एक भिक्षुणी की मौत हो गई । अनेक तिब्बती महिला पुरुष घायल हो गए और अनेक अभी तक लापता हैं।

मंच भारत–सरकार से आग्रह करता है कि इस घटना को अधिकारिक चैनल के माध्यम से चीन सरकार से उठाए और विरोध दर्ज करवाए, साथ ही उचित अंतर्राष्ट्रीय माध्यमों से इस घटना को उठाए।

परिशिष्ट - ३

हिमालय परिवार की केन्द्रीय कार्यकारिणी (७-८ अप्रैल २००७) में पारित प्रस्ताव

कैलाश मानसरोवर की मुक्ति-तिब्बत की स्वतंत्रता

सम्मेलन सर्वसम्मति से तिब्बत की स्थिति पर चिंता प्रकट करता है। तिब्बत के स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त करने की चीन सरकार की कोशिशें और तेज हो गई हैं। गोरमो से ल्हासा तक रेल लाइन का निर्माण होने के कारण तिब्बत में चीनियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। यह एक प्रकार से तिब्बत को दूसरा मंचूरिया बनाने के चीनी प्रयास हैं। तिब्बत में विकास के नाम पर चीनियों को बसाया जा रहा है और विकास का लाभ भी ज्यादातर चीनियों को ही मिल रहा है। तिब्बत के धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थलों में बदला जा रहा है और वहां साधक साधुओं की जगह पीले वस्त्रों में चीवर धारा किए हुए सरकारी कर्मचारियों को ही लामा के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। सरकारी कामकाज में और नौकरियों में चीनी भाषा का ही वर्चस्व बढ़ने के कारण तिब्बती भाषा समाप्त होती जा रही है। दलाईलामा जी वर्तमान परिस्थितियों की सीमाओं को देखते हुए चीन सरकार के साथ समझौता करने के लिए तैयार है और उन्होंने अपने १० मार्च २००७ के संदेश में स्वायत्तता को ही स्वीकार करने की बात कही है। परंतु दुर्भाग्य का विषय है कि चीन सरकार तिब्बत और तिब्बतियों का अस्तित्व ही मिटा देने के अपने साम्यवादी प्रयोगों में संलग्न है। चीन तिब्बत के बाद भारत के बड़े भू-भाग को भी हड़पने की तैयारी कर रहा हे। १९६२ में भारत पर आक्रमण कर ३९ हजार वर्ग मील (यानि १ लाख

वर्ग किलोमीटर) से भी जयादा भारतीय भू-भाग मुख्यतः लद्दाख व अरूणाचल प्रदेश का चीन ने बलपूर्वक हड़प लिया और अभी तक भी उस पर कब्जा जमाया हुआ है। युगों से भारत स्थित कैलाश मानसरोवर विश्व शांति व अध्यात्म का केंद्र आज चीन के कब्जे में है । हिमाकत की हद तो यह है कि गत वर्ष २००६ में जब चीन के राष्ट्रपति हू-जिन-ताओ भारत की सद्भावना यात्रा पर आए थे; तो उसके ठीक पहले दिल्ली में चीन के राजदूत ने अरूणाचल प्रदेश पर चीनी दावे का प्रश्न उठा दिया। यह अच्छी बात है कि भारत सरकार व भारतीय जनता ने चीन सरकार के इस अवैध दावे को पूरी तरह नकार दिया। सन् १९५४ से ६२ की अवधि में पंचशील की आड़ में चीन षड्यंत्र रचता रहा और आज विकास व सद्भावना के नाम पर उसने अरूणाचल पर दावा करके अपने पत्ते फिर से खोल दिए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि चीन आज भी विश्वास योग्य नहीं है।

चीन का खतरा केवल तिब्बत और भारत को ही नहीं बल्कि उस की विस्तारवादी पिपासा से नेपाल भी त्रस्त है और अन्य हिमालयी राज्य भी यहां तक कि हिंद-चीन क्षेत्र के अनेक छोटे-छोटे राज्य चीन की किसी विस्तारवादी दृष्टि गढ़ानी शुरू कर दी है और वह वहां दखलअंदाजी के रास्ते तलाश कर रहा है।

यह सभा सर्वसम्मति से मांग व आह्वान करती है कि-

(क) चीन की इस विस्तारवादी पिपासा को रोकने के लिए हिमालयी क्षेत्र के सभी राज्य मसलन भारत-तिब्बत-नेपाल-भूटान आदि को एक साझी रणनीति बनानी चाहिए।

(ख) भारत सरकार चीन से मित्रता, एक समान शक्तिशाली देश के रूप में करे। वार्ता एवं समझौतों में भारतीय नेता व दल, चीन पर दबाव बनाए कि चीन दलाई लामा जी से बात करे। तिब्बती जनता को उनके मौलिक अधिकार (स्वतंत्रता/स्वायत्तता) प्रदान करे।

(ग) भारत सरकार १४ सितंबर, १९६२ में संसद के दोनों सदनों की बैठक में सर्वसम्मति से पारित प्रस्ताव को ध्यान में रखकर चीन पर दबाव बनाए कि चीन भारतीय भू-भाग को खाली कर मित्रता का सबूत दे।

(घ) सभा, आम जनता से भी आह्वान करती है कि व्यापक जनजागरण

के द्वारा यह दबाव बनाए कि बौद्धों एवं हिंदुओं के आस्था केन्द्र कैलाश मानसरोवर को चीन के कब्जे से मुक्त कराया जाए। चीन सरकार इसकी पवित्रता को नष्ट करने हेतु इसके आसपास जारी खनन कार्य एवं सैनिक ठिकानों का निर्माण कार्य तुरंत बंद करे। चूंकि तिब्बत की स्वतंत्रता से कैलाश मानसरोवर की मुक्ति जुड़ी हुई है कैलाश मानसरोवर की मुक्ति से तिब्बत की स्वतंत्रता/स्वायत्तता जुड़ी है। यह कदम हिमालय की सुरक्षा एवं विश्व शांति के हित में होगा।

परिशिष्ट – ४

मंच की गतिविधियों की रपट : डा. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

२०–२२ जून २००४ को जयपुर में हम राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में एकत्रित हुए थे। आज २५–२६ अक्टूबर २००६ को लगभग अढ़ाई साल बाद राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के पांचवे सम्मेलन में धर्मशाला में मिल रहे हैं। धर्मशाला तिब्बत की निर्वासित सरकार का मुख्यालय भी है और आज से आठ साल पहले भारत–तिब्बत सहयोग मंच की स्थापना भी धर्मशाला में हुई थी। इन आठ वर्षों में भारत–तिब्बत सहयोग मंच ने एक लंबा सफर तय किया है। इसे भी संयोग ही कहना चाहिए कि मंच की स्थापना करने वाले श्री इन्द्रेश कुमार जी और स्थापना काल में मंच को वैचारिक दिशा देने वाले श्री सुदर्शन जी राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा के इस महासम्मेलन में उपस्थित हैं। प्रो. प्रेम कुमार धूमल मंच की क्रियाकलापों से प्रारंभ से ही जुड़े रहे हैं और तिब्बत स्वतंत्रता आंदोलन को उनका सदा ही समर्थन मिलता रहा है। वे भी इस महासम्मेलन में उपस्थित हैं। कल राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री सुदर्शन जी की परमपावन दलाईलामा जी से लंबी बातचीत हुई थी। उस बातचीत के समय मंच के संरक्षक और संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य श्री इन्द्रेश कुमार जी, संघ के क्षेत्रीय प्रचारक श्री दिनेश कुमार जी, हिमाचल प्रांत के प्रचारक व कार्यवाह श्रीनिवास मूर्ति जी व चेतराम जी के अतिरिक्त हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल, निर्वासित तिब्बती सरकार के प्रधानमंत्री प्रो. सामदोंग रिम्पोछे भी उपस्थित थे। श्री सुदर्शन जी की और परमपावन दलाईलामा जी की बातचीत से मंच को अपनी भावी दिशा निर्धारित करने में सहायता मिलेगी।

मंच ने पिछले आठ सालों से देशभर में अपने कार्य का विस्तार किया है।

उसका प्रमाण देश के अनेक राज्यों से यहां उपस्थित प्रतिनिधियों की संख्या में देखा जा सकता हैं । पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और लद्दाख में मंच की सक्रिय शाखाएं हैं। दिल्ली में मंच का विस्तार प्रायः विभाग स्तर और जिला स्तर तक पहुंच गया है। राजस्थान (जयपुर), उत्तरप्रदेश (लखनऊ) में भी मंच की इकाइयां कार्य कर रही हैं। अभी कुछ अरसा पहले पटना और रांची में मंच की शाखा स्थापित की गई है। भोपाल में कुछ प्रबुद्धजनों को लेकर मंच की एक समिति का गठन किया गया है। महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र में मंच की गतिविधियां लगभग सारा साल चलती रहती हैं। अहमदाबाद में मंच के पास सक्रिय कार्यकर्ताओं का एक समूह है जो महत्वपूर्ण जिलों में तिब्बत से जुड़े कार्यक्रम करता है। छत्तीसगढ़ से भी प्रतिनिधि इस सम्मेलन में पहुंचे हैं। जहां तक दक्षिण भारत का ताल्लुक है अभी हम वहां ज्यादा प्रवेश नहीं कर पाए हैं । कर्नाटक में मंच की सक्रिय शाखा है और उसने हुबली और मुंडगाड में भारतीयों और तिब्बतियों को लेकर अनेक कार्यक्रम आयोजित किए हैं। जहां तक हिमालयी प्रांतों में मंच की गतिविधियों का प्रश्न है लद्दाख, जम्मू, हिमाचल प्रदेश के अतिरिक्त उत्तराखंड में मंच की ईकाई कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त असम, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में भी मंच ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। यद्यपि हम अपनी प्रगति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं। तिब्बत का प्रश्न और भारतीय सुरक्षा से उसके जुड़े हुए तार जितने महत्वपूर्ण हैं, उसके अनुपात में हमारे विकास की गति धीमी है। इस गति को और तेज करने की जरूरत है और जिन प्रांतों में अभी मंच की शाखाओं की स्थापना नहीं हुई है वहां जल्दी ही शाखाएं खोली जाने की जरूरत है। यद्यपि मंच के इस कार्य विस्तार में सभी कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण भूमिका है परंतु आंदोलन को आगे बढ़ाने और उसके विस्तार के लिए हमारे पथ प्रदर्शक और संरक्षक श्री इन्द्रेश कुमार जी को ही सारा श्रेय जाता है। वे मंच के कार्य और उसकी गतिविधियों की निरंतर चिंता करते रहते हैं और देश भर में चलने वाले अपने निरंतर प्रवास में ऐसे कार्यकर्ताओं की तलाश भी करते रहते हैं जो तिब्बती स्वतंत्रता के इस आंदोलन को आगे बढ़ा सकें । मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि उन्हीं के प्रयासों से नेपथ्य में चला गया तिब्बत का प्रश्न फिर धीरे-धीरे देश भर में चर्चित हो रहा है। महाराष्ट्र के श्री अशोक मेंढ़े, असम के श्री जवाहर ठाकुर, अरुणाचल प्रदेश के श्री आर.के. खिरमे, पंजाब के श्री ओम प्रकाश शर्मा और हीरालाल धीर, हरियाणा से श्री जीवन राम शर्मा, जम्मू से श्री रमेश हांगलू,

लद्दाख से प्रो. दास, गांतोक से श्री दुर्गादास नेपाल, अहमदाबाद से श्री संदीप ज्योतिकर, उड़ीसा से श्री समन्वय नंद और श्री दीपक महांत, दिल्ली से श्री अरविंद गर्ग, श्री महेश चड्डा व पंकज गोयल, कर्नाटक से श्री अमृत जोशी का योगदान उल्लेखनीय है।

हमें यहां पिछले वर्ष की गतिविधियों के लेखा–जोखा पर विचार करना होगा। वहीं आने वाले वर्ष में इस आंदोलन को कैसे बढ़ाया जाए इस पर भी योजना बनानी होगी। सुरक्षा की दृष्टि से आने वाले कुछ वर्ष भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। तिब्बत को लेकर दोहरी स्थिति बनी हुई है। भारत सरकार तिब्बत के मसले पर कुछ भी बोलने का तैयार नहीं है और भारत की जनता तिब्बतियों के साथ है। यह कुछ इसी प्रकार की स्थिति है जब भारत सरकार इज़राइल के साथ किसी प्रकार का भी संबंध रखने को तैयार नहीं थी। लेकिन भारत की जनता इज़राइल की सबसे बड़ी समर्थक थी। चीन ने भारत और तिब्बत की सीमा को लेकर भारत पर फिर से दबाव बनाना शुरू कर दिया है। इतना ही नहीं वह पाकिस्तान के साथ मिलकर भारत की चौतरफा नाकाबंदी कर रहा है। सैंकड़ों की संख्या में इस देश से सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ताओं, बुद्धिजीवियों, प्राध्यापकों, नौकरशाहों और पत्रकारों को सरकारी खर्चे पर चीन में आमंत्रित किया जा रहा है। १९५० और ५५ के बीच का माहौल बनाने का प्रयास चीन कर रहा है। उन दिनों भी भारत से बड़े–बड़े प्रतिनिधिमंडल बीजिंग में ड्रैगन सरकार के आतिथ्य का लुत्फ लेते थे और भारत में आकर उसका गुणगान करते थे। चिंता का विषय यह है कि अब कि बार ऐसे बुद्धिजीवी भी निमंत्रित किए जा रहे हैं जिनका दृष्टिकोण शुरू से ही तिब्बत के पक्ष में रहा है। कुछ ऐसे लोगों ने भारत में चीन के पक्ष में तर्क तलाशने का द्राविड़ प्राणायाम शुरू कर दिया है। चीन दुनिया के अनेक देशों को धमकाने की स्थिति में आ रहा है और वह उन सरकारों पर दबाव डाल रहा है कि वे अपने यहां दलाई लामा को आमंत्रित न करे। दुर्भाग्य से व्यापारिक कारणों से कुछ सरकारें दबाव में आ भी रही हैं।

तिब्बत की स्थिति पहले से भी ज्यादा गंभीर होती जा रही है। चीनी सरकार द्वारा पिछले दिनों गोरमों से ल्हासा तक बनाई गई रेलवे लाइन ने पूरी स्थिति को पलट दिया है। इस नेटवर्क से तिब्बत का चीनीकरण का प्रयास तेज होगा और तिब्बत में चीनियों की संख्या भी बढ़ेगी। चीन रेलवे लाइन को ल्हासा तक लाकर ही चुप नहीं है। वह उसे भारत और नेपाल की सीमा तक भी ला रहा है। निश्चय

ही इससे तिब्बत का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा और भारत की सुरक्षा।

लद्दाख को इस्लामी समाज में शामिल करने के लिए कश्मीर की ज़िहादी शक्तियों ने एक प्रयोग पिछले कई सालों से किया था। इस प्रयोग के तहत लद्दाख की बौद्ध कन्याओं की शादियाँ जायज़ नाजायज़ तरीके से कश्मीर के मुसलमान युवकों से करवाई जाती थीं। (अभी भी करवाई जा रही हैं।) इस प्रयोग से पिछले ५० सालों में लद्दाख का आधा बौद्ध समाज मुस्लिम समाज में परिवर्तित हो गया। चीन सरकार इसी लद्दाखी प्रयोग को तिब्बत में विशेषकर ल्हासा में कर रही है। ल्हासा में पूर्वी तुर्किस्तान के मुस्लिम खुदरा व्यापारियों को ल्हासा में बसाया जा रहा है और इन मुस्लिम युवकों से तिब्बती बौद्ध लड़कियों की शादियाँ करवाई जा रही हैं। इसके चलते इस्लामी तिब्बतियों की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हो रही है और इस्लामी तिब्बती, तिब्बती राष्ट्रीयता से टूटते जा रहे हैं। तिब्बती राष्ट्रीयता को समाप्त करने के लिए हान मानसिकता का यह घृणित प्रयोग है। चीन अच्छी तरह जानता है कि तिब्बती राष्ट्रीयता को यदि समाप्त करना है तो उसके केन्द्र से दलाईलामा को अपदस्थ करना होगा। इसी के लिए वह प्रयास कर रहा है।

जो तिब्बती तीर्थ यात्री भारत में दलाईलामा के दर्शनों के लिए नेपाल के रास्ते से आते हैं चीन की सेना उन पर अमानुषिक अत्याचार करती है। कई बार सेना द्वारा गोलाबारी से उनकी मृत्यु तक हो जाती है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत सरकार ने मानवाधिकार के हनन के इन मुद्दों पर एक बार भी प्रश्न नहीं उठाया। भारत–तिब्बत सहयोग मंच तिब्बत से जुड़े इन प्रश्नों को लेकर भारतीय जनमानस को आंदोलित करने के लिए कृत संकल्प है। यहां मैं एक और बात का उल्लेख करना चाहूँगा कि यह मंच दलाईलामा के उन सभी प्रयत्नों का समर्थन करता है जो वे तिब्बती समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के लिए कर रहे हैं। चाहे यह उनके मध्यम मार्ग का प्रयोग हो या फिर कोई और। मंच मानता है कि दलाईलामा तिब्बती जनता के वास्तविक प्रतिनिधि है। इस बात में कोई संशय नहीं है कि मंच यह बात स्वीकारता है कि तिब्बत एक स्वतंत्र देश था और उस पर चीन ने बलपूर्वक कब्जा किया हुआ है। चीन ने केवल तिब्बत पर ही कब्जा नहीं किया हुआ भारत के भी एक बहुत बड़े भूभाग पर उसने सैन्य बल से कब्जा किया हुआ है। भारत को भी अपने उस भूभाग की स्वतंत्रता के लिए लड़ाई लड़नी होगी। इस लड़ाई का स्वरूप कुछ भी हो सकता है। जैसे भारत ने गोवा को पुर्तगाली कब्जे से मुक्त कराने के लिए लड़ी थी। तिब्बत को भी अपनी आजादी के लिए चीन से लड़ना

होगा। इस लड़ाई का रूप कुछ भी हो सकता है । यह लड़ाई भारत और तिब्बत को मिलकर संयुक्त रूप से लड़नी होगी। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं होता कि वार्ता के दरवाजे बंद कर दिए जाएं। इसलिए मंच की दृष्टि में जब दलाईलामा की सरकार चीन की सरकार के साथ वार्तालाप करती है तो इसमें कुछ भी अस्वाभाविक नहीं है।

मित्रो ! मैंने बहुत ही संक्षेप में भारत–तिब्बत सहयोग मंच के परिप्रेक्ष्य में तिब्बत समस्या के कुछ पहलुओं पर चर्चा की है। इन मुद्दों को लेकर हम जनता के बीच में जाएंगे और सरकार पर इतना दबाव डालेंगे कि वह भारत और तिब्बत के हितों के विपरीत एक बार फिर उसी प्रकार हिन्दी चीनी भाई का बेसुरा राग न गाना शुरू कर दे जैसा उसने २०वीं शताब्दी के मध्य में किया था ।

परिशिष्ट – ५

यत् सत् तत् क्षणिक म्–तिब्बत की आजादी की आशा : मंत्रिणी प्रसाद

भारत–तिब्बत सहयोग मंच तिब्बतवासियों और भारतीयों में परस्पर सहयोग के बारे में विचार करता आया है। यह मंच भारत में रह रहे तिब्बती लोगों के दुख दर्द को समझता है और निर्वासन का जीवन बिता रहे तिब्बती भाई–बहनों के साथ एक जुट होकर 'उनके मिशन' की भारतीय बंधुओं में तर्जुमानी करता है।

तिब्बत पर विचार करना ऐसा ही है जैसे जोर और जुल्स के खिलाफ खड़ा होना है। एक सजग भारतीय मानस इतिहास में घटित इस त्रासदी की पीड़ा को निरंतर अनुभव करेगा। तिब्बत की स्वतंत्रता का अपहरण हमारे देखते देखते हुआ।

साम्राज्यवाद की दादागिरी और तेवर कभी पूरी एशिया ने झेले थे। चीन ने भी झेले थे। तब हमारी सहानुभूति चीन के साथ रही थी। वह सहानुभूति रूस को भी मिली थी जब हिटलर के हाथों पराजित होता हुआ रूस पीछे हटता चला जा रहा था।

परन्तु जल्दी ही परिदृश्य बदला। जर्मनी और जापान की पराजय हुई और दो साम्यवादी शक्तियां उभर कर सामने आ खड़ी हुईं। एक रूस दूसरा चीन । दोनों शक्तियां मार्क्सवाद से अनुप्राणित थीं।

मार्क्सवाद, पूंजीवाद के विरोध में एक सशक्त विचार धारा थी। पूंजीवाद की तुलना में यह 'मातृसत्तात्मक' रही। सब तरह के शोषणों के विरूद्ध मानव जीवन मूल्यों की कैसे रक्षा हो ? औद्योगिक क्रांति से आए मशीनी युग में मानव

का मुख कैसे उजला रहे? वर्गहीन समाज की स्थापना कैसे हो? ये इस विचारधारा के मुख्य बिन्दु थे।

पूंजीवाद पूर्णतया पितृसत्तात्मक था।यह परस्पर स्पर्धा का हिमायती था। राज्यसत्ता के विरूद्ध व्यक्तिगत संपत्ति और व्यक्तिक स्वातन्त्र्य का पोषक था। मशीनी युग में मानव शोषण के विरूद्ध अभियान की शुरूआत पूंजीवादी राष्ट्रों में भी हुई। फलस्वरूप वहां सामाजवाद की विचारधारा ने जन्म लिया। समाजवाद के अनुयायियों में हमारे यहां आचार्य नरेन्द्र देव, श्री जयप्रकाश नारायण, अशोक मेहता, डा. राम मनोहर लोहिया, जार्ज फर्नांडिज तथा चन्द्रशेखर के नाम आते हैं।

पूंजीवादी व्यवस्था उपनिवेशों पर आधारित थी तथा स्वभावतः साम्राज्यवादी थी। बीसवीं सदी में दो विश्वयुद्धों के तुरन्त पश्चात् उपनिवेशों की थोड़ी अदला बदली हुई और रूस के अधीन बाल्टिक सागर के तटीय राष्ट्र लिथुआनिया, एस्टोनिया और लटविया स्वतंत्र हुए।

परन्तु दूसरे विश्व युद्ध के परिणाम चौंकाने वाले थे। पूरे एशिया और अफ्रीका के राष्ट्र एक-एक करके स्वतंत्र होते चले गए। स्थान-स्थान पर उपनिवेशवाद के विरोध में स्वतंत्रता आन्दोलन शुरू हुए। चीन की क्रांति की तरज भी कुछ इसी तरह की थी और वियतनाम का मुक्ति संघर्ष साम्यवादी विचारधारा के आधार पर लड़ा गया एक राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन ही था।

इस प्रकार के सभी आन्दोलनों को साम्राज्यवादी शक्तियों के विरूद्ध संघर्ष का नाम दिया गया। शीत युद्ध के दौरान, इन आन्दोलनों को काफी हद तक रूस और चीन का समर्थन भी मिल गया।

इधर चीन का मार्क्सवाद लेनिनवाद से होता हुआ अंततः 'माओवाद' में तबदील हुआ और वह साम्राज्यवादी सपने देखने लगा। पहले उसने भीतरी मंगोलिया और तिब्बत पर अपना कब्जा जमाया फिर १९६२ में भारत पर भी आक्रमण कर दिया। प्रदीप की इन पंक्तियों को हम १५ अगस्त के दिन हर वर्ष सुनते आए हैं ।

ऐ मेरे वतन के लोगों जरा आंख में भर लो पानी ।
जो शहीद हुए हैं उनकी जरा याद करो कुरबानी।।

१९६५ को पाकिस्तान के साथ हुए भारत युद्ध में चीन की यह हुँकार फिर सुनाई दी। परंतु अब की यह केवल हुंकार थी, दंश नहीं । क्योंकि १९६५

में भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री थे नेहरू नहीं। १९७१ के युद्ध में, सोवियत यूनियन ने हमारा साथ दिया, इसलिए अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के बार-बार उकसाने पर भी चीन की यह हुंकार सुनने को नहीं मिली।

तिब्बत पर चीन के कब्जे को भारत की जनता ने कभी मान्यता नहीं दी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और समाजवादी दल/जनसंघ ने तो इसे एक राष्ट्रीय मुद्दा बनाया।

स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में वियतनाम का संघर्ष अद्वितीय रहा है। पहले तो १९८४ में वियतनाम ने डिएन बिएन फू के युद्ध में फ्रांसिसी सेना को परास्त किया, फिर जब सामने अमेरिका आया तो उसकी चुनौती भी स्वीकार कर ली। उन्हीं दिनों मैं पूर्वी जर्मनी गया हुआ था। जान पहचान के कामरेड लोग चीन का पक्ष लेते देखे जाते थे और हम भारतीयों को नसीहत देते थे कि चीन के संख्या बल के साथ टकराना ठीक नहीं। मेरा उत्तर रहता था कि अगर वियतनाम अमेरिका की ताकत को तौल सकता है तो क्या हम चीन की ताकत नहीं तौल सकते? ताकत के तौल में संख्याबल की अपेक्षा मनोबल और सिद्धांत की शक्ति काम करती है।

यह बात सत्तर के दशक के अन्त में स्पष्ट हो गई। भारत में जनता पार्टी की सरकार थी और अटल जी विदेश मंत्री थे। जिस वियतनाम के बच्चों को अमेरिका से हो रहे भीषण युद्ध में सभी कम्युनिस्ट देशों ने अपने परिवारों में रख कर पाला पोसा था, उस वियतनाम पर, अमेरिका से युद्ध समाप्ति के पश्चात, चीन ने सबक सिखाने की धौंस जमाई। अटल बिहारी वाजपेयी उस समय भारत के विदेश मंत्री थे और चीनं की यात्रा पर थे। विरोधस्वरूप वे दिल्ली लौट आए। इस युद्ध में किसने सबक सीखा- यह इतिहास के विद्यार्थी अच्छी तरह जानते हैं। वियतनाम के पास अनुभव था और था मनोबल और चीन के पास था मात्र संख्याबल।

चीन ने एकबार 'ताएवान'(फारमूसा) को तौलने की भी कोशिश की थी। बीच में दो द्वीपों को छीनने की बेवकूफी कर डाली। लेकिन मुंह की खानी पड़ी थी उसे।

अभी हाल में 'तिएन मिएन' स्क्वेयर में चीन के शासकों ने अपने होनहार बच्चों के साथ जो खून की होली खेली थी वह किसे याद नहीं?

चत्वारि आर्य सत्यानि। बुद्ध के हर अनुयायी को इनका पता है। इनमें

एक है 'यत् सत् तत् क्षणिकम् ।' जो दृश्यमान है वह सब क्षणिक है।

१९६८ में मैं पौलैंड गया हुआ था। क्राकुफ की यूनिर्सिटी में एक अध्ययन शाला चल रही थी। बहुत से छात्र छात्राएं लिथुआनिया की यूनिवर्सिटी रीगा से आए हुए थे। लिथुआनिया संप्रभु संपन्न राष्ट्र रह चुका था, दूसरे विश्व युद्ध से पहले, लेकिन अब अर्थात् १९६८ के ग्रीष्म में मात्र कीर्तिशेष थी। फिर भी नई पीढ़ी संप्रभुता का सपना आंखों में संजोए हुए थी और देखिए बीस से बाईस सालों में क्या हो गया ।

दृश्यमान जगत वह नहीं रहा जो तब था। सोवियत साम्राज्य विखंडित हो गया। कोई युद्ध नहीं लड़ा गया। जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड, हंगरी, रूमानिया, बुलगारिया तो टूट कर अलग हुए ही, सोवियत संघ के अपने १५ राज्य भी स्वतंत्र राष्ट्र बन गए।

सोवियत साम्राज्य के विखंडन से पूर्व एक शीत युद्ध अवश्य चल रहा था और सोवियत शिखर पुरूष ब्रेझनेव के काल में अफगानिस्तान को लेकर दूसरा युद्ध हो रहा था।

भारत और चीन में इस समय क्या चल रहा है ? शतरंज का खेल हो रहा है। दोनों में न शीत युद्ध है और न ही असली युद्ध है। एक लंबी वार्ता चल रही है जिससे दोनों ऊब चुके हैं। दोनों तरफ एक अविश्वास है और किसी अनहोनी की प्रतीक्षा में समय निकल रहा है । ऐसे शून्य काल में धर्म का तत्व निर्णायक रहता है। यतो धर्मः ततो जयः।

यह हम भारतीयों का सौभाग्य है कि हमारे बीच बोधिसत्व के रूप में परमपावन दलाई लामा विराजमान हैं। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक के तौर पर उन्होंने संसार भर में ख्याति अर्जित की है।

संस्कृत की एक सूक्ति है 'क्रियासिद्धि स्त्वे भवति महतां नोपकरणे'। उनके महान् व्यक्तित्व में तिब्बत राष्ट्र की संप्रभुता समाहित है। वे तिब्बतवासियों के लिए तो प्रेरणा स्रोत हैं ही हम भारतीयों के लिए भी ज्ञान और शील में भगवान बुद्ध के विग्रह स्वरूप हैं।

बौद्ध धर्म और दर्शन हमें प्रज्ञा लोक के चरम बिन्दु पर ले जाता है। मुझे २००१ में यह सौभाग्य प्राप्त हुआ था जब मैंने एक दो महीने धर्मशाला में रह कर लामा धर्मगुरुओं की संगति प्राप्त की थी । कुछ तिब्बती भाषा पढ़ने का भी प्रयत्न किया था।

इस सम्मेलन में उपस्थित भिन्न भिन्न स्थानों से आए कार्यकर्ताओं ने अपने अपने क्षेत्रों में भारत–तिब्बत सहयोग मंच के तत्वाधान में चल रहे कार्यों पर प्रकाश डाला। मैं उन सभी बंधुओं की सक्रियता पर उन्हें साधुवाद देता हूं।

जय तिब्बत! जय भारत!

(भारत–तिब्बत सहयोग मंच की राष्ट्रीय प्रतिनिधि सभा की बैठक में दिया गया अध्यक्षीय उद्बोधन --संपादक)





यह मेरा परम सौभाग्य है कि आज पूज्यचरण श्री करमापा के दर्शन करने एवं उनसे वार्तालाप करने का सौभाग्यक्षण प्राप्त हुआ। आज विश्व में आसुरी शक्तियों का तांडव चल रहा है और विश्व शांति के प्रति सभी के मन में सन्देह उत्पन्न हो रहा है। किंतु भारत और तिब्बत की आध्यात्मिक शक्तियों का दृढ़ विश्वास है कि आसुरी शक्तियाँ आपस में ही एक दूसरे को नष्ट करेंगी और शीघ्र ही शांति और मांगल्य का विश्व में प्रसार होगा। पूज्य चरण करमापा को भी यही विश्वास है जिसे उन्होंने व्यक्त भी किया है। इससे हम सब उत्साहित हुए हैं और प. पू. गुरुजी के इस जन्मशताब्दी वर्ष में इन आध्यात्मिक शक्तियों के समन्वय के कार्य में विनम्र सेवक के नाते [illegible] से अधिक सक्रियता से कार्य करेंगे।

[illegible]
[illegible]
[illegible] 2006 ईसवी

कु. सी. सुदर्शन
(सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)
डॉ. हेडगेवार भवन, महाल
नागपुर (440032)
(महाराष्ट्र)

ताकि सनद रहे- कर्मापा लामा के यहां सुदर्शन जी ने अतिथि पुस्तिका में लिखा, आसुरी शक्तियों की होगी पराज

राष्ट्रीय तिब्बत सम्मेलन (बायें से दायें)इन्द्रेश कुमार जी, प्रो. प्रेम कुमार धूमल जी., कर्मा छोफेल जी, सुदर्शन जी, महाराज अमरज्योति जी. प्रो. सामदों ग रिंपोछे जी, हंत सूर्यनाथ जी, श्रीमती डोलमा गेरी जी



...बत की आजादी...
...चपूर्ण : धूमल

...ब्बत पर तीन प्रस्ताव

...लामा के मध्य मार्ग को दिया समर्थन, देशभर...

संघ प्रमुख कुर्सी...

...बत समस्या सुलझाए भारत





RSS chief Sudarshan ...tans' cause

...s of human ... world peace.

...बत समस्या का जल्द समाधान किया जाए : सुदर्शन

भाजपा नेताओं ने भरी हाजिरी